



प्रगति

स्वच्छता एवं संरक्षा विशेषांक



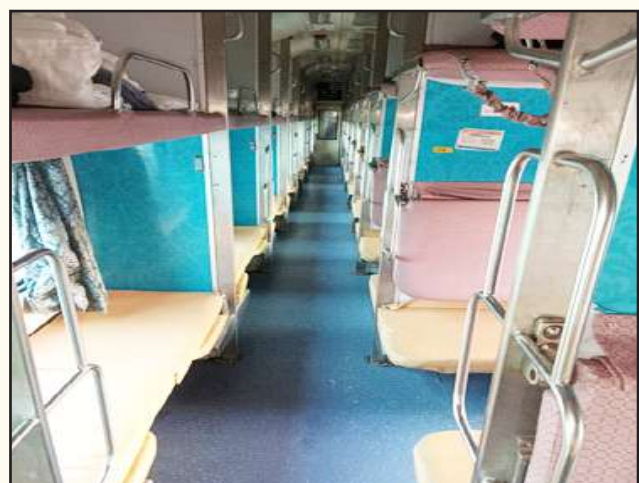
वर्ष : 49

अक्टूबर, 2024 - मार्च, 2025 छमाही अंक



पूर्वोत्तर रेलवे
लखनऊ मंडल

**“स्वच्छता ही सेवा” के उद्देश्य पर आधारित स्वच्छ रेलपथ,
स्वच्छ स्टेशन, स्वच्छ रेल परिसर, स्वच्छ कोच आदि की झलकियाँ**





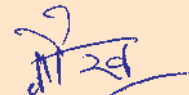
मंडल रेल प्रबंधक
पूर्वोत्तर रेलवे
लखनऊ

संरक्षक की कलम से...

साहित्य का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य पूरी दुनिया के मानव जगत में उत्साह को प्रेरित करना और उन्माद को नियंत्रित करना है, क्योंकि साहित्य के रचनाकार मर्मज्ञ यह भलीभाँति समझते हैं कि उत्साह मनुष्य में लक्ष्य के प्रति ऊर्जा का संचार भरने का काम करता है, जबकि उन्माद मनुष्य के अंदर दूसरों के प्रति नफरती इरादों को बढ़ाता है। जहाँ उत्साह विकास को गति देता है, वहीं उन्माद गुमराही सोच उत्पन्न करता है, जिसकी परिणति शांति भंग एवं विकास भंग में होती है।

आशा है कि पत्रिका के इस अंक की साहित्यिक रचनाएं पाठकों में उत्साह एवं उन्माद के अंतर की समझ को बढ़ावा देने में कामयाब होंगी, जो आधुनिक सभ्य समाज के निर्माण और देश की एकता एवं अखंडता के लिए बहुत जरूरी है। इसके अलावा इस अंक में रेल संरक्षा सहित विभिन्न विषयों पर लिखे गये तकनीकी लेख, तकनीक से जुड़े कार्यों के प्रति जरूरी बारीकियों को समझने तथा कार्यकुशलता को निखारने में सहायक सिद्ध होंगे। इसमें शामिल "स्वच्छता ही सेवा" की थीम पर आधारित स्वच्छता की विभिन्न गतिविधियाँ रेलकर्मियों, यात्रियों और अन्य रेल उपयोगकर्ताओं को स्वच्छता के प्रति प्रेरित करेंगी।

मैं प्रगति पत्रिका के इस अंक की उपयोगिता के प्रति आशावान हूँ और मुझे विश्वास है कि आप सभी पाठक इसका भरपूर लाभ उठायेंगे।


(गौरव अग्रवाल)



अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा०)
पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ

पाठकों से दो बातें...

प्रिय पाठकगण,

इस जीव जगत में जितने भी प्राणी हैं, उनमें से केवल मनुष्य ही है, जो विविध भाषा, बोलियों और संकेतों का प्रयोग करता है। चूँकि मनुष्य विश्व के अलग-अलग विभिन्न भू-भागों में रहता है, जिसके अनुसार इन तीन चीजों में से उसकी भाषा एवं बोलियाँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं और साथ ही उसके आकार-प्रकार एवं रूप रंग में भी थोड़ी बहुत भिन्नता होती है। मनुष्य की विभिन्न भाषा एवं बोलियों में प्रयुक्त शब्दों की संख्या भी असंख्य होती है। इन सब में केवल एक चीज सामान्य होती है, उसके द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मूलभूत संकेत, जो हर भू-भाग में एक जैसे होते हैं जैसे पानी पीने का संकेत, खाना खाने का संकेत, मार्ग का संकेत इत्यादि-इत्यादि। किंतु, विश्व के विभिन्न भू-भागों में रहने वाले अन्य असंख्य प्राणियों की प्रजातीय ध्वनियाँ एवं संकेत हर जगह एक ही जैसे होते हैं जैसे शेर का दहाड़ना, कोयल का कूकना आदि बोलियाँ और उनके जीवन के सभी संबंधित संकेत केवल एक जैसे होते हैं, उनके आकार-प्रकार भले ही अलग क्यों न हों। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसमें अनन्त संभावनाएं होती हैं और उसकी जीने-खाने से अधिक की आवश्यकताएं भी होती हैं।

मनुष्य के जीवन, विकास एवं सुरक्षा से संबंधित बहुत-सी आवश्यकताएं एक भू-भाग से दूसरे भू-भाग से जुड़ी हुई होती हैं। विश्व में इन परस्पर आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक संप्रेषण माध्यम के रूप में एक अंतर्राष्ट्रीय सामान्य संपर्क भाषा की जरूरत पड़ी, जिसके समाधान के लिए अंग्रेजी भाषा को चुना गया। ठीक उसी प्रकार, भारत के विविध भाषा-भाषी राज्यों के बीच राष्ट्रीय जीवन को रेखांकित करने वाली एक अंतर्राष्ट्रीय सामान्य संपर्क भाषा की जरूरत पड़ी, जिसकी पूर्ति के लिए संविधान सभा ने देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली भाषा, हिंदी को राजभाषा के रूप में 14 सितंबर, 1949 को चुना।

पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल में इन उद्देश्यों का सतत अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए सरकारी कामकाज में सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते रहना चाहिए, जिससे विषय-वस्तु को समझने में संबंधित अधिकारियों/कर्मचारियों को आसानी हो। इसका एक और लाभ यह होता है कि जब कार्य की समझ अच्छी होगी, तो कार्य की गुणवत्ता में भी और निखार आएगा।

मुझे विश्वास है कि प्रगति पत्रिका का यह नवीनतम अंक सभी पाठकों में लक्षित सभी खूबियों को अंतःस्थापित करने में सहायक सिद्ध होगी। मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी और उनके प्रयासों की सराहना करता हूँ, जो निरन्तर नवीनता लाने के लिए कार्य कर रहे हैं। मैं रचनाएं उपलब्ध कराने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनाधर्मिता एवं लगनशीलता का भी सम्मान करता हूँ। निःसंदेह, यह पत्रिका आपको बेहतर लगेगी।

(भुवनेश सिंह)



राजभाषा अधिकारी
सह
मंडल वित्त प्रबंधक
पूर्वोत्तर रेलवे
लखनऊ

सम्पादकीय

पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ मंडल की हिंदी पत्रिका 'प्रगति' का वर्तमान अंक स्वच्छता एवं संरक्षा विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस अंक का उद्देश्य स्वच्छ एवं संरक्षित रेल की बारीकियों को रेखांकित कर रेलकर्मियों/पाठकों को उसके प्रति सचेत एवं तत्पर बनाने तथा तत्संबंधी बेहतर कार्यकुशलता निखारने में सहायक भूमिका का सृजन करना है। इसमें स्वच्छता एवं संरक्षा से जुड़े तकनीकी विषयों को प्राथमिकता दी गयी है। इसके अलावा इस अंक में कुछ साहित्यिक रचनाएं भी शामिल की गयी हैं, जो काफी रोचक एवं जीवनोपयोगी अनुभव व सीख से भरे हैं।

मैं पत्रिका के लिए अपनी उत्कृष्ट रचनाएं उपलब्ध कराने वाले सभी लेखकों प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। इस अंक में स्वच्छता संबंधी लेख व गतिविधियाँ "स्वच्छता ही सेवा" के उद्देश्य पर आधारित स्वच्छ रेल, स्वच्छ स्टेशन, स्वच्छ कोच, स्वच्छ रेल कार्यालय, स्वच्छ रेल परिसर आदि को सुनिश्चित करने की प्रेरणा देने के लिए जगह दी गई है। इसी प्रकार, संरक्षा संबंधी लेख व गतिविधियाँ संरक्षित रेल संचालन में सहायक सिद्ध होंगी, क्योंकि "अनुभव सबसे अच्छा अध्यापक होता है", जोकि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी का सुप्रसिद्ध कथन है।

हमें आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पाठकगण इस नवीनतम अंक का पूरा लाभ उठाएंगे तथा इस पत्रिका को और अधिक सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएंगे।


(उमेश कुमार)

प्रगति

वर्ष : 49

अक्टूबर, 2024 - मार्च, 2025 छमाही अंक

संरक्षक :

गौरव अग्रवाल

मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक :

भुवनेश सिंह

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा०)

संपादक :

उमेश कुमार

राजभाषा अधिकारी सह मंविप्र

उप संपादक :

टी.एन. त्रिपाठी

वरिष्ठ अनुवादक (प्रभारी)

कार्यकारी संपादक :

चन्द्रशेखर

वरिष्ठ अनुवादक

आवरण :

दिनांक 18.02.2025 को मंडल रेल प्रबंधक श्री गौरव अग्रवाल ने अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अ.मं.रे.प्र.(इन्फ्रा०) श्री भुवनेश सिंह, तत्कालीन अ.मं.रे.प्र.(परि०) श्री विक्रम कुमार, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी डॉ० शिल्पी कनौजिया आदि की उपस्थिति में संरक्षा से जुड़े 08 कर्मचारियों को ड्यूटी के दौरान उनकी कर्तव्यनिष्ठा, सतर्कता, लगन व परिश्रम के विशेष योगदान के लिए प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया।

पत्राचार :

राजभाषा विभाग, पूर्वोत्तर रेलवे,
लखनऊ-226001

दूरभाष (रेलवे) 31805, 31806

दूरभाष (सिविल) (0522) 2233044

Email : ralkodivn@gmail.com

इस अंक में

क्र.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	भू-संश्लेषण का उपयोग.....	भुवनेश सिंह	1
2.	स्वच्छता	दृष्टि दीप गुप्ता	5
3.	स्वच्छता : राष्ट्रप्रेम का पहला दर्पण	रजनीश गुप्ता	6
4.	स्वच्छ मन-मानवता	चन्द्रशेखर	6
5.	एल.जे.एन. सिस्टम मैप एंड.....	डॉ. शिल्पी कनौजिया	7
6.	रेलवे में मॉक ड्रिल	डॉ. शिल्पी कनौजिया	11
7.	गर्म धुरा या हॉट एक्सल होने....	डॉ. शिल्पी कनौजिया	13
8.	यांत्रिक विभाग की स्वच्छता संबंधी...	रोहित त्रिपाठी	15
9.	साइबर क्राइम	कु. आरती वर्मा	17
10.	आपदा एवं प्रबंधन	डॉ. दीक्षा चौधरी	18
11.	मक्खनबाजी एक कला	राम शंकर गुप्ता	19
12.	समन्वय	एम. अब्बास रिजवी	20
13.	कांटों और क्रॉसिंगों का निरीक्षण....	गोविन्द प्रसाद	21
14.	योग का महत्व	दीपक कुमार यादव	23
15.	संरक्षा परिपत्र एक नजर में	मनोज कुमार पांडेय	24
16.	ब्रेक बाइंडिंग/प्लैट टायर....	विद्या भूषण पाण्डेय	25
17.	स्वच्छता का महत्व	संदीप कु. जयसवाल	27
18.	डाटालॉगर की उपयोगिता	सन्त राम	28
19.	परछाइयाँ	अर्चना दूबे	30
20.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस....	आकांक्षा सिंह	33
21.	स्वच्छ रेल, स्वच्छ भारत मिशन		36
22.	शॉटिंग मेला	अरविन्द कुमार	44
23.	क्रू मैनेजमेंट सिस्टम रिपोर्ट	अरविन्द कुमार	45
24.	फैमिली सेमिनार	अरविन्द कुमार	46
25.	शॉटिंग कार्य के दौरान क्या करें.....	अरविन्द कुमार	47
26.	रेल चालकों का मानसिक और.....	अजय कुमार सिंह	49
27.	अनुशासन	अरुण कुमार गौड़	51
28.	बस्ती स्टेशन पर स्वच्छता एवं....	हरिशंकर	52
29.	स्वच्छता से निरोगी काया	श्रीमती अनीता	53
30.	मानसिक स्वास्थ्य और स्वच्छता	पवन कुमार मिश्र	54
31.	कचड़ा प्रबंधन	अंकुर गुप्ता	55
32.	गर्मियों में रेल की छाया	नीरज कु. सिंह	55
33.	मंडल स्तर पर संरक्षा पुरस्कार		56

निःशुल्क वितरण के लिए (पत्रिका के अन्तर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।)

भू-संश्लेषण का उपयोग करके संरचना पुनरुद्धार (Formation Rehabilitation) : एक प्रदर्शन विश्लेषण



भुवनेश सिंह

संरचना (Formation) वह आधार है, जिस पर रेलवे की पूरी प्रणाली काम करती है। संरचना ट्रैक मापदंडों को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण विभिन्न कार्यों को पूरा करती है और अच्छी सवारी गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय रेलवे के ट्रैक का एक बड़ा हिस्सा कमजोर संरचना (टीएमएस के अनुसार लगभग 6600 किमी)

वाला है, जिसके कारण उन हिस्सों में कुछ गति प्रतिबंध प्रचलित हैं। इन कमजोर संरचनाओं के पुनर्वास के लिए आरडीएसओ द्वारा व्यापक अध्ययन और क्षेत्र परीक्षण किए गए हैं और कंबल परत, ग्राउटिंग, बेहतर जल निकासी, भू-संश्लेषण के उपयोग आदि जैसे विभिन्न तरीकों का सुझाव दिया गया है। झांसी-बीना खंड में भू-संश्लेषण (Geosynthetic) का उपयोग करके संरचना पुनरुद्धार किया गया और यह पेपर इस पद्धति द्वारा प्राप्त ट्रैक की गुणवत्ता में सुधार और रखरखाव के प्रयासों में कमी के बारे में एक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

1. इतिहास :

झांसी मंडल, उत्तर मध्य रेलवे के बीना से दैलवारा खंड (किलोमीटर 1001 से 1014 को छोड़कर) का पूरा निर्माण काली कपास मिट्टी पर किया गया था। इसके लिए बार-बार रखरखाव के प्रयासों की आवश्यकता थी और अस्थिर संरचना ट्रैक मापदंडों को बनाए रखने में असमर्थ थी। इस कारण प्रमुख मुख्य इंजीनियर, उत्तर मध्य रेलवे ने वर्ष 2012 में आरडीएसओ को सेक्शन की फील्ड जांच करने और संरचना के पुनरुद्धार के लिए उपयुक्त उपाय सुझाने के लिए सूचित किया था।

आरडीएसओ ने क्षेत्र की जाँच और भू-तकनीकी अध्ययन किया अगस्त, 2012 और अक्टूबर, 2012 के महीनों में इस पर काम किया गया और नवंबर, 2012 में इसके लिए परामर्श रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। आरडीएसओ द्वारा सुझाया गया आदर्श समाधान व्यापक स्थिरीकरण/भूमि सुधार के साथ-साथ कंबल परत और जल निकासी सुधार का प्रावधान करना था। हालाँकि, उच्च जीएमटी के साथ लाइन चलाने के कारण निम्नलिखित अल्पकालिक और दीर्घकालिक उपाय करने का सुझाव दिया गया।

1.1 अल्पावधि उपाय :

- जल निकासी सुधार के उपायों को प्राथमिकता के आधार

पर किया जाना चाहिए, जिसमें अवांछित वनस्पति को हटाना, नालों की पुनः रूपरेखा बनाना, पटरियों के बीच या तटबंध के किनारे/निकट जल जमाव न होने देना आदि शामिल होंगे।

- गहरी स्क्रीनिंग के समय संरचना के नीचे बीसीएम के साथ जियो-ग्रिड बिछाई जाएगी तथा न्यूनतम 30 सेमी मोटी बैलस्ट कुशन सुनिश्चित की जाएगी।
- संरचना और भूमि स्तर में विकसित दरारों को रेत से भर दिया जाएगा और गैर-विस्तारशील मिट्टी से सील कर दिया जाएगा।

1.2 दीर्घकालिक उपाय :

संरचना के शीर्ष पर 1:30 के क्रॉस ढलान के साथ न्यूनतम 100 सेमी मोटी कॉम्पैक्ट कंबल परत प्रदान की जानी चाहिए।

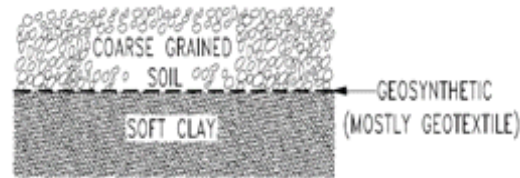
आरडीएसओ की सिफारिशों के अनुसार, इस खंड में जल निकासी में सुधार किया गया। वर्ष 2017 में, बीसीएम के साथ डीप स्क्रीनिंग के साथ जियो-ग्रिड बिछाने का काम शुरू किया गया था। बाद में, यह सुझाव दिया गया कि केवल भू-ग्रिड (Geo-grid) के साथ सुधार उचित नहीं होगा और भू-ग्रिड के साथ भू-टेक्सटाइल (Geo-textile) का उपयोग करने का प्रस्ताव दिया गया।

2. मूलरूप आदर्श :

भू-टेक्सटाइल्स और भू-ग्रिड निम्नलिखित कार्य करके कमजोर संरचना को स्थिर करने में मदद करते हैं :

2.1 पृथक्करण :

दो असमान सामग्रियों (मोटे और बारीक दाने वाली) के बीच रखी गई भू-संश्लेषित परत विभाजक के रूप में कार्य करती है और बारीक दाने वाली सामग्री को मोटे दाने वाली सामग्री में प्रवेश करने से रोकती है। इस प्रकार, यह भार के तहत सब-ग्रेड से गिड्री में महीन कणों के प्रवेश को रोकता है।

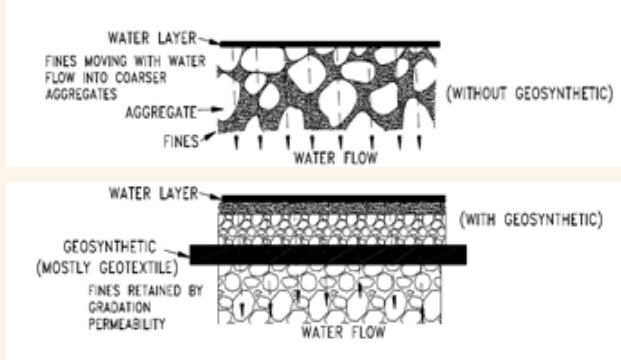


सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है, जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो।

-स्वामी शंकराचार्य

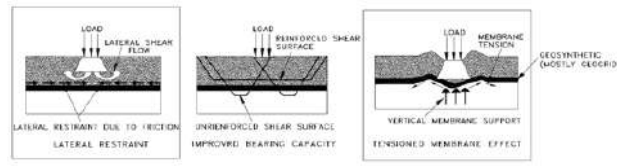
2.2 निस्पंदन :

भू-संश्लेषण के छिद्र के आकार का उचित चयन करके, जिससे कि पानी तो बह सके, लेकिन सूक्ष्म कणों का प्रवाह रुक जाए, यह एक फिल्टर के रूप में कार्य करता है।



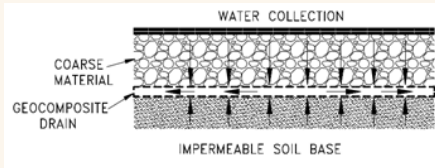
2.3 सुदृढ़ीकरण :

भू-संश्लेषित पदार्थ अपनी तन्य शक्ति के कारण अपनी सतह पर कणों के विस्थापन का प्रतिरोध करता है और इस प्रकार भार के अंतर्गत तटबंध की सामग्री के प्रवाह को रोकता है।



2.4 जल निकासी :

भू-संश्लेषण की मैदानी पारगम्यता को मैदानी पारगम्यता से कहीं अधिक बेहतर बनाया जा सकता है, इससे भू-संश्लेषण एक जल निकासी परत के रूप में कार्य करता है। भू-संश्लेषण ऊपरी और निचली सतह से पानी इकट्ठा करता है और इसे मैदानी क्षेत्र में दूसरे स्थान पर ले जाता है।



3. पुनरुद्धार कार्य की प्रगति :

3.1 जल निकासी कार्य :

सेक्शन में जल निकासी में सुधार के लिए निम्नलिखित कार्य किए गए हैं :

संरचना के ऊपर पानी के ठहराव को रोकने के लिए बीसीएम के साथ भू-संश्लेषण बिछाते समय संरचना को उपकरण की ओर 30 में से 1 क्रॉस-ढलान देना।

जल निकासी सुनिश्चित करने के लिए सेस में 30 में 1 की ढलान प्रदान करते हुए, गंदे गिट्टी से निकले मलबे का उपयोग करके सेस को मजबूत करना। इसके साथ ही पानी के प्रवाह के लिए मार्ग प्रदान करने के लिए सेस में ट्रैक के लंबवत आंतरायिक चौनल का निर्माण करना।

जल का कुशल प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए नियमित सफाई के साथ-साथ कटिंग भाग में नालियों का निर्माण।



3.2 भू-संश्लेषण का उपयोग करके पुनर्वास :

केवल भू-ग्रिड का उपयोग करके - 2 ब्लॉक खंडों [जेआरओ-एलएआर (यूपी) -1028.986-1037.0] और [एजीडी-केओए (डाउन) -983.695 - 994.0], में कुल 17 किमी पुनर्वास किया गया है।

भू-ग्रिड के साथ भू-टेक्सटाइल का उपयोग करके 6 ब्लॉक खंडों में लगभग 40 किमी पुनर्वास का कार्य किया गया है।



किसी को माफ करना कमजोरी नहीं, वरन सामर्थ्यवान ही ऐसा कर सकता है।

-महात्मा गांधी

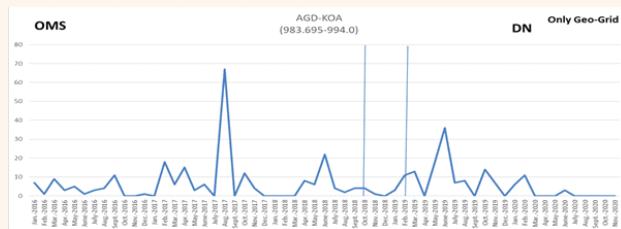
4. रखरखाव आवश्यकता और सवारी गुणवत्ता में सुधार :

4.1 रखरखाव इनपुट में कमी :

ब्लॉक सेक्शनों में जहाँ पुनरुद्धार किया गया है, वहाँ नरम स्थानों पर ध्यान देने की आवश्यकता महीने में एक बार से घटकर 3 से 4 महीने में एक बार रह गई है। यह ध्यान गैंग स्टाफ का उपयोग करके मैनुअल रूप से किया जाता है। ध्यान देने की आवश्यकता की आवृत्ति में कमी से कार्यों की बेहतर योजना बनाने में मदद मिलती है।

4.2 ओएमएस से पीक में कमी :

जिन सेक्शनों में केवल भू-ग्रिड का उपयोग करके पुनरुद्धार किया गया है, वहाँ भू-ग्रिड बिछाने के लगभग 12 महीने बाद ट्रैक स्थिर हो जाता है। इस अवधि के बाद ओएमएस पीक (Peak) में काफी कमी आती है जैसा कि निम्नलिखित ग्राफ से देखा जा सकता है :



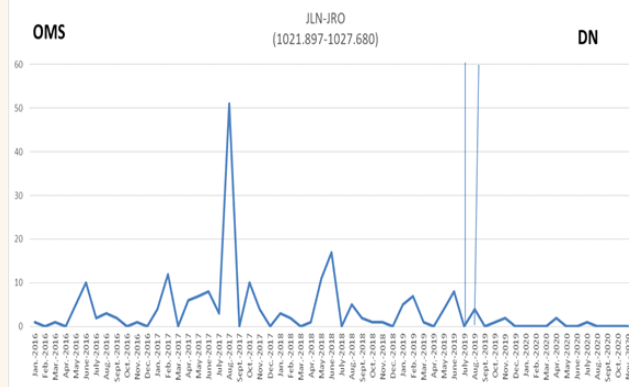
ऊपर दिए गए ग्राफ से यह भी देखा जा सकता है कि इस सेक्शन में ज्यादातर पीक मानसून के मौसम में आती हैं। हालाँकि, भू-ग्रिड बिछाने के बाद यह प्रभाव भी काफी हद तक कम हो गया है।

जिन सेक्शनों में भू-ग्रिड के साथ भू-टेक्सटाइल का उपयोग करके पुनर्वास किया गया है, वहाँ स्थिरीकरण अवधि कम (लगभग 4 महीने) है। पीक की संख्या में कमी भी केवल भू-ग्रिड का उपयोग करने की तुलना में अधिक देखी गई है।

5. सामग्री का संक्षिप्त विवरण भू-ग्रिड और भू-टेक्सटाइल सामग्री :

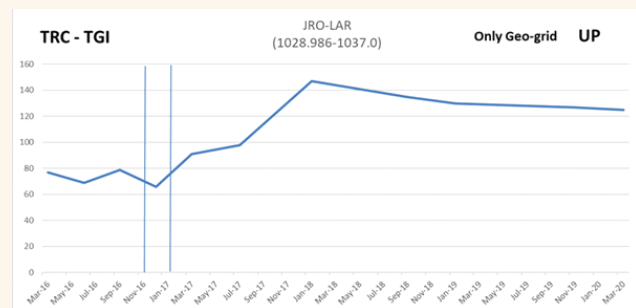
निर्माण सुधार कार्य में प्रयुक्त सामग्री का विवरण :

क्रमांक	वस्तु	विवरण
1	अनुभाग	बीना – झांसी
2	किमी.	1022 से 1028.80 (अप एवं डाउन)
3	स्थान किमी	जेएलएन-जेआरओ
4	गठन सुधार प्रस्तावित	भू-टेक्सटाइल के ऊपर भू-ग्रिड की स्थापना के साथ गिट्टी की गहरी स्क्रीनिंग



4.3 टीआरसी द्वारा दिए गए टीजीआई मूल्य में सुधार:

मार्च, 2020 से पहले के टीआरसी के परिणाम ब्लॉकों के लिए टीजीआई मूल्य के आधार पर दिए गए थे। टीआरसी रन के परिणामों से, ओएमएस के समान परिणाम देखे जा सकते हैं। लगभग 12 महीनों के लिए जियो-ग्रिड बिछाने के बाद ट्रैक का स्थिरीकरण होता है। इस अवधि के दौरान टीजीआई में सुधार धीरे-धीरे होता है और यह 12 महीने की अवधि के बाद स्थिर हो जाता है जैसा कि निम्नलिखित ग्राफ से देखा जा सकता है:



राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।

-बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

5	भू-ग्रिड और भू-टेक्सटाइल का संक्षिप्त विवरण	भू-ग्रिड प्रकार: द्विअक्षीय एपर्चर/मेश आकार:- 65 मिमी x 65 मिमी चौड़ाई- 3.95 मीटर प्रति रोल लंबाई - 25 मीटर भू-टेक्सटाइल स्पष्ट उद्घाटन आकार-150 माइक्रोन चौड़ाई- 3.95 मीटर प्रति रोल लंबाई- 100 मीटर	
6	उठाना आवश्यक है	400 - 450 मिमी	
7	विशेष विवरण	भू-ग्रिड ASTMD 6637&A के अनुसार एण्ड एएसटीएम डी 7737	भू-टेक्सटाइल एएसटीएम डी-4595 के अनुसार- एएसटीएम डी-4833, 4751, 4491
8	तस्वीरें		



चित्र-1: एजीडी-केओए खंड में भू-ग्रिड प्लेसमेंट के साथ बीसीएम द्वारा डीप स्क्रीनिंग का कार्य

6. उपर्युक्त विश्लेषण की सीमाएं :-

(i) सेक्शन में ओएमएस रन में दर्ज पीक को ट्रैक दोषों जैसे कि कम जोड़, सीएमएस क्रासिंग में घिसाव, यार्ड में दोषपूर्ण लेआउट आदि के कारण जिम्मेदार ठहराया जा

सकता है, जो पूरी तरह से खराब संरचना के दायरे से बाहर हैं। इसलिए, उपरोक्त दोषों के कारण उत्पन्न पीक को अलग किया जाना चाहिए और सीधे खराब संरचना के कारण होने वाली पीक जैसे कि बीसी मिट्टी के अलग-अलग पैच, वक्र पर अलग-अलग स्टेशन आदि को ही ध्यान में रखा जाना चाहिए।

हमारी मातृभूमि की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

-बिरसा मुण्डा

(ii) टीआरसी रन मूल रूप से इस सेक्शन पर 3 महीने में एक बार होता है। हालांकि, मौसमी बदलाव थोड़ा अलग होता है, क्योंकि ट्रैक में गिरावट मुख्य रूप से फरवरी और जुलाई-अगस्त के अंत में देखी जाती है। इसलिए, बेहतर जवाबदेही के लिए विशेष रूप से प्राकृतिक घटनाओं के साथ मेल खाने के अनुसार टीआरसी किया जाना चाहिए। हालांकि, यह पहलू यथासंभव ओएमएस रन में परिलक्षित होता है जो वर्तमान में महीने में एक बार किया जा रहा है।

7. निष्कर्ष :

ऐसे परिदृश्य में जहाँ कंबल परत का उपयोग करके व्यापक पुनरुद्धार निष्पादन के लिए थोड़ा मुश्किल है, खासकर उच्च घनत्व वाले मार्गों पर भू-ग्रिड के साथ भू-वस्त्र का उपयोग काली कपास मिट्टी के लिए सबसे अच्छा विकल्प है। इसका उपयोग करके, ट्रैक पैरामीटर लंबी अवधि के लिए रखे जाते हैं और बिछाने के बाद स्थिरीकरण अवधि भी कम होती है। हालांकि, इस पद्धति के प्रभावी कामकाज के लिए यह सुनिश्चित करना होगा कि साइट पर जल निकासी की स्थिति उचित हो और पानी संरचना से सेस की ओर स्वतंत्र रूप से बह सके। इस पद्धति की प्रभावशीलता और स्थायित्व क्षेत्र में भू-संश्लेषण बिछाने की गुणवत्ता और अल्पकालिक उपाय के रूप में इस सामग्री की सीमाओं पर भी निर्भर करता है।

8. संदर्भ :

- बीना-दौलवारा स्टेशनों के बीच कमजोर संरचना के पुनरुद्धार पर परामर्श रिपोर्ट [झांसी डिवीजन, उत्तर मध्य रेलवे] – आरडीएसओ द्वारा (नवंबर, 2012)।
- भू-टेक्सटाइल्स – डिजाइन से लेकर अनुप्रयोगों तक कोर्नर, आर.एम. द्वारा।
- झांसी-बीना सेक्शन में चलाए गए ओएमएस और टीआरसी के परिणाम।
- पारंपरिक रेल ट्रैक नींव का डिजाइन, डी.एल. स्वास्थ्य और अन्य।
- रेल रोड ट्रैक फाउंडेशन डिजाइन II की विधि : अनुप्रयोग, डिग्विंंग ली, एससीआई, जर्नल ऑफ भू-तकनीकी और भू-वातावरणीय इंजीनियरिंग, अप्रैल, 1998 द्वारा।

यह लेख मेरे द्वारा उत्तर मध्य रेलवे में वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय), आगरा का दायित्व निर्वहन करने के दौरान श्री आशीष गुप्ता, कार्यकारी इंजीनियर, रेलवे संरक्षा कार्य के साथ भू-संश्लेषण के उपयोग से किए गए संरचना पुनरुद्धार (Formation Rehabilitation) पर आधारित है।

— अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अमरेप्र(इन्फ्रा०)
पू०उ०रे०, लखनऊ

स्वच्छता



दृष्टि दीप गुप्ता

सुखी जीवन की एक मूलभूत इकाई हमारा स्वास्थ्य है एवं अच्छे स्वास्थ्य का एक बड़ा आधार स्वच्छता है। स्वस्थ एवं सुखी जीवन के लिए स्वच्छता अत्यंत आवश्यक है। इसका तात्पर्य है कि स्वयं को एवं अपने आस-पास के वातावरण को साफ-सुथरा रखना। व्यक्तिगत स्वच्छता, नियमित साफ रहने की आदत होती है जो बीमारियों से बचाती है। स्वच्छ वातावरण, चाहे घर पर हो अथवा सार्वजनिक स्थलों पर वह बीमारियों का खतरा कम करता है एवं खुशहाली को बढ़ावा देता है। स्वच्छता का संबंध केवल शारीरिक स्वास्थ्य से ही नहीं, अपितु यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है, स्वच्छता की आदतों को अपनाकर हम एक स्वस्थ समुदाय एवं एक स्वच्छ समाज में बड़ा योगदान करते हैं।

रेलवे में स्वच्छता का बहुत ही महत्व है, क्योंकि रेलवे स्टेशनों पर अत्यधिक संख्या में यात्रियों का आवागमन होता है, जिससे स्टेशनों पर बहुत ही गंदगी व्याप्त रहती है। इसी को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर स्वच्छता अभियान चलाये जाते हैं एवं विज्ञापनों के माध्यम से जागरूक किया जाता है।

पहले रेलवे स्टेशनों की साफ-सफाई का कार्य विभिन्न विभागों द्वारा किया जाता था— जैसे यांत्रिक विभाग द्वारा ट्रेनों की सफाई एवं वाणिज्य/चिकित्सा विभाग द्वारा रेलवे स्टेशनों की सफाई। स्वच्छता की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए रेलवे द्वारा एक नए विभाग का गठन अप्रैल-2015 में किया गया, जिसे EnHM (Environment & Housekeeping Management) के नाम से जाना जाता है। यह यांत्रिक विभाग के अंतर्गत कार्य करता है। साफ-सफाई को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ष 16 सितंबर से 02 अक्टूबर तक पूरे देश में स्वच्छता पखवाड़ा चलाया जाता रहा है। वर्ष 2024 में स्वच्छता पखवाड़ा 15 अक्टूबर 2024 तक बढ़ाया गया, जिसमें रेलवे स्टेशनों, कालोनियों, कार्यालयों, स्टोर आदि स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जैसे स्वच्छता शपथ, मानव शृंखला बनाना, ट्रेनों की सफाई, कालोनियों की सफाई, वृक्षारोपण कार्यक्रम, निबंध लेखन, कविता लेखन, पोस्टर बनाना, प्रतियोगिता का आयोजन आदि। इस प्रकार के आयोजनों से जनता में स्वच्छता के प्रति जागरूकता दिखाई देती है, जो प्रतिवर्ष सफाई बनाए रखने में सहायक होती है।

— स्वास्थ्य निरीक्षक, पू०उ०रे०, ऐशबाग

जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि प्रसन्नता है।

-जयशंकर प्रसाद

स्वच्छता : राष्ट्रप्रेम का पहला दर्पण



रजनीश गुप्ता

जब आप सुबह घर में झाड़ू लगाते हैं, एक कोना चमकाते हैं, तो क्या वास्तव में आप केवल धूल हटा रहे होते हैं? या फिर यह उस अदृश्य लेकिन गहरे प्रेम की अभिव्यक्ति है, जो आप अपने आश्रय, अपने अपनों, अपने जीवन से करते हैं? यही क्रिया जब सार्वजनिक स्थानों पर करने की बात आती है—टूट जाती है, बिखर जाती है। क्यों? क्या देश हमारा घर नहीं है?

देशभक्ति को हमने बहुत संकीर्ण बना दिया है— वर्दी में सैनिक, युद्ध में शहीद, हाथ में झंडा। परंतु, जो राष्ट्र की गलियों को साफ रखता है, जो नदी में कचरा नहीं फेंकता, जो दीवारों को गंदा नहीं करता, वह भी देश की सेवा कर रहा है और शायद ज्यादा स्थायी रूप में।

यहाँ पर एरिक एरिकसन का 'जनरेटिविटी' का सिद्धांत एक सार्थक प्रकाश डालता है — जीवन के एक चरण में मनुष्य स्वयं को पीछे छोड़, समाज और आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ सृजनात्मक देने की चाह रखता है। यही अवस्था राष्ट्र की सफाई को केवल कार्य नहीं, कर्तव्य बना देती है। यह भाव तब आता है जब हम अपने अस्तित्व को घर की चारदीवारी से निकालकर पूरी धरती से जोड़ते हैं — विशेष रूप से उस भूमि से जिसे हम 'मातृभूमि' कहते हैं।

देश के प्रति यह प्रेम तभी विकसित होगा जब हम उसे निजी अनुभव में महसूस करेंगे। सोचिए, जब हम दीपावली से पहले अपने घर को सजाते हैं, तो क्या हमें कभी सड़कों की टूटी नालियां, दीवारों की कालिख, गली के कोनों में सड़ता कचरा नहीं खटकता? शायद खटकता है, पर हम उसे 'सरकार का काम' कहकर आगे बढ़ जाते हैं। पर, क्या घर की गंदगी भी 'किसी और का काम' होती है?

प्रोफेसर जेम्स पेरी की 'पब्लिक सर्विस मोटिवेशन' थ्योरी इस मानसिकता को समझने में मदद करती है। जब किसी कार्य को बड़ा उद्देश्य मिल जाता है, तो वह साधारण नहीं रहता। यदि सफाई को हम केवल नगरपालिका का आदेश न मानें, बल्कि एक सांस्कृतिक और नैतिक जिम्मेदारी समझें, तो यह कर्म जन आंदोलन बन सकता है।

हमें यह समझना होगा कि सड़क हमारी है, उतनी ही जितनी कि हमारा आँगन। जब कोई बच्चा अपने हाथ से स्कूल का मैदान साफ करता है, वह केवल मिट्टी नहीं हटाता वह नागरिकता की पहली परिभाषा सीखता है। और, जब कोई

व्यक्ति सड़क पर पड़ी प्लास्टिक की बोतल उठाता है, वह चुपचाप कहता है— 'मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ।' उसकी कोई परेड नहीं होती, कोई फोटो नहीं छपती, पर वह नागरिकता की सबसे पवित्र परंपरा निभा रहा होता है।

एक विचारशील समाज वही होता है, जहाँ लोग सफाई को दिखावे का नहीं, धर्म का हिस्सा मानते हैं। एक राष्ट्र तभी स्वच्छ बनता है जब उसके नागरिक यह कह सकें— 'यह देश मेरा है, इसकी चमक मेरी जिम्मेदारी है।' और अंत में, उस NASA के सफाईकर्मी की बात याद आती है जिसने कहा था, 'मैं सिर्फ जमीन नहीं पोंछ रहा, मैं आदमी को चाँद पर पहुंचाने में मदद कर रहा हूँ।' बस, जब अगली बार हम कचरा उठाएं, तो ये कहें— 'मैं सिर्फ सफाई नहीं कर रहा, मैं अपने देश का मान बढ़ा रहा हूँ।'।

झाड़ू उठाना केवल श्रम नहीं, एक विचार है— एक प्रतीक है, उस नई चेतना का, जो देश को अपने घर की तरह अपनाती है। यही चेतना है, जो भविष्य का भारत रचेगी।

स्वच्छता कोई कार्यक्रम नहीं, यह राष्ट्र के प्रति प्रेम की पहली अनुभूति है।

— अपर मंडल रेल प्रबंधक (परि०)
पू०उ०रे० / लखनऊ



चन्द्रशेखर

स्वच्छ मन-मानवता

आओ मानवता से स्वच्छ करें अपना मन
भेदभाव रहित बने अपना वतन

मानव जाति में जन्म लिया

बस यही हमारी सोच रहे

मन-मानवता स्वच्छ रहे

स्वच्छ हमारा भारत रहे

जाति-भेद का न कोई अपमान बचे

आओ वर-वधू जाति बंधन मुक्त करें

भारत माँ की हम सभी संतानें

आओ मन-मानवता स्वच्छ करें।

— वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग, पू०उ०रे० / लखनऊ

आज हमें ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, जाति-पंथ के भेदभावों को समाप्त कर देना चाहिए

तभी हम एक उन्नत देश की कल्पना कर सकते हैं।

—सरदार बल्लभ भाई पटेल

एल.जे.एन. सिस्टम मैप एंड एसेट्स मैनेजमेंट सिस्टम



डॉ० शिल्पी कनौजिया

दिनांक 25.11.23 को आयोजित माननीय एमआर मीटिंग के अनुसार एल.जे.एन डिवीजन का एक सिस्टम मैप डिजिटल मोड में विकसित किया गया है। यह विचार पीएम गति शक्ति पोर्टल से प्रेरित है। यह मैप जीपीएस पर आधारित है। वर्तमान में इसमें 15 लेयर्स हैं।

एल.जे.एन सिस्टम मैप और एसेट्स मैनेजमेंट सिस्टम को अलग-अलग लेयर्स में विकसित किया गया है। स्टेशन, हॉल्ट, लेवल क्रॉसिंग, गुड्स शेड, रोड साइड मशीनरी, एआरटी एआरएमई साइडिंग, सिगनल एसेट्स, टीआरडी एसेट्स, ब्रिज, कर्व्स, रनिंग रूम, लॉबी, आरडीआई,

पर्यवेक्षकों के कार्य का अधिकार क्षेत्र (इंजीनियरिंग, सिगनल, टीआरडी), आरपीएफ / जीआरपी / मजिस्ट्रेट। आवश्यकतानुसार लेयर्स को बढ़ाया जाएगा।

विभिन्न लेयर्स का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

स्टेशन : यहाँ हम स्टेशन का संक्षिप्त विवरण देख सकते हैं। हरे गुब्बारे पर क्लिक करने पर एक पॉप अप दिखाई देगा, जिसमें पूरे स्टेशन का विवरण देखा जा सकता है। गुब्बारे पर क्लिक करने और स्थान नेविगेट करने (Navigate to Location) चुनने के बाद हम गूगल मैप्स के माध्यम से वांछित यात्रा मार्ग प्राप्त कर सकते हैं। पॉप अप का विवरण नीचे दिया गया है:-

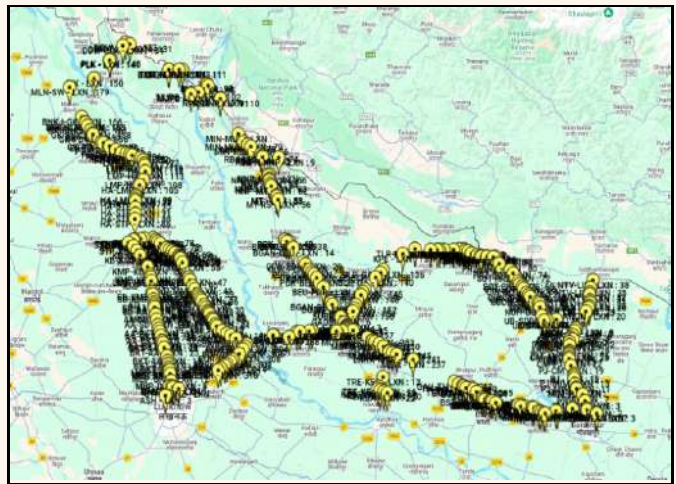
1. स्थान नेविगेट करें (Navigate to Location)
2. कोई भी साइडिंग (Any sidings)
3. लघु योजना देखें (View Miniature Plan):
4. नजदीकी सड़क/राष्ट्रीय राजमार्ग/राजकीय राजमार्ग (Nearest road/NH/SH):
5. नजदीकी अस्पताल/पुलिस थाना (Nearest hospital/police station):
6. यात्री सुविधाएं (Passenger amenities):
7. मिट्टी हटाने वाली मशीनें (Earth Movers):
8. नजदीकी स्टेशन से मशीन की दूरी (Distance of Machine from nearby station):



एल.सी. मैप : एल.सी. मैप में मैड लेवल क्रॉसिंग को पीले रंग के गुब्बारों में दिखाया गया है। इस पर क्लिक करने पर एक पॉप अप मेनू दिखाई देगा। गुब्बारों पर क्लिक करने और

नेविगेट टू लोकेशन चुनने के बाद हम गूगल मैप्स के माध्यम से एसेट का वांछित मार्ग देख सकते हैं। पॉप अप का विवरण नीचे दिया गया है:-

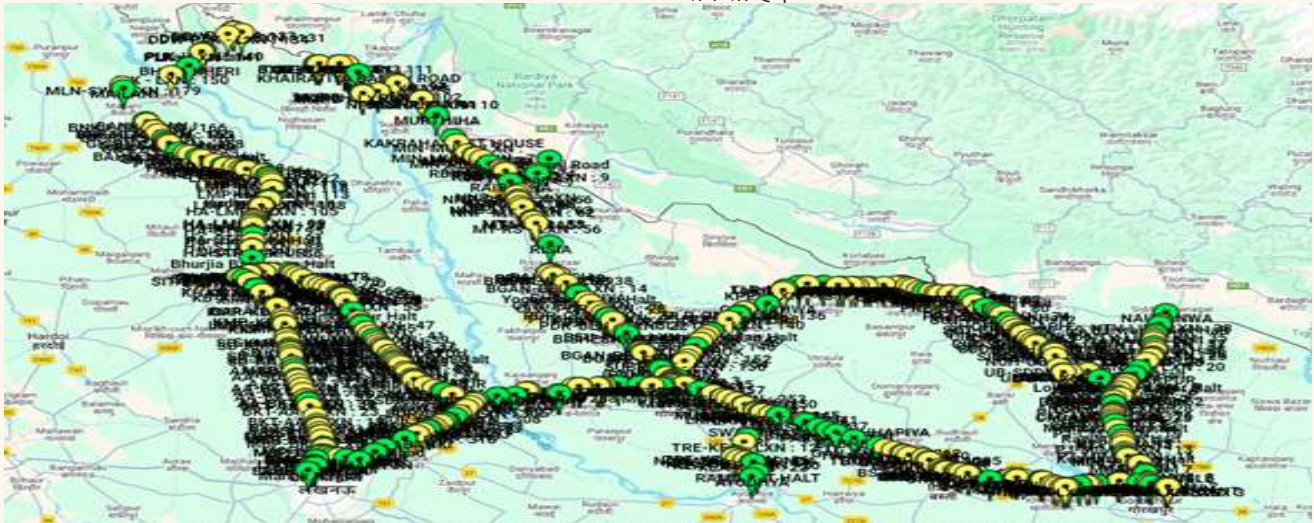
1. स्थान नेविगेट करें (Navigate to Location)
2. समपार विवरण देखें (View LC Detail)
3. सेक्शन (Section):
4. विद्युत आपूर्ति (Power Supply):
5. श्रेणी (Class):
6. प्रकार : इंजी./यातायात (Type : Engg/Traffic):
7. स्लाइडिंग बूम (Sliding boom):
8. इंटरलाक या नॉन इंटरलाक (Interlocked or Non-Interlocked):
9. ओएचई पोस्ट/किमी. (OHE Post/Km):
10. हाइट गेज (Height Gauge):
11. सड़क का प्रकार (Road Type) :
राष्ट्रीय राजमार्ग, राजकीय राजमार्ग, ग्रामीण सड़क (NH, SH, Village Road)
12. अस्पताल का विवरण (Hospital Details) :



अनेकता में एकता, विभिन्न रूपों में एकता की अभिव्यक्ति भारतीय संस्कृति की सोच रही है।

-पं० दीनदयाल उपाध्याय

समपार (LC) के स्थान को देखने के लिए कर सकते हैं जिसका उपयोग किसी भी असामान्य घटना के दौरान यात्रा मार्ग की योजना बनाने, समपार को समाप्त करने में किया जा सकता है।



चुनकर हम गूगल मैप्स (Google Maps) के माध्यम से एसेट का वांछित यात्रा मार्ग प्राप्त कर सकते हैं। पॉप अप का विवरण नीचे दिया गया है:-

-

-पुरुषोत्तमदास टंडन

एआरटी एआरएमई क्रेन मैप : इस मैप में हम एल.जे.एन डिवीजन में एआरटी और एआरएमई के स्थान को देख सकते हैं। गुब्बारों पर क्लिक करने के बाद हम एसेट्स का विवरण

प्राप्त कर सकते हैं और नेविगेट टू लोकेशन चुनकर हम गूगल मैप्स के माध्यम से एसेट का वांछित यात्रा मार्ग प्राप्त कर सकते हैं। पॉप अप का विवरण नीचे दिया गया है:-

1. स्थान नेविगेट करें (Navigate to Location)
2. एआरटी/एआरएमई/क्रेन विवरण देखें (View ART/ARME/Crane Detail)
3. स्टेशन (Station)
4. मूल स्टेशन प्रभारी (Base Station Incharge)
5. एआरटी-एआरएमई-क्रेन (ART-ARME-Crane)
6. श्रेणी (Class)
7. गेज (Gauge)
8. मोबाइल नं. (Mobile No.)
9. एआरटी आई डी (ART ID)



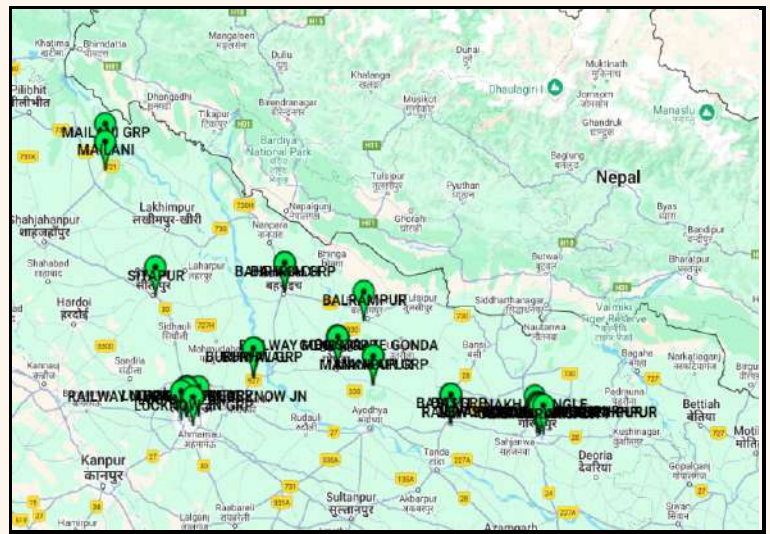
आरपीएफ/मजिस्ट्रेट/जीआरपी थाना : गुब्बारे पर क्लिक करने के बाद हम एसेट का विवरण प्राप्त कर सकते हैं और नेविगेट टू लोकेशन चुनकर हम गूगल मैप्स के माध्यम से

एसेट का वांछित यात्रा मार्ग देख सकते हैं। पॉप अप का विवरण नीचे दिया गया है:-

रेल सुरक्षा बल हेतु (For RPF) :-

1. स्थान नेविगेट करें (Navigate to Location)
 2. स्टेशन (Station)
 3. चौकी मण्डल (Post Division)
- मजिस्ट्रेट हेतु (For Magistrate) :-**

1. स्थान नेविगेट करें (Navigate to Location)
 2. स्टेशन (Station)
 3. चौकी मण्डल (Post Division)
- राजकीय रेलवे पुलिस हेतु (For GRP) :-**
1. स्थान नेविगेट करें (Navigate to Location)
 2. स्टेशन (Station)
 3. चौकी मण्डल (Post Division)



टीआरडी एसेट्स मैप : गुब्बारे पर क्लिक करने के बाद हम एसेट का संक्षिप्त विवरण देख सकते हैं और नेविगेट टू

लोकेशन चुनकर हम गूगल मैप्स के माध्यम से एसेट का वांछित यात्रा मार्ग प्राप्त कर सकते हैं। पॉप अप का विवरण नीचे दिया गया है:-

क्या संसार में कहीं का भी आप एक दृष्टांत उद्धृत कर सकते हैं, जहाँ बालकों की शिक्षा विदेशी भाषाओं द्वारा होती हो।

-डॉ० श्यामसुंदर दास

किया जा सकता है। आवश्यक डेटा का पीडीएफ तैयार किया जा सकता है और कार्यान्वयन के लिए आवश्यकतानुसार अंतिम उपयोगकर्ता को भेजा जा सकता है। अभी तक इस मानचित्र में केवल महत्वपूर्ण एसेट्स लिया गया है, लेकिन सॉफ्टवेयर के अपडेशन के लिए संग्रहीत शेष डेटा की मात्रा (कुल मेमोरी स्पेस 1GB, उपयोग की गई जगह 700MB) का उपयोग किया जा सकता है।

कार्यान्वयन की व्यवहार्यता : यह ऐप बहुत ही उपयोगी है और इसे लिंक/यूआरएल: <https://nerljnassetmaps-in/StationLocation> के माध्यम से आसानी से एंड्रॉइड मोबाइल, डेस्कटॉप और लैपटॉप पर किसी भी व्यक्ति द्वारा एक्सेस किया जा सकता है। यह पासवर्ड से सुरक्षित है और किसी को भी एडमिन बनाया जा सकता है, जो आवश्यकता के अनुसार डेटा को एडिट कर सकता है।

रेलवे में मॉक ड्रिल

यह सुनिश्चित करने के लिए कि दुर्घटना की स्थिति में ब्रेकडाउन ट्रेनों और एआरएमई में नामित सभी कर्मचारी सतर्क रहें और दुर्घटना के समय उन्हें क्या करना है, इससे परिचित हों। यदि उस तिमाही में कोई वास्तविक दुर्घटना नहीं होती है, तो हर तीन महीने में एक बार दुर्घटना अभ्यास आयोजित किया जाता है। मॉक ड्रिल के दौरान एक काल्पनिक दुर्घटना दिखा कर मुख्य नियंत्रक के माध्यम से सभी संबंधित को सूचित किया जाता है जैसा दुर्घटना के समय किया जाता है। ऐसे अभ्यासों के दौरान, एआरएमई और ब्रेक डाउन ट्रेनों को वास्तव में बाहर निकाला जाता है और पास के स्टेशन के लिए रवाना किया जाता है। रेलवे डॉक्टर और अन्य मेडिकल स्टाफ और सामान्य ब्रेक डाउन स्टाफ को इन ट्रेनों से ठीक उसी तरह यात्रा करनी चाहिए, जैसे उन्हें दुर्घटना की स्थिति में करना होता है। दुर्घटना प्रबंधन के लिए नामित रेलवे वाहनों की तैयारियों की जांच करने के लिए सड़क मार्ग से आवाजाही भी की जानी चाहिए। अधिकारियों और कर्मचारियों और मोबाइल ब्रेक डाउन उपकरणों की सड़क मार्ग से आवाजाही का सचेत निर्णय नियंत्रण के प्रभारी द्वारा मामला दर मामला आधार पर लिया जाना चाहिए। रेलवे एम्बुलेंस वैन को भी बाहर किया जाना चाहिए। यह अभ्यास सीनियर डीएसओ/डीएसओ/एडीएसओ की प्रत्यक्ष निगरानी में किया जाना चाहिए और मॉक ड्रिल के उद्देश्य के बारे में पूरी गोपनीयता बनाए रखी जानी चाहिए।

मॉक ड्रिल के प्रकार: भारतीय रेल पर तीन प्रकार के मॉक ड्रिल आयोजित किए जाते हैं, जिनका विवरण निम्न है –

(i) यदि उस तिमाही में कोई वास्तविक दुर्घटना नहीं होती है, तो मण्डल के संरक्षा विभाग द्वारा मॉक ड्रिल प्रत्येक तीन माह पर किया जाता है।

(ii) वर्ष में एक बार रेलवे बोर्ड के आदेश पर फुल स्केल जिसे राष्ट्रीय आपदा राहत बल (NDRF) एवं सिविल प्रशासन के

साथ मिल कर किया जाता है। यह मॉक ड्रिल मण्डल में स्थित सभी एआरटी/एआरएमई अलग अलग वर्ष में किया जाता है।

(iii) विशेष त्योहारों/अवसरों (कुम्भ मेला, खिचड़ी मेला) जिसमें भीड़ या भगदड़ की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, को ध्यान में रखते हुये सिविल प्रशासन एवं रेलवे मिल कर मॉक ड्रिल आयोजित करते हैं।

नागरिक सुरक्षा (civil defence), स्काउट्स और सेंट जॉन एम्बुलेंस जैसे संगठनों के साथ समन्वय—

इन संगठनों के साथ घनिष्ठ समन्वय बनाए रखा जाना चाहिए और उनके पदाधिकारियों, स्वयंसेवकों का विवरण उनके पते और संपर्क नंबर के साथ आपदा प्रबंधन योजना (disaster management plan) में दर्शाया जाना चाहिए। रेलवे और राज्य, जिलों में नागरिक सुरक्षा संगठन के पास अपनी सी.डी. योजनाएं हैं और राहत, बचाव और बहाली के काम में प्रशिक्षित स्वयंसेवक हैं। दुर्घटनाओं के प्रबंधन में उनका सहयोग और प्रभावी और परिणामोन्मुखी होगा।

फुल स्केल मॉक ड्रिल :

आपदा प्रबंधन के लिए अनिवार्यतः किसी परिस्थिति के अंतर्गत तैयारी की स्थिति आवश्यक होती है और उसमें किए गए प्रबंधों की प्रभावशीलता का आकलन केवल फुल स्केल मॉक ड्रिल के माध्यम से ही किया जा सकता है।

फुल स्केल मॉक ड्रिल का उद्देश्य है :

(i) विस्तृत योजना सहित दुर्घटना प्रबंधन प्रणाली की तैयारियों का आकलन करना

(ii) सभी उपकरणों को अच्छी स्थिति में रखना।

(iii) अभ्यास के समग्र प्रदर्शन को मापने के लिए परिचालन प्रतिक्रिया को एकीकृत करें।

मन एक भीरु शत्रु है, जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है।

-मुंशी प्रेमचन्द

(iv) दुर्घटना बहाली के संबंध में प्रदर्शन को मापना।

फुल स्केल मॉक ड्रिल के दौरान, निम्नलिखित पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए –

(i) निर्धारित समय के भीतर आर्म/आर्ट (ARME/ART) का निष्पादन।

(ii) विशेष ट्रेनों की गति।



(iii) नामित कर्मचारियों की पूर्ण उपस्थिति।

(iv) एआरटी, एचआरडी, एचआरई और अन्य बचाव उपकरणों का संचालन

(v) घटना के कालक्रम की लॉगिंग

(vi) क्षेत्रीय टेलीफोन और संचार नेटवर्क का कार्यकरण।

(vii) जनरेटर सेट, प्रकाश उपकरणों का कार्य

(viii) प्राथमिक उपचारकर्ताओं की तैयारी और चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता।

(ix) पर्याप्त जनशक्ति जुटाने के लिए वाणिज्यिक विभाग की तैयारी

(x) उचित स्तर पर संबंधित सिविल प्राधिकारियों को सूचित किया जाएगा।

ड्रिल के पूरा होने पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की

जाएगी जिसमें उन कमियों, जिनके लिए कोई सुधारात्मक उपाय नहीं किए गए हैं तथा जिन सुधारों की आवश्यकता है, उनका विवरण दिया जाएगा।

सेमिनार/कार्यशालाएं : दुर्घटना की तैयारी, दुर्घटना प्रबंधन योजना (disaster management plan) पर महत्वपूर्ण गतिविधियों के केंद्रों पर तथा विभिन्न विभागों के उच्च एकाग्रता के साथ समय-समय पर सेमिनार आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि कर्मचारियों को टीम वर्क में भी प्रशिक्षित किया जा सके।

महत्वपूर्ण जंक्शन स्टेशनों और नियंत्रण कार्यालयों में विस्तृत रोड मैप प्रदर्शित किया जाना चाहिए। इन संसाधनों की पहचान, उनके स्थान, संपर्क टेलीफोन नंबर और अन्य



विवरण की पहचान की जानी चाहिए। उन्हें संकलित किया जाना चाहिए एवं सिस्टम मैप प्रत्येक माह अद्यतन किया जाना चाहिए।

राहत, बचाव और बहाली कार्य तथा यात्रियों को सुविधा प्रदान करने में प्रभावी, सुविधाजनक और कुशल सेवाएं प्रदान करने के लिए एआरएमई और एआरटी को उन्नत और नवीनतम तकनीकी इनपुट से सुसज्जित किया जाना चाहिए।

तैयारी पर विशेष जोर

स्टेशनों/आस-पास के स्टेशनों, मंडल/क्षेत्र नियंत्रण, मुख्यालय नियंत्रण, रेलवे अस्पताल, एआरएमई और एआरटी

हजार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है, वही सच्चा विजयी है।

-गौतम बुद्ध

पर रेलवे कर्मचारियों की तैयारी में निम्नलिखित पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए:

- (i) कर्मचारियों के व्यक्तिगत उपकरण।
- (ii) आपातकालीन उपकरण, जिसमें रेलगाड़ियां भी शामिल हैं।
- (iii) रेलगाड़ियों में रेलवे अधिकारियों, डॉक्टरों की उपलब्धता की जानकारी।

- (iv) रेलवे और गैर-रेलवे संसाधनों की सूची, उनके संपर्क नंबर और पते के साथ।
- (v) उपभोग की गई वस्तुओं की प्रतिपूर्ति की पद्धति।
- (vi) निरीक्षण एवं रखरखाव अनुसूची।
- (vii) प्रशिक्षण एवं मॉक ड्रिल।
- (viii) रोडमैप

गर्म धुरा या हॉट एक्सल होने पर की जाने वाली कार्यवाही

कोच या वैगन में हॉट एक्सल बॉक्स तब होता है जब अपर्याप्त व्हील बियरिंग स्नेहन (लूब्रिकेशन) या यांत्रिक दोष (बियरिंग विफलता) तापमान में वृद्धि का कारण बनता है। यदि पता नहीं चलता है, तो बियरिंग का तापमान तब तक बढ़ सकता है जब तक कि बियरिंग 'बर्न-ऑफ' न हो जाए जो पटरी से उतरने का कारण बन सकता है।

रोलर बियरिंग में हॉट एक्सल के लक्षण:-

1. ग्रीस / चिकनाई का रिसाव होना।
2. ग्रीस का जलना।
3. एक्सल बॉक्स का रंग उड़ जाना।
4. एक्सल बॉक्स से धुआँ निकलना।
5. रात के समय एक्सल बॉक्स लाल हो जाता है और लाल चमक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
6. धातु शोर।
7. पहिये का फिसलना और रेल पर आग लगना।
8. स्प्रिंग का झुकना।

हॉट एक्सल या गरम धुरा इस प्रकार की घटना संज्ञान में आते ही निम्न कार्यवाही की जाए—

चलती ट्रेन में हॉट एक्सल / किसी असामान्य स्थिति के मामले में रेलवे कर्मचारियों के कर्तव्य:

1. किसी भी रेल कर्मचारी को, चलती हुई गाड़ी में गर्म धुरा, कोई लटकता हुआ भाग, टूटा हुआ स्प्रिंग तथा लोड का खिसकना आदि देखकर, गाड़ी को रोकने तथा रेल

कर्मचारियों को चेतावनी देने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।

2. यदि ट्रेन कर्मचारियों (क्रू दल) का ध्यान आकर्षित करने के सभी प्रयास विफल हो जाते हैं, तो स्टेशन मास्टर / केबिन मास्टर अगले स्टेशन के स्टेशन मास्टर को गाड़ी रोकने और जांच करने के लिए पहले से सूचित करेगा तथा खंड नियंत्रक को भी सूचित करेंगे।
3. सामान्य नियम 4.29 (i) के अनुसार घंटी संकेत (बेल



कोड) छ: विराम एक के प्रावधान के अंतर्गत गर्म धुरा या अन्य संकट पूर्ण स्थितियों के बारे में सूचना पाने पर स्टेशन मास्टर जहां तक संभव हो गाड़ी को मैन लाइन में लेगा। यदि वह ऐसा करने में असमर्थ हो तो वह गाड़ी को लूप लाइन में लेने के पूर्व प्रथम रोक सिग्नल पर रोक जाएगा।

अपने को संकट में डालकर कार्य संपन्न करने वालों की विजय होती है, कायरों की नहीं।

- पं० जवाहरलाल नेहरू

- गर्म धुरा वाले माल डिब्बों का गाड़ी परीक्षक (उन स्टेशन पर जहां गाड़ी परीक्षण होता है) या लोको पायलट द्वारा स्टेशन यार्ड में आवंटित लाइन पर गाड़ी के आकर रुक जाने के बाद जांच की जाएगी।
4. ऐसा सुझाव दिए जाने पर चालक दल यह पता लगाने के लिए ट्रेन की जांच करेंगे कि लूप लाइन में प्रवेश के लिए क्रॉसओवर से गुजरने के लिए स्टेशन तक ट्रेन को चलाना सुरक्षित होगा या नहीं। उसके बाद, निश्चित सिगनल ऑफ होने के बाद चालक द्वारा यह सुनिश्चित किए जाने के बाद कि ऐसा करना सुरक्षित है, ट्रेन को स्टेशन तक ले जाएंगे। चालक फेसिंग पॉइंट्स को पार करने के दौरान गति प्रतिबंध का पालन करेंगे, जो किसी भी परिस्थिति में 10 किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक नहीं होना चाहिए।
 5. गर्म धुरा वाले वाहनों/वैगनों को गाड़ी के साथ आगे नहीं बढ़ाया जाना चाहिए, बल्कि उन्हें गाड़ी से अलग कर दिया जाना चाहिए या उनकी मरम्मत की जानी चाहिए।
 6. यदि ब्लॉक सेक्शन में एक्सल बॉक्स गर्म होता हुआ पाया जाता है, तो ट्रेन को तुरंत रोक दिया जाना चाहिए और लोको पायलट द्वारा एक्सल बॉक्स की जांच की जानी चाहिए। लोको पायलट को प्रतिबंधित गति के संबंध में अपने विवेक का प्रयोग करना चाहिए जिस पर वाहनों या वैगनों के लिए यात्रा करना सुरक्षित है। डिटैचिंग सुविधाओं वाले पहले ब्लॉक स्टेशन पर पहुंचने पर वाहनों या वैगनों को ट्रेन से अलग कर दिया जाना चाहिए।
 7. हॉट एक्सल को ठंडा करने के लिए उस पर पानी नहीं डालना चाहिए, बल्कि तब तक इंतजार करना चाहिए जब तक वह अपने आप ठंडा न हो जाए। अगर हॉट बॉक्स पर आग लग जाए तो आग बुझाने के लिए अग्निशामक यंत्र रेत, मिट्टी का इस्तेमाल किया जा सकता है।
 8. हॉट एक्सल वाले वाहनों/वैगनों को स्टेशन पर पहुंचने पर ट्रेन से अलग कर दिया जाएगा तथा इसे स्टेशन मास्टर डायरी में दर्ज किया जाएगा तथा खंड नियंत्रक के माध्यम से समाधि विभाग को इसकी सूचना दी जाएगी।
 - क) स्टेशन से गुजरने वाली प्रत्येक ट्रेन पर स्टेशन मास्टर,कांटा वाला को सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ट्रेन में सब कुछ ठीक है।
 - ख) समपार फाटक से गुजरने वाली प्रत्येक ट्रेन पर गेट मैन को सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ट्रेन में सब कुछ ठीक है।
 - ग) यदि स्टेशन मास्टर किसी रेलगाड़ी में उसके गुजरने के दौरान कुछ भी असामान्य देखता है, जैसे कि किसी यात्री द्वारा अलार्म का संकेत, दरवाजे खुले होना, माल या वाहन के कुछ हिस्से गिरना, किसी वाहन में आग लगना, एक्सल बॉक्स गर्म होना, हेड लाइट और मार्कर लाइट न जलना, बिना सीटी बजाए और हाथ का इशारा किए रेलगाड़ी का बिना आगे बढ़ने के अधिकार के सेक्शन में प्रवेश करना या अन्य दुर्घटनाएं जिनसे रेलवे लाइन खराब होने या बाधित होने की संभावना है और वह खतरे का संकेत दिखाकर या प्रस्थान के संकेतों को वापस लगाकर इसे रोकने में सक्षम नहीं है, तो उसे अगले स्टेशन को पहले ही **‘रेलगाड़ी को रोकें और जांच करें’** संकेत देना चाहिए।
 - घ) किसी गाड़ी में असामान्य परिस्थिति (हॉट एक्सल) की सूचना मिलने पर स्टेशन मास्टर द्वारा अग्रिम रूप से निम्नलिखित कार्रवाई शीघ्रता से करनी होगी—
 - i. जिस दिशा से हॉट एक्सल या ब्रेक बाइन्डिंग वाली गाड़ी आने की सूचना प्राप्त हुई हो उस दिशा के सभी सिगनलों को ऑन पोजिशन में रखना होगा।
 - ii. हॉट एक्सल/हैंगिंग पार्ट्स के मामले में ट्रेन की जांच उसके स्टॉपेज पर पहले स्टॉप सिगनल पर ही सावधानीपूर्वक की जानी चाहिए। ट्रेन के स्टेशन पर आकर रुकने पर गाड़ी प्रबंधक, सहायक लोको पायलट व कांटावाला ट्रेन की सावधानीपूर्वक जांच करेंगे और खराबी को दूर करने के लिए आवश्यक कार्यवाही करेंगे।
 9. टर्मिनेटिंग स्टेशन पर जहां पर समाधि स्टाफ उपलब्ध है, वहां पर सभी यानों/वैगनों का तापमान का मापन किया जाएगा एवं रिकॉर्ड भी किया जाएगा।

— वरिष्ठ मण्डल संरक्षा अधिकारी
पू०उ०रे०/लखनऊ

मनुष्य का सबसे बड़ा यदि कोई शत्रु है, तो वह है उसका अज्ञान।

-चाणक्य

यांत्रिक (ईएनएचएम) विभाग की स्वच्छता संबंधी उपलब्धियाँ



रोहित त्रिपाठी

1. गत वर्ष 2024-25 में ईएनएचएम विभाग के अर्न्तगत आने वाले सभी स्टेशनों पर सफाई का कार्य सफलता पूर्वक कराया गया।

2. विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून के अर्न्तगत वरि० मंडल/यांत्रिक इंजीनियर/ईएनएचएम एवं फ्रेट श्री राहुल कुमार पाण्डेय द्वारा लिखित कविता मरुभूमि एवं मानव का पठन किया गया। इसके अतिरिक्त आपके ही द्वारा लिखित कविता धरती की व्यथा को सोशल मिडिया यू-ट्यूब पर प्रसारित किया गया।



3. विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून को मुख्यालय द्वारा कार्यक्रम में ईएनएचएम विभाग द्वारा सैंड आर्ट बनवाया गया, जिस पर महाप्रबंधक महोदया सुश्री सौम्या माथुर ने पुरस्कृत किया।



4. लखनऊ मंडल के ऐशबाग रेलवे स्टेशन को सर्वोत्तम स्वच्छ स्टेशन ट्रॉफी (डी एवं ई श्रेणी) से पुरस्कृत किया गया।
5. 16 सितम्बर से 01 अक्टूबर तक 'स्वच्छता ही सेवा' के अर्न्तगत रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित निर्देशों के अनुसार सफाई का कार्य कराया गया और वृक्षारोपण किया गया।



6. लखनऊ मंडल में कार्यक्रम का शुभारम्भ ऐशबाग स्टेडियम लखनऊ में किया गया।



जिस प्रकार बिना जल के धान नहीं उगता, उसी प्रकार बिना विनय के प्राप्त की गई विद्या फलदायी नहीं होती।

-महावीर स्वामी

7. गोमतीनगर स्टेशन पर रैली और वृक्षारोपण का आयोजन तत्कालीन मंडल रेल प्रबन्धक श्री आदित्य कुमार की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया।



8. इसी कम में लखनऊ के बादशाहनगर मनोरंजन केन्द्र में एक सांस्कृतिक संध्या का वमंयाई/फेट एवं ईएनएचएम/ल.जं. के निर्देशन में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें तत्कालीन मंडल रेल प्रबन्धक श्री आदित्य कुमार सहित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया, जिसमें रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति रेलवे कर्मचारियों एवं स्काउट के कर्मचारियों के द्वारा की गई।



9. इसी के साथ 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर/2024 तक रेलवे बोर्ड के निदेशानुसार मंडल के सभी स्टेशनों पर स्वच्छता पखारे के अर्न्तगत स्टेशनों, डिपो, ट्रेनों पैन्ट्रीकार, सर्कुलेंटिंग ऐरिया व अन्य स्थानों की सफाई का कार्य कराया गया। स्वच्छता पखवाडा-24 अभियान



के प्रथम दिन कार्यक्रम का थीम "स्वच्छ रेल स्वच्छ भारत" के अर्न्तगत स्वच्छता शपथ, स्वच्छता प्रभात फेरी, जन संवाद, नुक्कड़ नाटक, स्वच्छता के अर्न्तगत सेल्फी बूथ पर फोटो लेना इत्यादि कार्यक्रम संचालित किया गया।



10. वमंयाई/ईएनएचएम/ल.जं. महोदय के निर्देशन में डोनेट क्लोथ हेतु मरेप्र कार्यालय/लखनऊ जं. स्टेशन एवं गोरखपुर स्टेशन पर बाक्स लगवाये गये, जिसमें जन समान्य एवं कर्मचारियों के द्वारा कपड़े डोनेट किये गये, जो बाद में अधोहस्ताक्षरी के द्वारा वृद्धा आश्रम एवं हनुमान सेतु लज में कई गरीबों में कपड़े बांटे गये।
11. ईएनएचएम विभाग के स्वच्छता संबंधी उत्कृष्ट कार्यों के लिए मंडल के स्टेशनों-खलीलाबाद, बस्ती, मनकापुर जंक्शन, गोंडा जंक्शन, बादशाहनगर और गोरखपुर जंक्शन को आईएसओ सर्टिफिकेट प्राप्त हुआ है।

आईएसओ प्रमाणन

ईएनएचएम विभाग को जो ISO 14001 2015 प्रमाण-पत्र प्राप्त हुए हैं, वे पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली में उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। इन प्रमाणपत्रों से यह सिद्ध होता है कि उक्त सभी रेलवे स्टेशन स्वच्छता, ऊर्जा दक्षता और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में उच्चतम मानकों का पालन कर रहे हैं। यह उपलब्धि विभाग की सतत प्रयासों और यात्रियों को स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण प्रदान करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

12. ईएनएचएम विभाग के द्वारा पर्यावरण प्रबंधन में उत्कृष्टता को दर्शाते हुये गोंडा एवं मनकापुर रेलवे स्टेशन पर अपशिष्ट प्रबंधन में उच्चतम मानकों का



गोंडा



मनकापुर

कामनाएं समुद्र की भांति अतृप्त होती हैं। पूर्ति का प्रयास करने पर उनका कोलाहल और बढ़ता है।

-स्वामी विवेकानंद

पालन करते हुये एमआरएफ बनवाया गया एवं अन्य एनजीटी द्वारा नामित स्टेशनों में भी एमआरएफ उपलब्ध कराया गया। यह उपलब्धि विभाग की सतत प्रयासों और यात्रियों को स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण प्रदान करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

13. ईएनएचएम विभाग के द्वारा पर्यावरण प्रबंधन में उत्कृष्टता को दर्शाते हुये माननीय एनजीटी के अनुपालन में लखनऊ जं०, खलीलाबाद, बस्ती, मनकापुर, गोंडा, बादशाहनगर और गोरखपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन पर मानव द्वारा चलित बाटल क्रशर मशीन लगाई गई।



14. गोरखपुर स्टेशन पर स्टेशन के सुन्दरीकरण हेतु गमले एवं पौधे लगाये गए।
15. ईएनएचएम विभाग के लखनऊ स्टेशन पर वाटर रिसाईकलिंग प्लान्ट स्थापित किया जा रहा है, जो इसी माह में पूर्ण हो जायेगा।
16. ईएनएचएम द्वारा क्षमता विकसित करते हुए खलीलाबाद में स्टेशन में ईएनएचएम विभाग के द्वारा प्रथम बार निविदा के द्वारा आउटकम बेस पर स्टेशन की साफ सफाई का कार्य का प्रारम्भ किया गया, जो दिनांक 29.01.2025 से शुरू हुआ।
17. यात्रियों की संतुष्टि बढ़ने के लिए महाप्रबंधक महोदया की अनुमति से लखनऊ एवं गोण्डा स्टेशन हेतु नई एजेन्सी का चयन निविदा के माध्यम से आउटकम बेस की बजाय मैनपावर बेस पर किया जा रहा है।
18. इसी क्रम में 28 मार्च, 2025 को लखनऊ जं० स्टेशन पर मैन पावर पर नई निविदा का टेण्डर ओपन किया गया।

— वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (ईएनएचएम)
पू०उ०रे०/लखनऊ

साइबर क्राइम



डु. आरती वर्मा

साइबर क्राइम एक ऐसा शब्द है, जिसका उपयोग गलत काम या आपराधिक घटना को अंजाम देने के लिए किया जाता है। साइबर अपराध को साधारण शब्दों में कहें, तो इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल फोन आदि का अवैध उपयोग करना। हम देखते हैं कि हर दिन कोई न कोई व्यक्ति साइबर अपराध का शिकार हो रहा है। ये अपराध हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन गए हैं।

साइबर क्राइम शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1995 में प्रसिद्ध कानूनी विद्वान सुस्मान और ह्यूस्टन द्वारा किया गया था। आज दुनिया तेजी से जहाँ डिजिटल इंडिया की तरफ बढ़ रही है वहीं, ऐसे अपराधी इस पीढ़ी को आगे बढ़ने से पीछे रोक रही है। हैकर या अपराधियों के पास इस अपराध को करने के विभिन्न उद्देश्य होते हैं। वे किसी व्यक्ति, संगठन या सरकार को भी नुकसान पहुंचाने के लिए ऐसा कर सकते हैं।

साइबर अपराध एक जंजाल है, कर सकता जो सभी को कंगाल है।

शुरुआती दौर से मनुष्य, स्वभाव से वैचारिक और आविष्कारशील रहा है। हमारी विभिन्न आवश्यकताओं ने नए उपकरणों और प्रौद्योगिकियों को जन्म दिया है। इन आविष्कारों ने जहाँ बहुत उन्नति की है, वहीं दूसरी तरफ इसके विनाशकारी प्रभाव भी हैं। साइबर क्राइम भी इन तकनीकी विकासों का नकारात्मक पहलू है। हमने बहुतों का जीवन बर्बाद कर दिया है। एक तरफ तो इससे पैसे की हानि होती है, वहीं दूसरी तरफ यह व्यक्ति का निजी डेटा चोरी कर उसे मजबूरन असहाय सा बना देता है। डेटा को चोरी करने और मैलवेयर द्वारा सिस्टम को नष्ट करने से भारी नुकसान होता है।

साइबर क्राइम को अंजाम देने वाले विभिन्न तरीकों को अपनाकर इस काम को करते हैं—

1. वेब हाईजैकिंग, 2. साइबर स्टॉकिंग, 3. फिशिंग, मैलवेयर अटैक, 4. साइबर हैरेसमेंट, 5. वायरस अटैक, 6. साइबर पुलिंग, 7. सलामी धोखाधड़ी, 8. पायरेसी।

शेष पृष्ठ 43 पर

जैसे सूर्य आकाश में छुप कर नहीं विचरण कर सकता है, उसी प्रकार महापुरुष भी संसार में गुप्त नहीं रह सकते।

-व्यास मुनि

आपदा एवं प्रबंधन



डॉ. दीक्षा चौधरी

ऐसी कोई प्राकृतिक अथवा मानव जनित घटना जो समाज के सामान्य जनजीवन में गंभीर व्यवधान उत्पन्न कर दे, जिसके परिणामस्वरूप बहुत बड़े स्तर पर जान-माल, प्रकृति तथा अन्य नुकसान हो और जिसको प्रभावित समाज अपने संसाधनों से पुनः स्थापित नहीं कर सकता हो आपदा कहते हैं।

भारत सरकार प्राकृतिक तथा मानव जनित आपदाओं द्वारा होने वाले विनाश तथा हानि की रोकथाम, शमन और तैयारी के राष्ट्रीय संकल्प को प्रोत्साहित करती है। सभी सरकारी एजेंसियों, गैर-सरकारी संगठनों और लोगों की भागीदारी के निरंतर और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से प्राकृतिक और मानव-निर्मित आपदाओं से होने वाली क्षति और विनाश को कम करने में मदद मिलती है।

निरंतर हो रहे विकास के नाम पर जो प्रकृति के साथ हम बदलाव कर रहे हैं, उससे प्राकृतिक आपदा की संभावनाएँ निरंतर बढ़ रही हैं, जैसे- चक्रवात, सुनामी, ग्रीष्म लहर, भूस्खलन, बाढ़, भूकंप, हिम स्खलन। इससे होने वाले नुकसान का स्तर भी कई गुना बढ़ गया है।

जैसे-जैसे हम तकनीकी क्षेत्र में विकास कर रहे हैं, जीवन को और सरल बनाने के प्रयास कर रहे हैं। मानव निर्मित आपदाओं के संकट भी गहराते जा रहे हैं। इसके परिणाम और भी ज्यादा दुष्कर होते हैं, जो कई पीढ़ियों को अनायास ही भुगतने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए- रासायनिक, नाभिकीय, जैविक और युद्ध जैसी आपदा।

प्लास्टिक उपयोग से जो आपदा हो रही है, उसे आज हम प्रत्यक्ष नहीं देख पा रहे हैं, परंतु वह एक जहर की तरह समाज को उस तरफ अग्रसारित कर रहा है, जिससे मुक्त होने में शायद अब हमें शताब्दियों की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

कुछ आपदाओं से बचने के लिए छोटे-छोटे प्रयास किए जा

सकते हैं, जैसे - रासायनिक आपदा के समय, स्थल से दूर चले जाएं, खिड़की दरवाजे बंद कर लें, मुंह नाक पर गीला कपड़ा लपेट लें, प्रशासन को सूचित करें, रेडियो टीवी पर जारी सूचनाओं को ध्यान पूर्वक सुनें, आपदा के समय प्रयोग किए जाने वाले रास्तों का पता रखें, अनायास ही घरेलू प्रयोग किए जाने वाले रसायनों को न मिलाएँ, एक प्रथम उपचार किट सदा तैयार रखें।

भूकंप से होने वाली क्षति से बचने के लिए कुछ उपाय जो किए जा सकते हैं, वे हैं - 1. बाल्कनी में गमले न रखें, 2. घरों को भूकंप रोधी बनाएँ, 3. जरूरी फोन नंबर की सूची किसी साफ सामने जगह पर रखें, 4. परिवार के सदस्यों के साथ मिलने की जगह सुनिश्चित कर लें, 5. अपने सब महत्वपूर्ण दस्तावेज, सामान और आपातकालीन किट कुछ दवाई इत्यादि के साथ तैयार रखें।

भूकंप के समय, लिफ्ट और बिजली के उपकरणों का प्रयोग न करें, सुरक्षित छत या सीढ़ी के नीचे बैठ जाएं, गाड़ी में बैठे हों, तो बाहर न निकलें; बाहर हों, तो गाड़ी की तरफ न जाएं।

महामारी की आपदा - पिछले दिनों हमने कोरोना रोग देखा। इतिहास में हमें प्लेग, इन्फ्लुएंजा, डायरिया इत्यादि का उल्लेख मिलता है। इससे निपटने के लिए स्वस्थ नियमित आचार-विचार ही प्रथम उपाय सिद्ध हुए।

किसी भी आपदा के समय अफवाहों पर ध्यान न दें, घबराएँ नहीं, मदद मांगें और मदद दें, अन्यथा ही दौड़ भाग न करें।



शिक्षा स्त्री और पुरुष दोनों के लिए आवश्यक है।

-ज्योतिबा फुले

आपातकालीन सभा स्थल (Emergency Assembly Area) में एकत्रित हों।

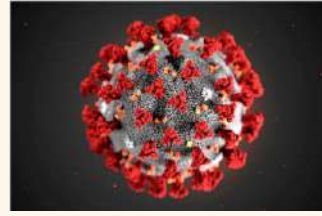
युद्ध एक ऐसी आपदा है, जो पूर्ण रूप से मानव जनित है और जिसे शत-प्रतिशत रोका जा सकता है। युद्ध में होने वाले व्यय को यदि हम समाप्त कर दें, तो कई गुना कम व्यय में बच्चों की शिक्षा, समाज में स्वस्थ जीवन के साधन और चिकित्सा क्षेत्र में बहुत मदद हो सकती है। युद्ध से जो मानसिक क्षति समाज में बच्चों एवं युवा पीढ़ी में देखने को मिलती है, उस आपदा का न कोई आकलन किया जा सकता है और न ही भरपाई का कोई प्रयास सार्थक हो सकता है।

हमारे देश में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का गठन किया गया है। इसके 5 प्रमुख प्रभाग हैं जो आपदा के समय जीवन को पुनः पटरी पर लाने में प्रभावशाली होते हैं –

नीति एवं योजना प्रभाग, प्रशमन प्रभाग, प्रचालन प्रभाग, संचार तथा सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग, प्रशासन और वित्त प्रभाग। इन सभी आपदाओं के समय हमारा रेल विभाग अत्यंत ही महत्वपूर्ण योगदान देता है। मदद की सामग्री को ले जाना व्यक्तियों को ले जाना, औषधि पहुँचाना, खाद्य सामग्री की दुलाई इत्यादि।

सभी विभाग समन्वय के साथ कार्य करते हैं। हम सभी भारत के नागरिकों का यह कर्तव्य है कि आपदा में हम समन्वय के साथ एक दूसरे की सहायता करें और देश के विकास में योगदान करें।

— अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक,
पॉलीक्लीनिक, पू०उ०रे०, ऐशबाग



मक्खनबाजी एक कला

(व्यंग्य)



राम शंकर गुप्ता

प्राचीन काल से मक्खनबाजी की कला का महत्व चलता चला आ रहा है। मक्खन के गुण धर्म के अनुरूप ही विकसित हुआ मक्खनबाजी की संस्कृति। भारत देश में मक्खन खाने वाले लोग कम हैं, परन्तु लगाने वाले अधिक लोग हैं। अपने देश में इस कला का कोई जोड़ नहीं है। प्रतिभाशाली मेहनती होना अपनी जगह है, परन्तु मक्खनबाजी की कला के बिना ये सभी गुण बेकार हो जाते हैं। जबसे निजीकरण का दौर चला है, निजी उपक्रमों की संख्या तेजी से बढ़ी है। देश की बढ़ती आबादी से लोगों की चुनौतियाँ बढ़ी हैं। ऐसे में अपने लक्ष्य तक पहुँचना और अवरोधों को समाप्त करने के लिए मक्खनबाजी का महत्व बढ़ा है। कम्पनियों या सरकारी विभागों में कुछ बॉस या अधिकारी ऐसे भी होते हैं, जो मक्खनबाजी से खुश होते हैं, इसलिए उनके अधीन उन्नति पुरस्कार पाने के लिए गुणवत्ता उतनी महत्वपूर्ण नहीं होती है, जितनी कि येन-केन



प्रकारेण उन्हें खुश रखना। जहाँ तक काम का सवाल है, वह तो होना ही है, क्योंकि काम करने वालों की संख्या कम नहीं है। ऐसे में अगर अपनी साख बनानी है, तो अपने से ऊपर वालों पर मक्खन लगाते रहो। मक्खनबाजी से सामान्य भारतीय प्रसन्न हो जाते हैं। उन्हें कड़वी दवा जो लाभदायी होती है, पसन्द नहीं। उन्हें तो मक्खन जैसा चिकना पदार्थ चाहिए, भले ही इससे भौतिक हानि होती हो। इसकी उन्हें परवाह नहीं। यह आध्यात्मिक देश है जहाँ पर भावनाओं की कद्र अधिक होती है। ऐसी स्थिति में कर्म के प्रति समर्पण के बजाय मक्खनबाजी का धर्म ही उद्धारक हो सकता है। राजनीति में, समाज में, कम्पनी में, सरकार या दल में सभी जगह इस कला के प्रति आकर्षण एवं लगाव बढ़ा है। अतः इस मक्खनबाजी की कला को शिरोधार्य करके देश और स्वयं को महान बनायें।

— सेवानिवृत्त वरिष्ठ चल लेखा निरीक्षक,
पू०उ०रे०, लखनऊ

संस्कृत की विरासत हिंदी को तो जन्म से ही मिली है।

-राहुल सांकृत्यायन

समन्वय



एम.अब्बास रिजवी

किसी विभाग एवं संगठन के लिए समन्वय बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है। विभाग हो अथवा संगठन बिना समन्वय के एक कदम चलना बहुत कठिन कार्य है। प्रशासनिक क्षेत्र में विभिन्न विभागों, अनुभागों अथवा अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कार्यों के बीच तालमेल बिठाना तथा सहयोग देना व लेना, उनमें विरोधाभास व टकराव की स्थिति को समाप्त करना ही प्रशासनिक समन्वय कहलाता है।

प्रशासन एक संघटन होता है। अतः विभाग एवं संघटन को सफलतापूर्वक चलाने हेतु समन्वय केवल आवश्यक ही नहीं बल्कि अपरिहार्य हैं। इससे विभाग एवं संगठन के कामों में एकरूपता स्थापित होती है। कार्यों का दुहराव कार्यरत व्यक्तियों के बीच तनाव तथा नीतियों एवं कार्यों के टकराव विरोधाभास की स्थिति को रोकती है। यह समन्वय का नकारात्मक पक्ष है। इसके सकारात्मक पक्ष के अन्तर्गत यह कहना उचित होगा कि कार्यरत कर्मचारियों के बीच आपसी सहयोग के साथ तालमेल पैदा करती है। किसी विभाग एवं संगठन में प्रत्येक उच्चाधिकारी अथवा पदाधिकारी अपने अधीनस्थों के कार्यों के बीच समन्वय एवं तालमेल स्थापित करना, क्योंकि ऐसा करने से न ही लक्ष्य प्राप्त होगा न ही उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकती है।

विभाग एवं संगठन के कार्यों को सरल बनाने तथा लक्ष्य एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तथा सफल बनाने के लिए निमित्त समन्वय अर्थात् क्रियाओं में एकरूपता स्थापित करना अति आवश्यक होता है। किसी विभाग एवं संघटन में समन्वय है, उसको पहचानने के लिए निम्नलिखित आधारों से पहचान किया जा सकता है। 1. विभाग एवं संघटन और कार्यरत कर्मचारियों के बीच सहयोगात्मक दृष्टि है। 2. प्रत्येक को विभाग एवं संघटन में अपनी भूमिका का ज्ञान है तथा उसके अनुसार कार्यों का प्रतिपादन किया जाता है। 3. परिस्थितियों के अनुरूप कार्यों का निष्पादन। सर हेनरी फेयोल ने समन्वय की परिभाषा करते हुए कहा है कि संघटन की क्रियाओं में एकरूपता लाना ताकि उसका कार्य आसानी से सफलता पूर्वक होना ही समन्वय है। चार्ल्सबर्थ ने समन्वय की परिभाषा करते हुए कहा है कि संघटन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न भागों का व्यवस्थित समीकरण समन्वय है। सैकलर हैडसन का मानना है कि विभिन्न भागों को आपस में सम्बन्धित करने का महत्वपूर्ण प्रयास समन्वय है। नोग्रो के मतानुसार संघटन के विभिन्न अंगों का एक साथ मिलकर प्रभावकारी रूप में कार्य करना तथा काम में संघर्ष, अतिच्छादन तथा पुनरावृत्ति न होने

देना समन्वय है। उपर्युक्त किये गये कथनों की विवेचना करने पर यह निष्कर्ष मिलता है कि विभाग एवं संघटन क्रियाओं में एकरूपता के साथ ही साथ सहयोग प्राप्त करना ताकि उद्देश्यों की प्राप्ति करना सरलता एवं सफलतापूर्वक कार्यों का निष्पादन किया जा सके।

किसी विभाग एवं संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसकी विभिन्न क्रियाओं में सामंजस्य व तालमेल स्थापित करना समन्वय कहलाता है। यह प्रबन्ध का वह कार्य है, जो किसी भी संस्था के विभिन्न विभागों, कर्मचारियों तथा उसके समूहों में एकरूपता व एकीकरण स्थापित करता है कि न्यूनतम लागत पर वांछित उद्देश्यों की पूर्ति में मदद करती है। संघटन में विभिन्न अंगों में कार्यरत व्यक्तियों की स्थिति टालकर सहयोग की भावना पैदा करने, कार्यों का दुहराव रोकने, कार्यों के क्रमबद्ध ढंग से निष्पादन तथा साधनों के दुरुपयोग एवं अपव्यय पर रोक के लिए आवश्यक है, समन्वय के दो सिद्धान्तों पर आधारित हैं:— 1. आन्तरिक तथा बाह्य 2. लम्बरूप तथा समतल। आन्तरिक तथा बाह्य समन्वय को कार्यात्मा और संरचनात्मक समन्वय भी कहा जाता है। संघटन के विभिन्न अंगों के बीच समन्वय आन्तरिक अथवा कार्यात्मक तथा उसे प्रभावित करने वाले बाहरी तत्वों जैसे जनमत दबाव समूह और हित समूह आदि के बीच समन्वय को संरचनात्मक कहा जाता है। संघटन के विभिन्न स्तरीय अधिकारियों एवं उनके अधीनस्थों के बीच समन्वय लम्ब रूप समान स्तरीय व्यक्तियों के बीच समन्वय समतल कहा जाता है। किसी संघटन में समन्वय अथवा विभाग में समन्वय स्थापित करने की दो विधियाँ होती हैं:— 1. औपचारिक 2. अनौपचारिक।

औपचारिक विधियों के अन्तर्गत नियोजन, अधिकार एवं दायित्वों का निर्धारण, संचार के साधन अन्तर विभागीय समितियों कार्यों का मूल्यांकन इत्यादि, अनौपचारिक साधन के अन्तर्गत व्यक्तिगत संबंध, सहयोग प्रभावशाली नेतृत्व अनौपचारिक विचार विमर्श आपसी संबंधों के कारण पैदा होने वाली भावनाएं आदि। समन्वय संस्था में कार्यरत विभिन्न कर्मचारियों प्रबन्धकों के बीच संतुलन स्थापित करता है या इसका मुख्य तत्व है। प्रत्येक व्यक्ति कर्मचारी एवं विभागों के लक्ष्य निर्धारित करके उनके क्रियाओं को एक सूत्र में पिरोना ही समन्वय कहलाता है।

अतः यह कहना उचित है कि बिना समन्वय के संगठन आगे नहीं जा सकता है अगर संघटन में समन्वय हो, तो उसकी उन्नति निरन्तर जारी रहती है।

— सहायक उप निरीक्षक
रेसुब पोस्ट गोरखपुर

कैसे निज सोये भाग को कोई सकता है जगा, जो निज भाषा-अनुराग का

अंकुर नहीं उर में उगा।

-अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

कांटों और क्रॉसिंगों का निरीक्षण तथा अनुरक्षण



गोविन्द प्रसाद कुशवाहा

कांटों और क्रॉसिंगों का निरीक्षण तथा अनुरक्षण – ट्रेनों के संरक्षित संचालन हेतु रेलवे ट्रैक का उचित रखरखाव अत्यंत आवश्यक है। कांटा व क्रॉसिंग रेलवे ट्रैक के अत्यंत महत्वपूर्ण भाग हैं, जिससे ट्रेने एक ट्रैक से दूसरे ट्रैक पर ले जाई जाती हैं। जिससे ट्रेनों को क्रॉसिंग स्टेशन पर खड़ा किया जा सके, जिससे कि यात्री, ट्रेन में चढ़ सके या फिर ट्रेन से उतर सके। इसके अलावा दूसरी ट्रेनों को रनथ्रू करने हेतु भी ट्रेनों को प्लेटफार्म लाईन या अन्य लाईनो पर लेने की आवश्यकता पड़ती है। इन सभी गतिविधियों के संरक्षित संचालन हेतु कांटा व क्रॉसिंग की दशा उचित स्तर का बनाये रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस हेतु आई आर पी डब्ल्यू एम में कुछ सुझाव दिए गए हैं, जो निम्नवत हैं –

(1) सामान्य अनुरक्षण :-

- (क) पॉइंटों और क्रॉसिंगों को 20 में 1 उठान के बिना बिछाया जाता है।
- (ख) स्टॉक रेल जोड़ों या क्रॉसिंगों की टो या फिर हील पर कोई जंक्शन फिशप्लेट नहीं लगा होनी चाहिए।
- (ग) पॉइंटों और क्रॉसिंगों के दोनों तरफ कम से कम एक रेल का सेक्शन वही होना चाहिए जैसा कि पॉइंट और क्रॉसिंगों की असेम्बली का रेल सेक्शन है।
- (घ) पॉइंट और क्रॉसिंग असेम्बली पर स्टॉक तथा लीड जोड़ों की वेल्डिंग किया जाना चाहिए।
- (ङ) स्फेरिकल वाशरों का उपयोग बहुत महत्वपूर्ण है, जहां बोल्ट के शैंक रेल के अक्ष के समकोण पर न हो वहां स्फेरिकल वाशरों को प्रदान किया जाना चाहिए अर्थात् स्फेरिकल वाशरों का उपयोग हर उस जगह किया जाना चाहिए, जहाँ बोल्ट के शैंक रेल के अक्ष के साथ समकोण नहीं बना रहे हों।
- (च) स्फेरिकल वाशरों को हमेशा स्विच असेम्बली में बायीं ओर लगाना चाहिए चाहे स्विच असेम्बली बाएं दिशा की हो या दायें दिशा की हो।
- (छ) स्लीपरों को बिछाते समय सही स्पेसिंग पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। स्लीपर स्पेसिंग मानक ड्राइंग के अनुसार रखा जाना चाहिए है।

- (ज) टर्न आउटों पर ट्रैक स्टैण्डर्ड, आगे व पीछे बिछाए गए ट्रैक के स्टैण्डर्ड से कम नहीं होनी चाहिए।
- (झ) स्विच की टो, स्विच की हील पर चौक रेल तथा विंग रेल पर गैप आयाम अनुसूची में निर्धारित सीमा के भीतर मेन्टेन किया जाना चाहिए।
- (ञ) कुर्सियां (चेयर प्लेट) तथा बंधक तथा अन्य फिटिंग सही रूप से बंधी होनी चाहिए।
- (ट) स्लीपरों के नीचे पैकिंग ढीली/दोषपूर्ण नहीं होनी चाहिए विशेषकर क्रॉसिंगों तथा स्विच के नीचे।
- (ठ) सैस पर्याप्त नीचा होना चाहिए ताकि जल निकास अच्छे ढंग से हो तथा गिट्टी कुशन की पर्याप्त गहराई तक व्यवस्था होनी चाहिए।
- (ड) यदि टर्न आउटों पर क्रीप हो रही है, तो उस स्थिति में इलास्टिक फास्टिंग की जांच करके उचित कार्यवाही/मरम्मत कार्य किया जाना चाहिए।
- (ढ) किसी विशिष्ट क्षेत्र जैसे मार्शलिंग यार्डों, साइडिंगों के बड़े अभिन्यासों, टर्मिनल स्टेशनों आदि जहां बड़ी संख्या में पॉइंट और क्रॉसिंगों का अनुरक्षण किया जाता हो वहां सभी पॉइंट और क्रॉसिंगों के अनुरक्षण का नियमित समयान्तराल पर शिड्यूल के अनुसार किया जाना चाहिए।
- (ण) क्रॉसिंगों पर फिश प्लेट जोड़ों के दोनों तरफ टेपर्ड वाशर लगाने चाहिए।

2) स्विचों का अनुरक्षण –

- (क) टंग रेल और स्टॉक रेलों का निर्माण कारखानों में आरडीएसओ के मानकों के अनुसार किया जाता है। फील्ड स्टाफ को लाइन में डालने से पहले टंग और स्टॉक रेलों का कर्वेंचर चेक करना चाहिए। यदि टर्न आउट वक्र से निकल रहा है, तो उचित कर्वेंचर लीड वक्र के परिणामिक त्रिज्या के अनुसार टंग रेल और स्टॉक रेलों में प्रदान किया जाना चाहिए।
- (ख) टंग रेल की 13 मिमी शीर्ष, 1:8.5 टर्न आउट में एटीएस से 476.5 मिमी दूरी पर व 1:12 टर्न आउट में एटीएस से 1682 मिमी दूरी पर होता है, इसको शिड्यूल निरीक्षण के दौरान चेक करना चाहिए।

गरीब बच्चों की शिक्षा में मदद करो, हर गरीब को शिक्षा देने में योगदान दें।

-संत गाडगे

- (ग) स्टॉक और टंग रेल की दशा का परीक्षण सावधानीपूर्वक करना चाहिए। बुरी तरह से घिसे और टूटी स्टॉक और टंग रेलों को बदला जाना चाहिए। टंग रेल को घिसे टूटे श्रेणी में वर्गीकृत किया जाएगा जब—
- (i) अगर टो से 1000 मिमी. दूरी के अंदर छोटी लंबाइयों में चिपिंग / क्रेक की कुल लंबाई 200 मिमी. हो। चिपिंग की लंबाई उतने हिस्से की ली जाएगी, जहां टंग रेल के घिसाई की गहराई 10 मिमी. से ज्यादा और लगातार 10 मिमी. की लंबाई में हो।
- (ii) टंग रेल ऐंठ गई हो / मुड़ गई हो और स्टाक रेल से ठीक तरह से न चिपकती हो जिसके कारण 5 मिमी. या उससे ज्यादा गैप हो जाए, ऐसी टंग रेल को लगाने से पहले ठीक कर लिया जाना चाहिए। यह सीमा आरएसईएम में वर्णित है।
- (iii) स्टॉक रेल का घिसाव, आई आर पी डब्लू एम में लिखी गई सीमा से अधिक नहीं होना चाहिए, किन्तु टंग रेल की उचित हाउसिंग करने का प्रयास करना चाहिए। यदि स्टॉक रेल में बर् आ गया हो और वह लॉक बार की सेटिंग में रुकावट डाले तो बर् ग्राइंडिंग करना चाहिए। बर् ग्राइंडिंग के पश्चात् भी यदि लॉक बार की सेटिंग में रुकावट आये तो स्टॉक रेल को बदल देना चाहिए यदि ऐसा आवश्यक हो तो।
- (घ) टर्न आउट की पैकिंग करते समय रेल सिग्नल राड व स्ट्रेचर बार ठीक तरह पैकिंग करने में बाधा उपस्थित करते हैं। अतः टैम्पिंग को सुविधाजनक बनाने के लिए सिग्नल स्टाफ की सहायता से इन्हें निकाल देना चाहिए तथा टैम्पिंग के पश्चात् इन्हें पुनः ठीक प्रकार से फिट किया जाना चाहिए।
- (ङ) टंग रेल के ठीक बैठने तथा स्विचों के प्रक्षेप की भी जांच करने के लिए सभी गैर-अन्तर्पर्शित पॉइंटों को हस्त लीवरों द्वारा तथा अन्य पॉइंटों को सिग्नल फ्रेम से परिचालित किया जाना चाहिए, जब यातायात ऐसा करने की अनुमति दे।
- (च) यदि टंग रेल, स्टॉक रेल के साथ ठीक से सेट हुई न पायी जाए तो गैर-अन्तर्पर्शित कांटों के मामले में रेलपथ कर्मचारियों द्वारा तथा अन्तर्पर्शित या आंशिक अन्तर्पर्शित पॉइंटों के मामले में सिग्नल एवं दूरसंचार कर्मचारियों के साथ मिलकर दोषों का सुधार किया जाना चाहिए।
- (छ) टंग रेल को सभी स्लाइडिंग चेयर पर एक समान रखा
- होना चाहिए।
- (ज) जब टंग रेल बंद हालत में हो तो इसे स्लाइड ब्लॉकों के विरुद्ध एकसमान रूप से लगा होना चाहिए।
- (झ) स्विच के टो पर थोड़ा चौड़ाई में जो कि टंग रेल के सिरे को अपनी स्थिति में लाने के लिए आवश्यक हो, को उचित स्टील पैकिंग द्वारा, जोकि स्टॉक रेल की वेब तथा स्लाइड चेयर के लग के बीच में जहां भी संभव हो लगाना चाहिए।
- (ञ) सिग्नल राड के साथ जुड़ी स्ट्रेचर बार का अनुरक्षण रेलपथ कर्मचारी वर्ग तथा सिग्नल कर्मचारी वर्ग द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा। लीडिंग स्ट्रेचर बार के ऊपर और स्टॉक रेल के बॉटम के बीच में गैप 1.5 मिमी. से 5 मिमी. होना चाहिए।
- (ट) अन्य सभी स्ट्रेचर बार एसएसई/जेई (रेलपथ) द्वारा अनुरक्षित की जाएगी। रेलपथ परिपथ के उद्देश्य से इन्सुलेट की गयी स्ट्रेचर बार को सिग्नल कर्मचारी वर्ग की उपस्थिति के बिना नहीं छेड़ा जाना चाहिए।
- (ठ) स्विचों का घिसाव टंग रेल के मुख का स्नेहन करके कम किया जा सकता है।
- (3) क्रॉसिंगों का अनुरक्षण—**
- (क) यदि क्रॉसिंग के अग्रभाग में हुई कोई क्षति नोटिस में आए तो उसके कारण का पता लगाना चाहिए तथा उसे ठीक किया जाना चाहिए।
- (ख) क्रॉसिंग के अग्रभाग को ठोकर या चोट से बचाने के लिए यह सुनिश्चित करना होगा की फैन शेप टर्न आउटों में चेक रेल क्लिअरन्स 41 से 45 मिमी. रखा जाना चाहिए।
- (ग) ऑब्ज्यूज क्रॉसिंगों में, थ्रोट तथा नोज के बीच की दूरी सही ढंग से अनुरक्षित की जानी चाहिए।
- (घ) डायमंड क्रॉसिंगों में, ऑब्ज्यूज क्रॉसिंगों को एक्यूट क्रॉसिंगों की मध्य रेखा के संदर्भ में एक दूसरे के सामने बिछाया जाना चाहिए।
- (ङ) विंग रेल व क्रॉसिंग के उर्ध्वाधर घिसाव के माप की अधिकतम अनुमेय सीमा 10 मिमी. होगी। लेकिन राजधानी / शताब्दी मार्ग पर, जहां अच्छी रख-रखाव के तौर पर क्रॉसिंग और विंग रेल को निम्न घिसाव की सीमा तक पहुंचने से पहले ही वेल्डिंग द्वारा रि-सर्फेसिंग/रि-कंडीशनिंग कर ठीक करना चाहिए।

सत्य की खोज ही सबसे बड़ा धर्म है।

-राजा राममोहन राय

- (i) बिल्ट अप / वेल्डेड क्रॉसिंग में - 6 मिमी.
- (ii) सीएमएस क्रॉसिंग में - 8 मिमी.

टिप्पणी - सीएमएस क्रॉसिंग के केस में वास्तविक घिसाव जानने के लिए नापी गई घिसाव में से निम्न माप को घटाना चाहिए (विंग रेल की लंबाई को 1:20 के ढलान को ढालने में समायोजित करने के लिए)

- (क) 52 किग्रा रेल : 2.0 मिमी.
- (ख) 60 किग्रा रेल : 2.5 मिमी.
- (ग) हीट ट्रिटिड क्रॉसिंग के लिए 3.5 मिमी

(4) लीड भाग तथा टर्न-इन वक्र का अनुरक्षण -

- (क) स्लीपरों को बिछाते समय सही स्पेसिंग को सुनिश्चित करना चाहिए ताकि लीड वक्र का सही अलाइनमेंट किया जा सके। अनुरक्षण के समय 3.0 मी. अंतराल पर

स्टेशन चिह्नित कर वर्साइन की जांच करनी चाहिए और अगर जरूरत हो, तो रेलपथ को ठीक करना चाहिए। वर्साइन का मान लीड वक्र में और टर्न इन वक्र में अच्छी रखरखाव के तौर पर अभिकल्पित मान से 3 मिमी. से पार नहीं होना चाहिए।

- (ख) पॉइंट क्रॉसिंग के निरीक्षण के दौरान लूप लाइनों के टर्न इन वक्र के वर्साइन को 3.0 मीटर के अंतराल में 6.0 मीटर की कॉर्ड पर रिकॉर्ड करना चाहिए ताकि उसके शार्पनेस का पता चल सके और ठीक किया जा सके।
- (ग) टर्न इन वक्र में स्लीपर और बंधनों की भी ठीक से जांच करनी चाहिए।

— संरक्षा सलाहकार/इन्जी.
संरक्षा विभाग, लखनऊ
मो. न. 9044600119

योग का महत्व



दीपक कुमार यादव

योग करें, शान्त रहें, खुशहाल रहें,
करें दिन की शुरुआत योग से,
जीवन है अनमोल
शिक्षा, स्वास्थ्य, मित्रता इससे बढ़ती
रहे मन सन्तुष्ट, योग करें निरोग रहें।
भारत ने किया इसकी शुरुआत

मान्यता मिली संयुक्त राष्ट्र से
कई देशों ने मिलकर इसे स्वीकारा है,
योग करें, शान्त रहें, खुशहाल रहें।
कई रोगों को दूर करता है,
रोगों से लड़कर करें निरोग
जीवन में खुशहाली की नई रोशनी भरता
योग करें, शान्त रहें, खुशहाल रहें।
है क्या न्याय प्रकृति का,
सबको देता एक समान अवसर
जाति-पाँत का कोई भेदभाव नहीं करता,

जीवन है सबको प्यारा,
योग करें, शान्त रहें, खुशहाल रहें।
रोजगार के अवसर देता,
अच्छे योग प्रशिक्षक बन जाओ
जीवन में सबसे ऊपर,
रखो दैनिक जीवन शैली में
योग करें, शान्त रहें, खुशहाल रहें
हल्के में न लें योग है लाभदायक
सुस्त बनें रहेंगे तो रोग बनेंगे खलनायक
चक्कर डॉक्टर, दवाई और अस्पताल में लगाने पड़ेंगे
जेब भी ढीली करनी पड़ेगी,
दुःखी मन से जीवन बिताने पड़ेंगे
इसलिए आओ हम सब करें योग नित्य प्रतिदिन
रहें स्वस्थ नई स्फूर्ति मिले तन-मन
योग करें, शान्त रहें, खुशहाल रहें।

— टेलीकॉम सहायक
सिगनल एवं दूरसंचार विभाग, पू०उ०रे०, लखनऊ

सच्चा ज्ञान वही है, जो नैतिकता और सदाचार का पालन करते हुए प्राप्त किया जाए।

-ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

संरक्षा परिपत्र एक नजर में



मनोज कुमार पाण्डेय

लखनऊ मंडल में संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तथा सभी कर्मचारियों को जागरूक करने के लिए तथा अपने कार्य स्थल पर क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए इस विषय पर समय-समय पर संरक्षा परिपत्र जारी किए जाते हैं।

पिछले वर्ष मंडल में जो घटनाएं घटित हुई थीं। उनसे संबंधित संरक्षा परिपत्र जारी किए गए थे।

इसमें पहला संरक्षा परिपत्र, नॉन इंटरलॉक समपार पर कार्य प्रणाली संबंधित दिशा निर्देश से संबंधित था। इस संरक्षा परिपत्र में फाटक पर कार्यरत फाटक वाला द्वारा नान इंटरलॉक संपर्क पर क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए इसका उल्लेख किया गया था। दूसरा संरक्षा परिपत्र ट्रेनों में आग से बचाव हेतु सावधानियां संबंधित दिशा निर्देश से संबंधित था। इस परिपत्र में ट्रेनों में आग से किस प्रकार बचाव किया जाए। इस विषय में विस्तृत चर्चा की गई थी। तीसरा संरक्षा परिपत्र नॉन इंटरलॉक संपर्क जागरूकता के संबंध में था। इस संरक्षा परिपत्र में समपार पर कार्यरत गेटमैन को क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए। इस विषय पर चर्चा की गई थी।

चौथा संरक्षा परिपत्र ट्रैक पर इंजीनियरिंग कार्य के दौरान अपनाई जाने वाली सावधानियां के संबंध में था। इस परिपत्र में इंजीनियरिंग स्टाफ द्वारा ट्रैक पर कार्य के दौरान क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए। इस विषय पर चर्चा की गई थी। पांचवा संरक्षा परिपत्र समपार है। परिपत्र में सभी गेटमैन को क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए। इस विषय पर चर्चा की गई थी। छठ संरक्षा परिपत्र इंटरलाक समपार पर कार्यरत गेटमैन के कार्य के दौरान क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए। इस संबंध में था।

सातवां संरक्षा परिपत्र ट्रेन पार्टींग में अपनाई जाने वाली सावधानियां के संबंध में था। आठवां संरक्षा परिपत्र शटिंग के समय बरती जाने वाली सावधानियां के संबंध में था। नवां संरक्षा परिपत्र रेल तथा वेल्ड के दौरान बरती जाने वाली सावधानियां के संबंध में था।

दसवां संरक्षा परिपत्र गर्मी के मौसम में हार्ट वेदर के दौरान अपनी जाने वाली सावधानियां के संबंध में था।

ग्यारहवां संरक्षा परिपत्र विद्युत एवं टेलीकॉम विभाग के असेट्स तथा इंस्टॉलेशन की अर्थिंग हेतु आवश्यक दिशा निर्देश के संबंध में जारी किया गया था।

12वां संरक्षा परिपत्र लोको को अनमैन छोड़ते समय बरती जाने वाली सावधानियां के संबंध में था।

13वां संरक्षा परिपत्र बिजली के तारों और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के कारण लगने वाली आग से बचाव के समय बरती जाने वाली सावधानियां के संबंध में था।

14वां संरक्षा परिपत्र अनारक्षित समपार पर अपनाई जाने वाली सावधानियां के संबंध में था।

15 व संरक्षा परिपत्र ट्रैक मशीन व कैपिंग कोच के सिक्योरिंग के संबंध में था।

16वां संरक्षा परिपत्र गाड़ियों के एसी कोच में एक पैनल की ओवरलोडिंग के बचाव हेतु बरती जाने वाली सावधानियां के संबंध में था।



17वां संरक्षा परिपत्र पत्र ट्रेनों में आग से बचाव हेतु अपनायी जाने वाली सावधानियां के संबंध में था।

18वां संरक्षा परिपत्र गाड़ी संख्या 15274 पर एक लोहे का फ्रेम से टकराने के संबंध में था। इस संरक्षा परिपत्र में यह घटना दोबारा ना हो इस संबंधी दिशा निर्देश जारी किए गए थे संरक्षा परिपत्र 19 संरक्षा परिपत्र शनटिंग के समय बरती जाने वाली सावधानियां के संबंध में था। इसमें शनटिंग के दौरान क्या-क्या सावधानी बरती जानी चाहिए इसका उल्लेख किया गया था।

संरक्षा परिपत्र 20 में इंजीनियरिंग ब्लॉक के संबंध में अपनाई जाने वाली सावधानियां के संबंध में चर्चा किया गया था।

— संरक्षा सलाहकार/यातायात

प्रसन्न रहना बहुत सरल है, लेकिन सरल होना कठिन है।

- गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर

ब्रेक बाइंडिंग/फ्लैट टायर से बचाव के उपाय



विशा भूषण पाण्डेय

वैगनों में खाली और लोड डिवाइस की सेटिंग

वैगनों में खाली और लोड डिवाइस यदि सही स्थिति में सेट नहीं किया गया तो ब्रेक बाइंडिंग और फ्लैट टायर का कारण बनेगा।

1. फ्लैट टायर/खराब ब्रेक पावर के मामलों से बचने के लिए लोडिंग/अनलोडिंग के समय यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि खाली/लोड बॉक्स लीवर को ऑपरेटिंग/वाणिज्यिक कर्मचारियों द्वारा सही स्थिति में रखा जाना चाहिए यानी खाली स्थिति पर — जब वैगन खाली हो या थोड़ा भरा हुआ। ऑन लोडेड पोजीशन— जब वैगन लोड किया जाता है।

2. प्रारंभिक बिंदु से ट्रेन शुरू करते समय गार्ड द्वारा और ट्रेन की जांच के समय टी एक्स आर द्वारा इसकी सुपर जांच की जानी चाहिए।

3. लोडिंग/अनलोडिंग टर्मिनलों से लोड की आवाजाही से पहले, ऑपरेटिंग स्टाफ द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि हैंड ब्रेक रिलीज किए जाएं।

4. सड़क किनारे स्टेशनों से माल उठाते समय ट्रेन चालक दल को हैंड ब्रेक रिलीज करना सुनिश्चित करना चाहिए।

5. रेलवे बोर्ड के दिशानिर्देशों के अनुसार, व्हील ट्रेड पर अनुमेय फ्लैट गुड्स स्टॉक के लिए 60 मिमी और कोचिंग स्टॉक/लोकोमोटिव के लिए 50 मिमी तक सीमित है। सभी सी एंड डब्ल्यू ट्रेन Examination स्टाफ को कोचिंग स्टॉक और माल स्टॉक के लिए नियमों और प्रावधान का पालन करने के लिए परामर्श दिया जाना चाहिए। टीएक्सआर स्टाफ को सलाह दी जानी चाहिए कि वे किसी भी परिस्थिति में उपरोक्त अनुमति से अधिक फ्लैटनेस लंबाई वाले वैगन/कोच को अनुमति न दें। ऐसे वैगनों/कोचों को सिक मार्क किए जाने के तुरंत बाद ट्रेन से अलग कर दिया जाना चाहिए। सी एंड डब्ल्यू डिपो और सिक लाइनों में सी एंड डब्ल्यू ट्रेन परीक्षा स्टाफ को टायर दोष गेज की मदद से गहन परीक्षण कर व्हील ट्रेड की सपाटता की जांच करनी चाहिए।

6. इन रूट फ्लैट टायर 100 मिमी से ज्यादा मिलने पर नियंत्रक द्वारा 30 kmph का गति प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए, इन रूट फ्लैट टायर 100 मिमी से कम मिलने पर नियंत्रक द्वारा 50 kmph का गति प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। यदि फ्लैट टायर अनुमेय सीमा के अंदर है तो कोई गति प्रतिबंध

नहीं लगाया जाना चाहिए।

कोचिंग व गुड्स ट्रेन की रोलिंग आउट/रोलिंग इन जांच—

असामान्य, विशेष रूप से ब्रेक बाइंडिंग/फ्लैट टायर का पता लगाने के लिए, सी एंड डब्ल्यू विभाग ने नामांकित बिंदुओं पर यात्री ले जाने वाली ट्रेनों की जांच शुरू की गई है।

सभी ट्रेनों के गार्डों को नामांकित स्टेशनों पर बार-बार पीछे मुड़कर देखना चाहिए कि रोलिंग आउट जांच के लिए तैनात किए गए स्टेशन स्टाफ/टीएक्सआर स्टाफ द्वारा कोई खतरे का सिग्नल तो नहीं दिखाया जा रहा है और जब भी कोई खतरे का सिग्नल दिखे तो ट्रेन को एस एल आर में उपलब्ध ब्रेक का उपयोग करके ब्राइवर और गार्ड के पास उपलब्ध वीएचएफ संचार का उपयोग करके, तुरंत रोक देना चाहिए।

यात्री ले जाने वाली ट्रेनों में रास्ते में डिब्बों की शंटिंग कर जोड़ने या अलग करने में शामिल कर्मचारियों को शंटिंग शुरू करने से पहले डिब्बों को पूरी तरह से रिलीज करना सुनिश्चित करना चाहिए ताकि डिब्बों में फ्लैट टायर की स्थिति उत्पन्न होने की किसी भी संभावना से बचा जा सके। उन स्टेशनों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, जहां नियमित रूप से अनुभागीय कोचों को जोड़ने या अलग करने का काम होता रहता है।

ब्रेक बाइंडिंग/फ्लैट टायर से बचने के लिए, शंटिंग स्टाफ को शंटिंग के बाद कोच और वैगन पूरी रिलीज है यह सुनिश्चित करनी होगी तथा उनको सलाह दी जानी चाहिए कि वे किसी भी परिस्थिति में उपरोक्त अनुमति से अधिक फ्लैटनेस लंबाई वाले वैगन/कोच को अनुमति न दें। ऐसे वैगनों/कोचों को सिक मार्क किए जाने के तुरंत बाद ट्रेन से अलग कर दिया जाना चाहिए। सी एंड डब्ल्यू डिपो और सिक लाइनों में सी एंड डब्ल्यू ट्रेन परीक्षा स्टाफ को टायर दोष गेज की मदद से गहन परीक्षण कर व्हील ट्रेड की सपाटता की जांच करनी चाहिए।

पावर/सी एण्ड डब्ल्यू नियंत्रक

फ्लैट टायर का पता चलने पर लोकोमोटिव/रोलिंग स्टॉक की लोको शेड स्टाफ एवं सीएण्डडब्ल्यू स्टाफ द्वारा जांच किए जाने के बाद वैगन और कोच के मामले में साइट पर और लोकोमोटिव के मामले में, निकटतम लोको शेड में पहिया बदलने की व्यवस्था करनी चाहिए और फ्लैट टायर के स्थिति अगर समुचित स्थान पर ले जाने के लिए मूवमेंट करना हो तो

सफलता हमेशा असफलता के स्तम्भ पर खड़ी होती है।

-नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

20 किलो मीटर प्रति घंटे की गति प्रतिबंध का पालन किया जाना चाहिए।

ट्रेन के चालक एवं गाड़ी प्रबंधक

ट्रेन लोको पायलट दल और शंटिंग स्टाफ को जब भी डीवी आइसोलेटिंग कॉक संचालित किया जाता है तो ब्रेक रिलीज के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। पहियों के स्किड होने से बचने के लिए खाली/लोड डिवाइस के लीवर को स्टॉक की खाली/लोड स्थिति के आधार पर खाली/लोड स्थिति में रखा जाना चाहिए, क्योंकि ऐसा न करने पर इसके परिणामस्वरूप गाड़ी चलने के दौरान फ्लैट टायर हो जाता है। लोको पायलट और गार्ड को ट्रेन चलते समय सावधान रहना चाहिए और हथौड़े के प्रहार जैसा आवाज का पता चलने पर अगले स्टेशन तक सेक्शन को किलयर करने के लिए 20 किलो मीटर प्रति घंटे की गति प्रतिबंध का पालन करना चाहिए, और अगले स्टेशन पर ट्रेन रोकनी चाहिए और खंड नियंत्रण को इस संबंध में सूचना देनी चाहिए। फ्लैट टायर को TXR स्टाफ या लोको शेड के स्टाफ द्वारा इसका जाँच करना चाहिए।

परिचालन स्टाफ और गेटमैन

स्टेशन के कर्मचारियों को गुजरती हुई ट्रेन में हथौड़े के प्रहार जैसा आवाज सुनाई देने पर उसका पता लगाने के काउंसिल किया जाना चाहिए। अगले स्टेशन को इसकी जानकारी दिया जाएगा और उन्हें वैगन/कोच की अनुमानित स्थिति के बारे में अवश्य सूचित करना चाहिए और अनुभाग नियंत्रक को भी ट्रेन को रोकने के लिए कहना चाहिए और इसका पता लगाने के लिए इसकी जांच करानी चाहिए। ड्राइवर, गार्ड और एसएम/कांटा वाला द्वारा ट्रेन का निरीक्षण किया जाना चाहिए और यदि संभव हो तो अगले टीएक्सआर/लोको परीक्षण स्टेशन तक 20 किलो मीटर प्रति घंटे की प्रतिबंधित गति के साथ गाड़ी रवाना करना चाहिए। सभी टीआई और संरक्षा सलाहकारों द्वारा एसएम, केबिनमैन और स्विचमैन आदि को सलाह देनी चाहिए कि वे गुजरती हुई ट्रेन में फ्लैट टायर के पता लगाने के लिए हथौड़े की आवाज पर सतर्कता ध्यान दें और बड़े पैमाने पर नुकसान होने से पहले उसे रोक दें। इसी प्रकार, गेटमैन को भी किसी गुजरती हुई ट्रेन में हथौड़े की आवाज का पता चलने पर सतर्क और सतर्क रहने की सलाह दी जानी चाहिए और ऐसा पता चलने पर गेटमैन द्वारा स्टेशन मास्टर को ट्रेन रोकने की सलाह देनी चाहिए। गेटमैन को ट्रेन के चालक दल को लाल झंडी/खतरे का संकेत भी दिखाना चाहिए ताकि ट्रेक को अधिक क्षति होने से पहले रोका जा सके।

अनुभाग नियंत्रक

अनुभाग नियंत्रक को स्टेशनों द्वारा सूचित फ्लैट टायर के सूचना को गंभीरता से लेना चाहिए और सीएंडडब्ल्यू/लोको स्टाफ द्वारा उचित जांच सुनिश्चित किए बिना ट्रेन को आगे की यात्रा के लिए चलाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। सूचना मिलने पर ट्रेन को अगले स्टेशन पर रोका जाना चाहिए और ट्रेक को अपरिहार्य क्षति नहीं होने देनी चाहिए। पूरी रिलीज है यह सुनिश्चित करनी होगी।

लोकोमोटिव और रोलिंग स्टॉक में फ्लैट टायर का पता लगाना:

फ्लैट टायर द्वारा ट्रेक को व्यापक क्षति पहुंचा सकता है और रेल फ्रैक्चर और वेल्ड फेल्यूर का कारण बनता सकता है और जिसके परिणामस्वरूप गंभीर दुर्घटनाएं हो सकती हैं। फ्लैट टायरों के कारण रेल फ्रैक्चर या वेल्ड फेल्यूर से बचने के लिए, कर्मचारियों को निम्नानुसार आवश्यक सावधानियां बरतने के लिए परामर्श दिया जाना चाहिए—

मैकेनिकल (सी एंड डब्ल्यू) स्टाफ —

रेलवे बोर्ड के दिशानिर्देशों के अनुसार, व्हील ट्रेड पर अनुमेय फ्लैट गुड्स स्टॉक के लिए 60 मिमी और कोचिंग स्टॉक/लोकोमोटिव के लिए 50 मिमी तक सीमित है। सभी सी एंड डब्ल्यू ट्रेन Examination स्टाफ को कोचिंग स्टॉक और माल स्टॉक के लिए नियमों और प्रावधान का पालन करने के लिए परामर्श दिया जाना चाहिए। टीएक्सआर स्टाफ को सलाह दी जानी चाहिए कि वे किसी भी परिस्थिति में उपरोक्त अनुमति से अधिक फ्लैटनेस लंबाई वाले वैगन/कोच को अनुमति न दें। ऐसे वैगनों/कोचों को सिक मार्क किए जाने के तुरंत बाद ट्रेन से अलग कर दिया जाना चाहिए। सी एंड डब्ल्यू डिपो और सिक लाइनों में सी एंड डब्ल्यू ट्रेन परीक्षा स्टाफ को टायर दोष गेज की मदद से गहन परीक्षण कर व्हील ट्रेड की सपाटता की जांच करनी चाहिए, साथ ही ब्रेक रिगिंग को ठीक रखना चाहिए।

इंजीनियरिंग स्टाफ और गेटमैन

कार्य स्थलों पर या ट्रॉली या फुट निरीक्षण करते समय इंजीनियरिंग कर्मचारियों और पर्यवेक्षकों को भी गुजरने वाली ट्रेनों में फ्लैट टायर का पता लगाने के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी जानी चाहिए। किसी भी गुजरती हुई ट्रेन में ऐसा कोई भी पता चलने पर, वैगन/कोच की अनुमानित स्थिति के बारे में तुरंत आपात कालीन नियंत्रण फोन के माध्यम से या निकटतम समपार फाटक से अगले स्टेशन को सूचित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार, गेटमैन को भी किसी गुजरती हुई

मैं एक ऐसा पागल हूँ, जो जेल में भी आजाद है।

-भगत सिंह

ट्रेन में हथौड़े की आवाज का पता चलने पर सतर्क और सतर्क रहने की सलाह दी जानी चाहिए और ऐसा पता चलने पर गेटमैन द्वारा स्टेशन मास्टर को ट्रेन रोकने की सलाह देनी चाहिए। गेटमैन को ट्रेन के चालक दल को लाल झंडी/खतरे का संकेत भी दिखाना चाहिए ताकि ट्रेक को अधिक क्षति होने से पहले रोका जा सके।

इंजीनियरिंग नियंत्रण

इंजीनियरिंग नियंत्रण को फ्लैट टायर वाली ट्रेन के गुजरने के बाद ट्रेक की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए फ्लैट टायर का पता लगाने के बिंदु से 50 किलोमीटर पीछे तक एक विशेष जांच करना चाहिए।

— संरक्षा सलाहकार (समाधि)
संरक्षा विभाग, पू०उ०रे०, लखनऊ

स्वच्छता का महत्व



संदीप कुमार जायसवाल

“स्वच्छता हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है, तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है।” स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है और स्वस्थ शरीर के लिए स्वस्थ वातावरण का होना बहुत जरूरी होता है। हमारा शरीर तभी स्वस्थ रह सकता है, जब हमारा वातावरण भी स्वच्छ हो और यह हमारा कर्तव्य है कि हमारा देश सदैव स्वच्छ रहे।

स्वच्छता बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह बात सच है कि हर बच्चे को अपने घर में स्वच्छता का पाठ पढ़ाया जाता है, पर हमें इसका पालन केवल घर तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। हमें आस-पास के पर्यावरण और देश के हित में भी स्वच्छता का उपयोग करना चाहिए।

इसी को ध्यान में रखते हुए आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की, जिसका मुख्य उद्देश्य देश में स्वच्छता को बढ़ाना और देश में विकास की गति को आगे बढ़ाना है। देश स्वच्छ रहेगा तो

बीमारियां कम फैलेंगी और लोग कम बीमार पड़ेंगे। जिससे बीमारियों में देश का कम पैसा खर्च होगा और देश के विकास की गति और बढ़ जाएगी। हमें बाहरी स्वच्छता के साथ-साथ आंतरिक स्वच्छता की भी आवश्यकता होती है। आंतरिक स्वच्छता का तात्पर्य हमारे आंतरिक विचारों की शुद्धि से है। हमें अपने विचारों को स्वच्छ रखना चाहिए तथा किसी के लिए मन में द्वेष नहीं रखना चाहिए।

जब कोई व्यक्ति बाहरी और आंतरिक सब तरीकों से स्वच्छ होगा, तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। क्योंकि हर कोई एक दूसरे का भला चाहेगा। इस प्रकार हमने स्वच्छता के सार्वभौमिक विकास के बारे में जाना और आशा करता हूं कि आप इसे अपने व्यवहार में जरूर लाएंगे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शब्दों में “स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह अपना लो, कि वह आपकी आदत बन जाए। स्वच्छता भक्ति के बाद दूसरी सबसे महत्वपूर्ण चीज है।”

— जूनियर इंजीनियर, टीआरडी / पीएसआई

पू०उ०रे० / शोहरतगढ़

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’ की जयंती का आयोजन - 07 मार्च, 2025



रेलवे पॉलीक्लीनिक, ऐशबाग में अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ० दीक्षा चौधरी की अध्यक्षता में आयोजित हिंदी के महान साहित्यकार ‘अज्ञेय’ जी की जयंती के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ० अमिता दूबे, प्रधान संपादक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

मेरा यह छोटा-सा संघर्ष ही कल के लिए महान बन जाएगा।

-चन्द्रशेखर आजाद

डाटालॉगर की उपयोगिता



सन्त राम

भारतीय रेलवे पर पहला डाटालॉगर आधारित एमआईएस फरवरी 2015 में चालू किया गया था और यह "24X7" आधार पर कार्य करता है। डेटा लॉगर आधारित एमआईएस (प्रबंधन सूचना प्रणाली) संबंधित विभागों के उपयोग के लिए निवारक, सुधारात्मक और पूर्वानुमानित रखरखाव के लिए कई सार रिपोर्ट तैयार करता है, जिससे संरक्षा बढ़ रही है। किसी स्टेशन पर वास्तविक समय के आधार पर घटनाओं को लॉग करने, महत्वपूर्ण विफलताओं के विश्लेषण की सुविधा के लिए, किसी भी असामान्य/खतरे में सिगनल पार्सिंग (SPAD)/दुर्घटना का ऑफ-लाइन सिमुलेशन द्वारा विश्लेषण करने, आरडीएसओ सूची के अनुसार विभिन्न अपवाद रिपोर्ट (Exception Report), एसएमएस और रिपोर्ट, पॉइंट रिवर्सल रिपोर्ट, आपातकालीन क्रॉसओवर परीक्षण रिपोर्ट आदि को सभी संबंधित विभागों द्वारा विश्लेषण के लिए दैनिक आधार पर तैयार करने के लिए, डेटा लॉगर की भूमिका काफी बढ़ गई है। रेलवे स्टेशनों पर असामान्य घटनाओं के विश्लेषण के लिए अत्यधिक सटीक और प्रामाणिक विश्लेषण की सुविधा प्राप्त होती है, यह दुर्घटना/ असामान्य जांच के लिए महत्वपूर्ण उपकरण है।

डाटालॉगर एक माइक्रोप्रोसेसर आधारित प्रणाली है, जो रिले इंटरलाकिंग प्रणाली/इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली की विफलताओं का विश्लेषण करने में मदद करता है। यह एक ब्लैक बॉक्स की तरह है, जो रिले स्टेटस व ए.सी./डी.सी. वोल्टेज परिवर्तन को तारीख तथा समय के साथ सभी

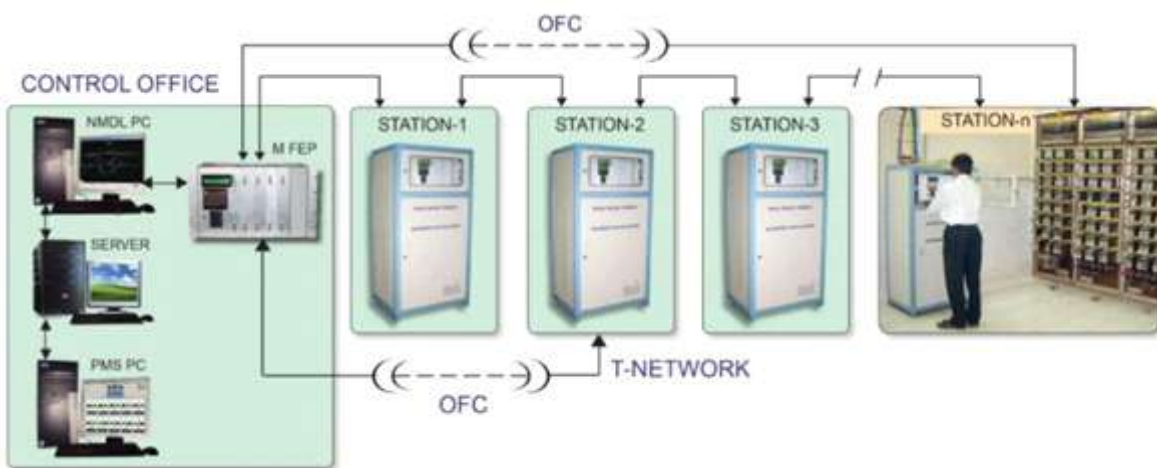
जानकारी को स्टोर करता है। इन सभी स्टोर जानकारी/डाटा को जांच ऑनलाइन/ऑफलाइन विश्लेषण एन.एम.डी.एल.सॉफ्टवेयर की मदद से होती है व जानकारी/डॉटा कंप्यूटर को ट्रांसफर करता है तथा डाटालॉगर से जुड़े प्रिंटर/एफएस सिस्टम द्वारा प्रिंट आउट प्राप्त किया जा सकता है।

डाटालॉगर स्टेशन/यार्ड में डाटालॉगर का उपयोग किया जाता है, जबकि ऑटो सेक्शन, आई.बी.एच. व इंटरलॉक्ड गेट में जिस मिनी डाटालॉगर को प्रयोग करते हैं, उसे आर.टी. यू.कहते हैं। डाटा जो रिले कांटैक्ट व ई.आई.बिट्स से सम्बंधित है उसे डिजिटल इनपुट तथा जो डाटा वोल्टेज ए.सी./डी.सी.से सम्बंधित है उसे एनालॉग इनपुट कहते हैं।

डाटालॉगर द्वारा डिजिटल इनपुट स्कैनिंग समय 16 मिली सेकंड व एनालाग इनपुट स्कैनिंग समय 1 मिली सेकंड है। डाटालॉगर की अधिकतम डिजिटल इनपुट-4096 व एनालाग इनपुट-96 की क्षमता होती है।

डाटालॉगर का टेक्निकल डेटा

- नार्मल वोकिंग वोल्टेज -24V, डी.सी.
- डाटा स्टोरेज कैपेसिटी-10लाख इवेंट आन FIFO Basis.
- रियल टाइम क्लॉक
- 512 एल.ई.डी.मैट्रिक्स युक्त सेवेन सेगमेंट एल.सी.डी. डिस्प्ले
- की-बोर्ड



आनन्द के समय जितना ही चुप रहा जाए, आनन्द उतना ही स्थायी होता है।

-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'



vi) सीरियल पोर्ट्स –16

vii) डिजिटल इनपुट कार्ड (इन बिल्ट)– 08

viii) 1 डिजिटल इनपुट –कार्ड –64इनपुट

ix) 1 डी.एस.यू.-08 डिजिटल इनपुट कार्ड

x) अधिकतम डी.एस.यू.-08

xi) अधिकतम ए.एस.यू –06

xii) 1 ए.एस.यू –02 एनालाग इनपुट कार्ड

xiii) 01 एनालाग इनपुट कार्ड–08 एनालाग इनपुट

डाटालॉगर नेटवर्किंग

डाटालॉगर की नेटवर्किंग फंक्शन व OFC मिडिया द्वारा की जाती है, डाटालॉगर नेटवर्किंग हार्डवेयर–

i) डाटालॉगर (स्टेशन पर)

ii) ड्यूल मॉडेम कार्ड

iii) फ्रंट एंड प्रोसेसर

iv) सी.एम.यू

v) सर्वर

डाटालॉगर की उपयोगिता

1. इंटरलॉक्ड स्टेशन या इंटरलॉक्ड खंड में क्या हो रहा है या क्या हुआ था, यह देखने के लिए डाटालॉगर में सिमुलेशन द्वारा देखा जा सकता है। ऑन लाइन सिमुलेशन द्वारा यार्ड में रियल

टाइम बेसिस के अनुसार क्या हो रहा है, विजुलाईज किया जा सकता है व ऑफ लाइन सिमुलेशन द्वारा यार्ड में एक विशेष समय में पूर्व में क्या हुआ था, विजुलाईज किया जा सकता है।

2. विभिन्न विभागों की अनेक प्रकार की डाटालॉगर रिपोर्ट प्राप्त की जा सकती है।

i) पॉइंट लूज पैकिंग

ii) लेट स्टार्ट ऑफ ट्रेन

iii) प्री-मेच्योर रिलीज ऑफ बटन

iv) लेट आपरेशन ऑफ होम सिगनल

v) लेट से इंटरलाक गेट का बंद होना

vi) पॉवर सप्लाय विफलता

vii) रिले रूम डोर ओपनिंग / क्लोजिंग

viii) पॉइंट नाट सेट अगेंस्ट अकुपाइड लाइन

ix) प्री-मेच्योर ऑपरेशन ऑफ ब्लॉक उपकरण इत्यादि।

3. सिगनल उपकरण फेलियर रिपोर्ट

4. एक्सेप्शन रिपोर्ट सम्बंधित विभाग द्वारा समय से करेक्टिव व प्रिवेंटिव एक्शन हेतु।

5. सिगनल पासिंग ऐट डेंजर

6. दुर्घटना / अनयूजवल कारण विश्लेषण

– संरक्षा सलाहकार / सिगनल

नर हो, न निराश करो मन को, कुछ काम करो, कुछ काम करो, जग में रहकर कुछ नाम करो।

-मैथिलीशरण गुप्त

परछाइयाँ



अर्चना दूबे

सुलेखा अभी भी कुर्सी पर बैठी छत को एकटक निहार रही थी। अरे कोने में ये मकड़ी के जाले कैसे दिख रहे हैं। अभी बुलाती हूँ इन्हें। ये यहां से तुरंत हटवाना है। वो तुरंत वहां से उठी और अपने पति समर्थ के कमरे की तरफ चल दी। समर्थ अपने कमरे में पैर फैलाए पेपर पढ़ रहे थे। सुलेखा ने कहा अरे सुनो ? बाहर वाले कमरे में मकड़ी ने जाले बना दिए हैं, उसे हटाना है। चलो ! समर्थ पेपर अपने सामने से हटा कर थोड़ा बगल में करके बोले अरे, कहां चलो ? अभी मैं कहीं नहीं जाऊंगा, तुम तो एक जाला देखी नहीं पड़ गई उसके पीछे, अरे यार कभी तो शांति से बैठा करो। अबकी सुलेखा भड़क गई। अरे क्या मतलब है तुम्हारा ? ऐसे ही वो जाला छोड़ दूँ मैं ? मैं ना रहूँ तो ये घर, घर नहीं रहेगा गंदगी का ढेर होगा। समर्थ अब तक पेपर मोड़ कर के रख चुका था, पता था उसे की वो नहीं मानने वाली थी अभी। जब तक वो सफाई ना करवा ले तब तक मुझे भी चैन नहीं लेने देगी।

अच्छा चलो, समर्थ ये सब सोचते हुए बोले। सुलेखा अबकी मुस्कुरा दी। फिर अपनी विजय पर मुस्कुराती हुई उसे सामने वाले कमरे की तरफ ले गई। वहां उसका 16 वर्षीय बेटा सुयश टीवी चला चुका था। पापा के हाथ में जाला साफ करने वाला देख कर तुरंत बोल उठा। अरे पापा नॉट अगेन ! पापा अभी मेरा बहुत अच्छा प्रोग्राम स्टार्ट होने वाला है, आप बाद में ये सब कर लीजिएगा। समर्थ अबकी सुलेखा की तरफ बड़े दयनीय स्थिति से निहारने लगे। सुलेखा तुरंत बोली अरे उसे बोलने दो, तुम साफ करो। वो देखो वो रहा जाला। सुलेखा की उंगली की तरफ समर्थ देखने लगा। सुयश अपनी बात की अवहेलना होते देख कर बड़बड़ाता हुआ वहां से चल दिया। इस घर में कोई भी चैन से टीवी तक नहीं देख सकता है। सुलेखा इशारे से समर्थ को बताती रही और समर्थ उसके आदेशों का पालन करता रहा।

क्या करता वो भी ? पिछले साल ऐसे ही एक कोने की सफाई करने को सुलेखा ने बोला था तो समर्थ ने बाद में करने को कह कर टाल दिया था। पर सुलेखा को धैर्य कहां ? वो प्लास्टिक की मेज पर चढ़ गई और सफाई करने लगी। तभी मेज लुढ़क गया और सुलेखा धड़ाम से नीचे गिर पड़ी। बहुत

चोट आई सुलेखा को। तभी से समर्थ अब इसकी सफाई की इस आदत को बहुत हल्के में नहीं लेता है। वो जब भी कहती वो कर ही देता था। इससे सुलेखा भी खुश और समर्थ भी आश्वस्त हो जाता की अब सुलेखा किसी ऊंचाई पर नहीं चढ़ेगी। सुरक्षित है वो। तो कुल मिला कर यही तीन लोगों का खुशहाल परिवार है सुलेखा का। क्या कहा आपने ? सुलेखा का परिवार ही क्यों ? ये परिवार समर्थ का भी कहा जा सकता था ? या भी सुयश का भी ? पर सुलेखा का परिवार इस लिए ज्यादा प्रासंगिक होगा, क्योंकि सुलेखा इस परिवार की जान है। सुलेखा से ही इस घर में जीवन स्पंदित होता है, तो चलिए कहानी अब आगे बढ़ाते हैं।

सुलेखा और समर्थ की शादी उनके माता पिता की पसंद से हुई थी। पर वो कहते हैं न, जोड़ियां असमान में बनती हैं और मिलाए जाते हैं इस धरती पर। तो सुलेखा और समर्थ जब से शादी के इस बंधन में बंधे थे तभी से सुलेखा को लगा जैसे उसने अपने जीवन में सब कुछ पा लिया हो। समर्थ बहुत ही सुलझे हुए इंसान थे। बिना कहे ही वो सुलेखा की मूक भाषा भी समझ जाते थे। सुलेखा सोचती थी कि कैसे लोग आपस में पति पत्नी लड़ाई करते हैं? वो तो आज तक नाराज भी नहीं हो पाई। समर्थ ने इसके लिए भी उसे एक मौका न दिया। खैर ! जिंदगी ऐसे ही आगे बढ़ने लगी और सुयश जैसा होनहार पुत्र को पा कर सुलेखा को अब अपने किस्मत से भी रश्क होने लगा।

सुलेखा हमेशा चहकती रहती है। इसको ऐसे भी कह सकते हैं कि सुलेखा की हंसी में ही इस घर की खुशियों की नदियां बहती हैं। समर्थ डिग्री कॉलेज में हिंदी के प्रोफेसर थे। वे अपने अध्ययन-अध्यापन में ही ज्यादातर समय बिताते थे। सुयश की पढ़ाई लिखाई हो या खुद समर्थ की भी देख भाल सुलेखा की ही जिम्मेदारी थी। कुल मिलकर सुलेखा इस घर की नींव भी थी और महल भी। सुलेखा की एक बात जो घर में सभी को खलती थी वो ये कि वो सफाई बहुत करती थी।

इस काम के लिए वो दिन और रात भी नहीं देखती थी। इसी तरह सुलेखा एक दिन समर्थ की अलमारी ठीक कर रही थी। उसने समर्थ को कई बार बोला कि वो अपनी अलमारी अच्छे से लगा ले पर समर्थ हर रोज कोई न कोई बहाना बना

आपका सपना सच हो, इसके लिए पहले आपको सपना देखना होगा।

-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

दिया करते थे। सुलेखा अलमारी की सबसे ऊपर वाली शेल्फ साफ कर रही थी कि उसे किनारे से कुछ लटकता हुआ दिखा, उसे खींचा तो वो ऊपर से धूल के साथ नीचे आने लगा।

ओह लगता है अलमारी के ऊपर से साफ करना होगा। वो सोच ही रही थी कि समर्थ से शाम को करा लूंगी। पर सुलेखा के पास धैर्य कहां? खुद से ही बोली जरा सा तो है। मैं ही साफ कर देती हूँ इसे।

यही सोचते हुए सुलेखा बेड को खिसका कर उस पर चढ़ गई और अलमारी के ऊपर रखी गई शीट नीचे की तरफ खींच ली। धड़ाम की आवाज हुई। सुलेखा एकदम से पीछे हट गई। चारों तरफ धूल ही धूल। सुलेखा ने साड़ी के पल्लू से अपना मुंह दबाया और नीचे देखने लगी। ये धड़ाम से क्या नीचे गिर गया? एक डायरी पड़ी थी नीचे। उसमें से कुछ कागज झांक रहे थे।

जिज्ञासा वश सुलेखा नीचे उतरी और डायरी अपने हाथों में उठा लिया। वो डायरी के पन्ने पलटने लगी। अरे ये तो इनकी (समर्थ की) लिखावट है! पर ये ऐसे यहां पर क्यों रखा गया है? माई लाइफ लाइन सुलेखा मुस्कुरा उठी। ये भी ना, लगता है इसे यहां इस लिए रखा होगा जिससे की सुयश के हाथ ना लगे। पर मुझे तो पढ़ा ही सकते थे न?

अजीब पति हैं मेरे, सुलेखा उल्लसित हो उठी और अपनी सफाई छोड़ कर बेड पर आराम से बैठ गई। ये सोचते हुए कि हम भी तो देखें कितने रोमांटिक है हमारे पतिदेव? डायरी के पहले ही पृष्ठ को खोला 'माई लाइफ लाइन' सुलेखा की कनपटी गरम होने लगी यही सोचते हुए कि जाने क्या समर्थ मेरे लिए लिखे होंगे? उसने अगला पन्ना पलटा, उस पर लिखा था तुम्हीं मेरा आधार हो और तुम्ही मेरा जीवन, तुमसे ही मैं सांसे लेता हूँ। मेरे हर पल की संगिनी मेरी अपनी।

सुलेखा ने इन लाइनों को अपने होंठों से लगा कर चूम लिया। वो अपने हाथों की उंगलियों से इन लाइनों को छूते हुए मन ही मन बोल उठी। समर्थ तुम ये बात मुझे सामने से बोलते तो कितना अच्छा लगता मुझे।

अगले ही पल खुद को जैसे आसमान से धरती पर उतारते हुए मन ही मन सोचने लगी। समर्थ जी देखे और क्या क्या लिखे हो मेरे लिए? सुलेखा ने आगे पन्ना किया, तो सुयश आ गया। मम्मी तुम फिर सफाई में जुट गईं?

सुलेखा हड़बड़ाते हुए डायरी अपने पीछे के पिलो के

नीचे करती हुई बोली। अब तू मुझे न बता मुझे क्या करना है? जा अपनी पढ़ाई कर। सुलेखा सुयश को डांट रही थी किंतु उसके चेहरे की खुशी सुयश से भी छिपी न रह सकी। वो अपनी मां को गुस्से में भी इतनी खुश पहली बार देख रहा था। तभी सुलेखा बोल उठी, अब जाता है कि? तभी सुयश बोला अच्छा ठीक है जाता हूँ। पर, तुम कहीं ऊंचाई पर चढ़ना नहीं। गिर गई तो मुझे पापा नहीं छोड़ेंगे। सुलेखा मुस्कुरा उठी। हां, जानती हूँ तुझे भी और तेरे पापा को भी। सुलेखा अब कोई भी डिस्टर्बेन्स नहीं चाहती थी तो वो बेड से उठी और भीतर से दरवाजा बंद कर लिया। अबकी सुलेखा आराम से लेट गई और डायरी का अगला पन्ना खोला। तभी कोई पुराना सा कागज उसमें से गिर गया। अच्छा तो चिट्ठी भी लिखी गई है मुझे। सुलेखा हंसते हुए वो फोल्ड किया हुआ पन्ना खोलने लगी। काश! तुम मुझे ये खुद पढ़ कर सुनाते, कितनी खुशी होती मुझे। चलो कोई बात नहीं मिस्टर समर्थ जी अभी ये पढ़ लूं। फिर, आपका भी हिसाब करती हूँ मैं। सुलेखा ने धड़कते दिल से वो पेज खोल कर पढ़ना शुरू किया। मेरी प्यारी मधु, ये क्या है? मेरी प्यारी मधु? ये मधु कौन है? सुलेखा ने आगे पढ़ना शुरू किया। मधु, तुमसे मैं क्या ही कहूँ? मैं तुम्हारे अलावा किसी और का नहीं हो सकता हूँ। पर मैं क्या करूँ? अपने माता पिता के आगे बेहद मजबूर हूँ। मधु मैं कही भी रहूंगा, तुम्हारे करीब न होते हुए भी तुम्हारे पास ही रहूंगा। तुम्हारी जगह कोई भी नहीं ले सकता है। सुलेखा का दिल घबराहट के मारे धाड़ धाड़ करके धड़कने लगा। सुलेखा पसीने से नहा गई। उसने हिम्मत करके आगे पढ़ने का प्रयास किया। मधु मेरी शादी तय हो गई है। मैं तो तुम्हारा गुनाहगार हो गया हूँ। तुमको मैं कुछ भी न दे पाया। पर आज एक वादा करता हूँ मैं। तुम हमेशा मेरे दिल में धड़कती रहोगी। सिर्फ तुम्हारा ही समर्थ.. सुलेखा अब तक उठ कर बैठ चुकी थी। वो जल्दी जल्दी डायरी के पन्ने पलटने लगी दिनांक 24.02.2014, आज मेरी शादी है मधु मैं ये सब यहां इस लिए लिख रहा हूँ, क्योंकि तुम मेरे दिल में धड़कती हो न। तो खुद ही लिख कर पढ़ लूंगा। लगता है जैसे तुमको ही सब कह दिया है। मेरा दिल ही जानता है कि कैसे मैंने इस शादी के लिए खुद को तैयार किया है? तुमने ही कहा था कि माँ पापा की खुशी पहले रखनी चाहिए हमें। तो लो तुम्हारी खातिर ये शादी भी कर लूंगा। सिर्फ तुम्हारे लिए, तुम्हारा ही। दिनांक 25.02.2014, यार मधु, मैं कैसे इस लड़की को अपना पाऊंगा? मैं तो सिर्फ तुमसे प्यार करता हूँ।

जो बात सिद्धांत में गलत है, वह बात व्यवहार में भी सही नहीं होती है।

-डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

फिर सुलेखा के आगे लिखे गए शब्द धुंधले होने लगे। सुलेखा की रुलाई फूट पड़ी अब, मगर उसने अपनी आँखें पोंछी और पन्ने पलटने लगी। दिनांक 26,27,28, 29, ऐसे कई पन्ने सुलेखा ने बिना पढ़े ही पलट डाले। ऐसे ही लास्ट पेज पर वो रुक गई। दिनांक 31.12.2014। आज मुझे तुम्हारी बेहद याद आ रही है। हैप्पी न्यू ईयर मेरी जान '

मैं पति की भूमिका निभाते निभाते थक गया हूँ। मैं क्या करूँ अब ? सुलेखा गर्भवती है वो बहुत अच्छी लड़की है मधु। पर हमारा ये सच कभी भी बर्दाश्त नहीं कर पाएगी। मेरे मन के मंदिर में आज भी सिर्फ तुम्हीं देवी रूप में विराजमान हो। डायरी खत्म हो गई। सुलेखा एक दम से खड़ी हो गई। वो समर्थ की अलमारी में न जाने क्या खोजने लगी। शायद खुद को ????????? सारे कपड़े नीचे गिराती हुई वो रोए जा रही थी। तभी अलमारी में बिछे हुए शीट के नीचे उसे कई पन्ने मिले। जिसे देख कर वो कांप गई। वो अब बहुत ही बेचारगी से पढ़ने लगी। मेरी प्यारी मधु, मेरे घर बेटे का जन्म हुआ है। याद है ? तुमने एक बार कहा था कि अगर हमारे बेटा हुआ तो हम उसका नाम सुयश रखेंगे। तो मैंने यही नाम रखा है। ये भले ही सुलेखा ने जन्म दिया है पर ये तुम्हारा ही सुयश है।

हमारा सुयश। अब सुलेखा का मन चीत्कार कर उठा। उसे चक्कर आ आने लगा। उसने फिर एक पेपर उठा लिया और फिर पढ़ने लगी मेरी मधु, हमारा सुयश 10 वर्ष का हो गया है। मुझे हमेशा तुम्हारी याद आती है। जब मैं उसे पुकारता हूँ तो लगता है तुम भी यहीं कही हो। मेरे आस पास ही। और जब सुलेखा को देखता हूँ तब मेरी तंद्रा भंग होती है। मुझे सुलेखा से कोई शिकायत नहीं है। जैसा कि तुमने कहा था कि मैं अपनी पति की जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाऊंगा। तो देखो निभाया मैंने पूरी ईमानदारी से। सुलेखा के हाथों से वो पेज छूट कर उड़ गया उसने एक पन्ना और उठा लिया। मेरी मधु, अपना सुयश 15 वर्ष का हो गया है, जानती हो ? पता नहीं क्यों? वो मुझे तुम्हारे जैसा दिखता है। मैंने सुना था कहीं कि जैसा आपके मन में होता है आपकी संतान की उत्पत्ति भी उसी प्रकार की हो जाती है। इसके हाव भाव इसकी प्रतिक्रियाएं मुझे सब तुम्हारी ही याद दिलाते हैं। मधु, मैं तुमसे आज एक बात कहना चाहता हूँ। सुलेखा मेरे बच्चे की मां है, पर मेरे दिल में उसके लिए सिवाय जिम्मेदारी

के एहसास के अलावा मुझे कुछ भी महसूस नहीं होता है। मैं आज तक शादी के बाद से तुमसे नहीं मिला। 17 साल से होने को है। पर आज भी तुम ही मेरे दिल में धड़कती हो। यहां तक कि मैं सुलेखा के करीब भी सिर्फ तुम्हें ही महसूस करता हूँ।

अब सुलेखा से पढ़ा नहीं गया। वो जोर जोर से रोने लगी। आवाज इतनी तेज थी कि उसका बेटा सुयश आ गया और बाहर से दरवाजा पीटने लगा। अरे, दरवाजा क्यों बंद की हो ? गिर गई क्या फिर से ? मम्मी दरवाजा खोलो प्लीज। उसने तुरंत पापा को फोन मिला दिया। कुछ ही देर में उसके पापा समर्थ भी आ गए। सुयश दरवाजा पीट रहा था। दरवाजा खोलो माँ। समर्थ भी घबरा गए। बोले कि लगता है चोट ज्यादा लग गई है। दरवाजा तोड़ देते हैं। जैसे ही समर्थ दरवाजा धक्का देने जा रहे थे तभी सितकनी खुलने की आवाज आई।

सुलेखा ने बहुत ही आग्नेय दृष्टि से समर्थ को देखा। समर्थ ने आज तक सुलेखा का ये रूप नहीं देखा था। वो सुलेखा के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला क्या हुआ सुलेखा ? कहां लगी दिखाओ ? सुलेखा पीछे हट गई। दीवार से जा लगी। उसने अपने बेटे सुयश की तरफ बहुत ही बेचारगी भरी आँखों से देखा और वो बुदबुदाने लगी ... "" तुम मेरे सुयश नहीं हो। तू मेरा बेटा नहीं है। तू मधु का बेटा है। सुयश मां कहता हुआ एक दम पास आ गया। बोला मां, ये सब क्या बोले जा रही हो। मधु का नाम सुनते ही समर्थ एक दम से चौंक गया। फिर तो शेष कहानी वो बिस्तर पर पड़ी डायरी और यहां वहां बिखरे पन्ने ने बयान कर दी। समर्थ मामले को समझता हुआ सुलेखा के कंधे को थामता हुआ बोला, सुनो मैं तुम्हें सब समझाता हूँ। सुलेखा चीख उठी, नहीं अब और नहीं !!!!!!!

मैं मधु नहीं हूँ समर्थ। मैं सुलेखा हूँ। मैं अभी तक मधु बन कर जीती रही तुम्हारे जीवन में और मुझे पता तक नहीं चलने दिया ? मेरे जीवन के इतने सारे वर्ष ????? समर्थ सहम गया। सुलेखा ने बहुत ही खिन्नता से समर्थ को देखा फिर जोर-जोर से हंसने लगी और अचेत हो कर जमीन पर ही गिर पड़ी।

— कार्यालय अधीक्षक
विद्युत (टीआरडी) विभाग
पू०उ०रे०/लखनऊ

बड़ा भया तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूरा
पंक्षी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।

-संत कबीर दास

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) भारत में : उद्योगों और अर्थव्यवस्थाओं को बदलने वाली वैश्विक शक्ति



आकांक्षा सिंह

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) अब कोई दूर का भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान की वास्तविकता है, जो उद्योगों को नया रूप दे रही है और वैश्विक स्तर पर आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा दे रही है। भारत, अपने तेजी से विकसित हो रहे तकनीकी इकोसिस्टम के साथ, इस तकनीकी क्रांति के केंद्र में है और एआई अपनाने में वैश्विक नेता के रूप में उभर रहा है। स्वास्थ्य सेवा से लेकर विनिर्माण तक, एआई पारंपरिक व्यावसायिक मॉडल में क्रांति ला रहा है, नई संभावनाओं को उजागर कर रहा है और भारत को वैश्विक एआई परिदृश्य में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर रहा है। 2024 में, भारत एआई अनुप्रयोगों के लिए दुनिया का सबसे बड़ा बाजार बन गया, जिसने 2.2 बिलियन वैश्विक एआई ऐप डाउनलोड में से 21% का योगदान दिया। भारत का एआई अपनाने का स्तर वैश्विक साधियों से आगे है, जिसमें 60% आईटी पेशेवरों ने अपनी संस्थाओं में एआई का सक्रिय रूप से उपयोग करने की रिपोर्ट दी है — जो अन्य देशों की तुलना में काफी अधिक है। इस वृद्धि के प्रमुख कारणों में एआई टूल्स की बढ़ती सुलभता, लागत-कुशलता की आवश्यकता और विभिन्न क्षेत्रों में व्यवसायों द्वारा सामना की जाने वाली प्रतिस्पर्धात्मक दबाव शामिल हैं। सरकार की सक्रिय पहल, जैसे कि राष्ट्रीय एआई रणनीति और भारत एआई मिशन, एआई को अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

भारत में लोकप्रिय एआई अनुप्रयोग

भारत में एआई-संचालित समाधानों को अपनाने से विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादकता और उपभोक्ता अनुभवों को बढ़ाया जा रहा है।

ChatGPT: OpenAI द्वारा विकसित यह संवादी एआई मॉडल भारत में अत्यधिक लोकप्रिय हो गया है। यह उपयोगकर्ताओं को ईमेल ड्राफ्ट करने, कोड लिखने, प्रश्नों के उत्तर देने और यहां तक कि विपणन के लिए सामग्री बनाने में सहायता करता है।



DeepSeek: चीनी एआई स्टार्टअप DeepSeek द्वारा विकसित यह उन्नत



संवादी एआई मॉडल ChatGPT का एक मजबूत प्रतिस्पर्धी बनकर उभरा है। Mixture of Experts (MoE) आर्किटेक्चर के साथ डिजाइन किया गया, DeepSeek कोड अनुकूलन, गणितीय तर्क और डेटा विश्लेषण जैसे तकनीकी कार्यों में विशेषज्ञता रखता है। यह भारत में वित्त, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में कार्यप्रवाह को सुव्यवस्थित करने के लिए व्यापक रूप से अपनाया गया है।

Microsoft Copilot: Microsoft के उत्पादों में एकीकृत Copilot एआई का उपयोग करके वास्तविक समय में कोड सुझाव प्रदान करता है, जिससे कोड की गुणवत्ता में सुधार होता है और डेवलपर उत्पादकता 37% तक बढ़ जाती है।



Google Gemini: Google की एआई पहल, Gemini, प्राकृतिक भाषा समझ को बढ़ाती है, जिससे Google खोज, सहायक और अनुवाद जैसे उत्पादों के साथ इंटरैक्शन अधिक सहज और संदर्भ-सचेत हो जाता है। इसने भारतीय उपयोगकर्ताओं के लिए एआई को अधिक सुलभ बना दिया है, जिससे खोज कार्यक्षमता और उपयोगकर्ता अनुभव में सुधार हुआ है।



Remini & Photoroom: एआई-संचालित छवि संपादक जैसे कि Remini और Photoroom भारत में डिजिटल सामग्री निर्माताओं के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। ये अनुप्रयोग उपयोगकर्ताओं को पुरानी तस्वीरों को पुनर्स्थापित करने, कम-रिजॉल्यूशन वाली छवियों को बढ़ाने और सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स और विपणन उद्देश्यों के लिए फोटो को अनुकूलित करने की अनुमति देते हैं।



भारत के लिए आर्थिक प्रभाव और बाजार वृद्धि

एआई अनुप्रयोगों के प्रसार के वैश्विक और भारतीय अर्थव्यवस्थाओं पर महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव हैं। 2024 के अंत तक वैश्विक एआई ऐप बाजार के 9.3.3 बिलियन तक पहुंचने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 51% की वृद्धि दर्शाता है, जबकि भारत एआई ऐप अपनाने में अग्रणी है। इन-ऐप खरीदारी से उत्पन्न राजस्व अभी भी मुख्य रूप से

शिक्षा ही वह साधन है, जो व्यक्ति और समाज दोनों को उन्नति के पथ पर ले जाती है।

-मदन मोहन मालवीय

उत्तरी अमेरिका और यूरोप द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जो वैश्विक बाजार राजस्व का लगभग 68% योगदान देते हैं।

भारत का एआई उद्योग तेजी से वृद्धि के लिए तैयार है, जिसमें एआई अनुसंधान में बढ़ते निवेश, एआई-संचालित स्टार्टअप्स का उदय और सरकारी पहलों का समर्थन शामिल है। भारत एआई मिशन, ₹ 10,000 करोड़ से अधिक के निवेश के साथ, भारत की एआई क्षमताओं को बढ़ाने, इसकी कंप्यूटिंग अवसंरचना का विस्तार करने और एआई अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है।

भारत में AI-चालित परिवर्तन विशेष रूप से प्रमुख क्षेत्रों में उल्लेखनीय है :

भारत एक बड़े AI-चालित परिवर्तन से गुजर रहा है, जो उद्योगों को पुनः आकार दे रहा है और आर्थिक विकास को गति दे रहा है। स्वास्थ्य सेवा से लेकर परिवहन तक, AI रोजमर्रा की प्रक्रियाओं को और अधिक स्मार्ट, तेज और कुशल बना रहा है। आइए देखें कि AI विभिन्न क्षेत्रों को कैसे प्रभावित कर रहा है।

स्वास्थ्य सेवा: स्मार्ट डायग्नोसिस और बेहतर उपचार – AI डॉक्टरों के लिए बीमारियों का निदान और उपचार करने के तरीके को बदल रहा है। Qure-ai और Niramai जैसे उपकरण कैंसर और फेफड़ों की बीमारियों जैसी स्थितियों का शीघ्र पता लगाने में मदद करते हैं, जिससे उपचार अधिक प्रभावी हो जाता है। AI का स्वास्थ्य सेवा में योगदान तेजी से बढ़ रहा है, और AI डायग्नोस्टिक्स का बाजार 2022 में ₹ 1.64 बिलियन से बढ़कर 2030 तक ₹ 19.92 बिलियन होने की उम्मीद है।

कृषि: किसानों को बेहतर निर्णय लेने में मदद – किसान अब AI-संचालित उपकरणों का उपयोग करके अपनी फसल की पैदावार में सुधार कर रहे हैं। सैटेलाइट इमेजरी और ड्रोन की मदद से, AI मिट्टी की स्थिति का विश्लेषण कर सर्वोत्तम खेती प्रथाओं का सुझाव देता है। स्वचालित सिंचाई प्रणाली फसलों को सही मात्रा में पानी सुनिश्चित करती हैं, जिससे पानी की बर्बादी कम होती है। AI पौधों की बीमारियों का शीघ्र पता लगाने में भी मदद करता है, जिससे किसान तेजी से कार्रवाई कर सकते हैं और फसल हानि को रोक सकते हैं।

शिक्षा और कौशल विकास: सभी के लिए व्यक्तिगत शिक्षा – AI शिक्षा को क्रांतिकारी बना रहा है, जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक व्यक्तिगत हो रही है। Byju*s और Unacademy जैसे प्लेटफॉर्म AI का उपयोग करके छात्रों की प्रगति के आधार पर पाठों को अनुकूलित करते हैं, जिससे वे अपनी गति से सीख सकते हैं। AI ट्यूटर और चैटबॉट छात्रों

के सवालों के त्वरित उत्तर प्रदान करते हैं, जिससे शिक्षा 24/7 उपलब्ध होती है।

वित्त और बैंकिंग: तेज और सुरक्षित लेन-देन – AI बैंकिंग को अधिक सुरक्षित और कुशल बना रहा है। यह असामान्य लेन-देन की पहचान कर धोखाधड़ी का पता लगाने में मदद करता है। AI-संचालित क्रेडिट स्कोरिंग सिस्टम बैंकों को ऋण तेजी से स्वीकृत करने में मदद करता है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जिनका पारंपरिक क्रेडिट इतिहास नहीं है। चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट ग्राहक सेवा में सुधार कर रहे हैं, तुरंत प्रश्नों का उत्तर देकर और लेन-देन में सहायता करके।

खुदरा और ई-कॉमर्स: व्यक्तिगत शॉपिंग अनुभव – AI ऑनलाइन खरीदारी को अधिक स्मार्ट बना रहा है। जब आप किसी ई-कॉमर्स वेबसाइट पर ब्राउज करते हैं, तो AI आपकी पसंद का विश्लेषण करता है और उन उत्पादों का सुझाव देता है जो आपको पसंद आ सकते हैं। यह व्यवसायों को इन्वेंट्री को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने में भी मदद करता है, जिससे लोकप्रिय वस्तुएं हमेशा स्टॉक में रहती हैं।

निर्माण और इंडस्ट्री 4.0: स्मार्ट फैक्ट्री – AI की मदद से कारखाने अधिक कुशल हो रहे हैं। भविष्यवाणी आधारित रखरखाव उपकरण निर्माताओं को संभावित मशीन विफलताओं के बारे में पहले ही सतर्क कर देते हैं, जिससे महंगे ब्रेकडाउन को रोका जा सकता है। निर्माण क्षेत्र में, 2024 तक AI 69% दोहराए जाने वाले कार्यों को प्रतिस्थापित करने के लिए तैयार है, जिससे परिचालन दक्षता में सुधार होगा और मानवीय त्रुटियों में कमी आएगी।

स्मार्ट सिटी और प्रशासन: शहरों को अधिक कुशल बनाना – AI ट्रैफिक प्रबंधन, सार्वजनिक सुरक्षा को अधिक प्रभावी बनाने और प्रशासन में सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम AI का उपयोग कर सिग्नल टाइमिंग को नियंत्रित करते हैं, जिससे जाम कम होता है।

परिवहन और लॉजिस्टिक्स: तेज और स्मार्ट डिलीवरी – AI परिवहन और लॉजिस्टिक्स को अनुकूलित कर रहा है, जिससे डिलीवरी तेज और अधिक कुशल हो रही है। AI-संचालित रूट ऑप्टिमाइजेशन यह सुनिश्चित करता है कि डिलीवरी वाहन सबसे तेज मार्ग अपनाएं, जिससे ईंधन की खपत कम हो।

ऊर्जा और स्थिरता: AI के साथ हरित भविष्य – AI भारत को अपनी ऊर्जा संसाधनों को अधिक कुशलता से प्रबंधित करने में मदद कर रहा है। AI-संचालित स्मार्ट ग्रिड बिजली वितरण को अनुकूलित कर रहे हैं, जिससे ऊर्जा की

वे लोग ही विचार में निर्भीक हुआ करते हैं, जिन लोगों के अन्दर आचरण की दृढ़ता होती है।

-हजारी प्रसाद द्विवेदी

बर्बादी कम होती है। AI सौर और पवन ऊर्जा की उपलब्धता की भविष्यवाणी करने में भी मदद करता है, जिससे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत अधिक विश्वसनीय बन रहे हैं।

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के विकास के रुझान और चुनौतियाँ

महत्वपूर्ण रुझान

बहुभाषी ए.आई. मॉडल: 17 से अधिक भारतीय भाषाओं पर आधारित LLMs (Large Language Models) विकसित किए जा रहे हैं, जिससे भारत की विविध जनसंख्या के लिए ए.आई. अधिक सुलभ हो रहा है।

निवेश और नवाचार: प्रारंभिक चरण के निवेश में मजबूती बनी हुई है, जहां 54% स्टार्टअप्स को सीड राउंड में फंडिंग मिल रही है।

क्षेत्रीय केंद्र: बंगलुरु जनरेटिव ए.आई. स्टार्टअप्स का एक प्रमुख केंद्र बना हुआ है, जहां 43% स्टार्टअप्स स्थित हैं, जबकि अहमदाबाद और लखनऊ जैसे उभरते शहर भी ए.आई. स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण स्थान बना रहे हैं।

विकास के बावजूद चुनौतियाँ: जनरेटिव ए.आई. स्टार्टअप्स का विकास उत्साहजनक है, लेकिन 75% स्टार्टअप्स की वार्षिक आय 100,000 डॉलर से कम है, जो मुद्रीकरण और स्केलिंग से संबंधित चुनौतियों को रेखांकित करता है।

ए.आई. पारिस्थितिकी तंत्र में चुनौतियाँ

भारत में ए.आई. के अपनाने और नवाचार में प्रभावशाली वृद्धि के बावजूद, कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं जिन्हें संबोधित करना आवश्यक है ताकि इसकी गति बनी रहे:

कौशल की कमी: भारत में ए.आई. पेशेवरों की 50% कमी है, हालांकि यह दुनिया में ए.आई. प्रतिभा का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है। इस कौशल अंतर को भरना भारत के विकास और नवाचार को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

निवेश की सीमाएँ: जबकि प्रारंभिक चरण में निवेश मजबूत है, लेट-स्टेज निवेश की कमी के कारण कई ए.आई. वेंचर्स के स्केलिंग में बाधा आ रही है। इसके अलावा, 68% राजस्व इन-ऐप खरीदारी से उत्तर अमेरिका और यूरोप में केंद्रित है, जो भारतीय स्टार्टअप्स के लिए अपनी नवाचारों को मुद्रीकरण करने में चुनौतीपूर्ण है।

नैतिक और नियामक चुनौतियाँ: ए.आई. का तेज विकास गोपनीयता, सुरक्षा और पक्षपाती (bias) होने की

चिंताओं को जन्म देता है। केवल 36% भारतीय कंपनियाँ ए.आई. के पक्षपाती को कम करने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रही हैं, जो स्पष्ट नियामक दिशानिर्देशों और नैतिक मार्गदर्शन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

रणनीतिक पहलों और भविष्य की दृष्टि

इन चुनौतियों को पार करने के लिए, भारत कुछ रणनीतिक पहलों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है:

भारत ए.आई. मिशन: ₹10,000 करोड़ से अधिक का निवेश करने वाला भारत ए.आई. मिशन, कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने, अनुसंधान एवं विकास (R&D) का समर्थन करने और प्रतिभा विकास को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है। ये प्रयास भारत को एक वैश्विक ए.आई. शक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए डिजाइन किए गए हैं।

सहयोगात्मक ढाँचे: आईआईटी जैसे अकादमिक संस्थानों और माइक्रोसॉफ्ट, एनवीआईडीआईए, और आईबीएम जैसे उद्योग दिग्गजों के बीच साझेदारियाँ ए.आई. अनुसंधान को आगे बढ़ाने और अत्याधुनिक समाधान विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

वैश्विक विस्तार: किज्जन ए.आई. (कृषि) और डबवर्स (बहुभाषी डबिंग) जैसे स्टार्टअप्स अंतरराष्ट्रीय बाजारों को लक्षित कर रहे हैं, जिससे भारत का प्रभाव वैश्विक ए.आई. अनुप्रयोगों में बढ़ रहा है।

निष्कर्ष

भारत में ए.आई. के तेजी से बढ़ते उपयोग को इस देश की तकनीकी क्षमताओं, नवाचार-प्रेरित मानसिकता और रणनीतिक नीति-निर्माण का प्रमाण माना जा सकता है। जैसे-जैसे ए.आई. उद्योगों को बदल रहा है और आर्थिक वृद्धि को प्रेरित कर रहा है, भारत इस क्षेत्र में वैश्विक नेता बनने की दिशा में अग्रसर है। यदि भारत कौशल की कमी, निवेश की सीमाएँ और नैतिक चिंताओं जैसी चुनौतियों को दूर करने में सक्षम होता है, तो यह ए.आई. के पूर्ण संभावनाओं का उपयोग करके निरंतर आर्थिक वृद्धि और सामाजिक विकास प्राप्त कर सकता है। निवेश, अनुसंधान और सहयोग में अपनी प्रतिबद्धता के साथ, भारत वैश्विक ए.आई. क्रांति में एक प्रमुख भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

— आईटी इंजीनियर
रेलटेल कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

विचारों के युद्ध में पुस्तक ही अस्त्र हैं।

-जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

स्वच्छ रेल, स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत 'स्वच्छता ही सेवा' थीम पर स्वच्छता पखवाड़ा - 2024 के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

तत्कालीन मंडल रेल प्रबन्धक श्री आदित्य कुमार के मार्गदर्शन में 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2024 तक 'स्वच्छता ही सेवा' थीम पर 'स्वच्छता पखवाड़ा-2024' मनाया गया। लखनऊ मंडल में दिनांक 01.10.2024 को 'स्वच्छता शपथ एवं स्वच्छ जागरूकता दिवस' के अवसर पर श्री सतीश कुमार, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली ने



वर्चुअल माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय रेल में रेलकर्मियों को स्वच्छता की शपथ दिलायी तथा इसके अंतर्गत मण्डल के सभी स्टेशनों यथा गोरखपुर जं०, लखनऊ जं०, ऐशबाग बस्ती,



गोण्डा जं०, बादशाहनगर, सीतापुर, मैलानी आदि एवं अनुरक्षण कोचिंग डिपो ऐशबाग, गोरखपुर, रेलवे चिकित्सालयों, स्वास्थ्य इकाईयों तथा रेलवे कालोनियों में गहन साफ-सफाई हेतु श्रमदान किया गया।

02 अक्टूबर, 2024 को 'महात्मा गाँधी जयन्ती एवं स्वच्छ भारत दिवस' के अवसर पर तत्कालीन मण्डल रेल प्रबन्धक श्री आदित्य कुमार, तत्कालीन अपर मण्डल रेल प्रबन्धक (परिचालन) श्री विक्रम कुमार, तत्कालीन अपर मण्डल रेल

प्रबन्धक (इंफ्रा) श्री राजीव कुमार, मुख्य परियोजना प्रबन्धक/गतिशक्ति श्री राघवेन्द्र कुमार तथा शाखाधिकारियों ने महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण किया तथा रेल अधिकारियों, कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति सजग रहने एवं उसके लिये प्रत्येक वर्ष 100 घंटे यानि हर सप्ताह दो घंटे श्रमदान कर स्वच्छता का संकल्प दिलाया एवं रेलवे कर्मचारियों, गैर सरकारी संगठनों, यूनियन/एसोसिएशनों तथा स्काउट गाइड्स की सहभागिता में अधिकारियों व कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति सजग रहने एवं स्वच्छता हेतु श्रमदान की शपथ दिलाई। उन्होंने महात्मा गाँधी की जयन्ती पर सभी को बधाई दी। उन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के



योगदान को याद करते हुए उपस्थित जनों को गाँधी जी के विचारों, जीवन शैली तथा अनुशासन को अपने दैनिक आचरण में आत्मसात् करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि रेल परिसर में स्वच्छता बनाये रखने के साथ ही हमें अपने विचारों और कार्यशैली में भी स्वच्छता बनाये रखनी होगी। स्टेशन परिसर एवं ट्रेनों में स्वच्छता बनाये रखने का दायित्व



मित्र वह है, जिसके शत्रु वही हैं जो आपके शत्रु हैं।

-अब्राहम लिंकन

रेलकर्मियों के साथ ही रेल उपयोगकर्ताओं का भी है। हमें अपने आसपास के परिवेश को सदैव स्वच्छ रखना होगा।

इस अवसर पर उन्होंने स्काउट एवं गाइड्स के बच्चों द्वारा स्वच्छता जागरूकता पर आधारित 'नुकड़ नाटक', लखनऊ जं० स्टेशन पर लगाई गयी 'स्वच्छता प्रदर्शनी', मण्डल कलाकारों द्वारा 'रामधुन' एवं स्वच्छता संबंधी सांस्कृतिक गीतों की प्रस्तुति का अवलोकन किया तथा प्रशंसा की। इसके पश्चात उन्होंने लखनऊ जं० स्टेशन पर स्थित उद्यान वाटिका में 'एक पेड़ माँ के नाम' के अन्तर्गत रेलवे अधिकारियों के साथ पौधारोपण किया तथा स्वच्छता जागरूकता हेतु स्टेशन पर श्रमदान भी किया। उन्होंने ऐशबाग जं० रेलवे स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में स्वच्छता अभियान में योगदान करने वाले रेलकर्मियों को उत्साहवर्धन किया तथा उन्हें 'स्वच्छता शील्ड' के साथ साथ उपहार भी प्रदान किया।

दिनांक 03.10.2024 को गोरखपुर जं०, लखनऊ जं०, बस्ती, गोण्डा जं०, खलीलाबाद, लखीमपुर, मैलानी तथा ऐशबाग जं० आदि स्टेशनों पर गहन साफ-सफाई हेतु 'स्वच्छ स्टेशन दिवस' का आयोजन किया गया।



इस दौरान रेलवे अधिकारी, पर्यवेक्षक एवं कर्मचारियों ने साथ में स्वच्छता की शपथ ली तथा उक्त रेलवे स्टेशनों पर सरकुलेटिंग एरिया, प्लेटफार्म, रेलवे ट्रैक, प्रतीक्षालय, फुटओवर ब्रिज, वाहन पार्किंग आदि स्थानों पर 'डस्टबिन भरे, डस्टबिन दान करें' थीम के तहत स्टेशन परिसर में गहन साफ-सफाई हेतु सघन स्वच्छता अभियान चलाया गया। स्वच्छता से संबंधित उपकरणों एवं संयंत्रों की उपलब्धता एवं



उनकी क्रियाशीलता, स्वच्छता संयंत्रों एवं औजारों के उचित रखरखाव तथा कूड़े एवं कचरे का वर्गीकरण के आधार पर संग्रह एवं निस्तारण किया गया। स्टेशनों के प्लेटफार्मों पर उपलब्ध शौचालयों, पेयजल बूथों तथा यात्रियों के बैठने हेतु बेंचों की सफाई एवं डस्टबिन की उपलब्धता सुनिश्चित की गयी।



इसी क्रम में लखनऊ जं० स्टेशन पर यात्रियों को स्वच्छता शपथ दिलाई गई, 'डस्टबिन भरे, डस्टबिन दान करें' थीम के तहत स्टेशन परिसर में यात्रियों को स्टेशनों पर लगे हुए डस्टबिन का उपयोग करें, गीला कचरा हरा डस्टबिन में डालें एवं सूखा कचरा नीला डस्टबिन में डालें, इधर-उधर ना थूके, पीक दान का प्रयोग करें तथा 'सिंगल यूज प्लास्टिक' के उपयोग को बंद करें एवं कपड़े से बने थैलों का उपयोग करें के बारे में बताया गया। स्टेशन परिसर में यात्रियों से संवाद स्थापित करते हुए जागरूकता रैली निकाल कर स्वच्छता के प्रति जागरूक भी किया।

04 अक्टूबर, 2024 को मण्डल के सभी छोटे-बड़े स्टेशनों पर गहन साफ-सफाई हेतु 'स्वच्छ स्टेशन दिवस' का आयोजन किया गया। इस दौरान रेलवे अधिकारी, पर्यवेक्षक एवं कर्मचारियों ने साथ में स्वच्छता की शपथ ली तथा उक्त रेलवे स्टेशनों पर सरकुलेटिंग एरिया, प्लेटफार्म, रेलवे ट्रैक, प्रतीक्षालय, फुटओवर ब्रिज, वाहन पार्किंग तथा स्टेशन परिसर में गहन साफ-सफाई हेतु सघन स्वच्छता अभियान चलाया गया। स्वच्छता से संबंधित उपकरणों एवं संयंत्रों की उपलब्धता एवं उनकी क्रियाशीलता, स्वच्छता संयंत्रों एवं



किताबों में इतना खजाना छुपा है, जितना कोई लुटेरा कभी लूट नहीं सकता।

- वाल्ट डिजनी



औजारों के उचित रखरखाव तथा कूड़े एवं कचरे का वर्गीकरण के आधार पर संग्रह एवं निस्तारण किया गया।

दिनांक 05 अक्टूबर, 2024 को मण्डल के सभी छोटे-बड़े स्टेशनों पर गहन साफ-सफाई हेतु 'स्वच्छ रेलगाड़ी दिवस' का आयोजन किया गया, जिसमें मण्डल पर संचलन के दौरान ओ.बी.एच.एस. ट्रेनों में वृहद स्वच्छता अभियान चलाया गया।

गाड़ी संख्या 12530, 12532, 12531, 12556, 12591, 22538, 15069, 15007, 15008, 12571, 12572 तथा 15068 के वातानुकूलित, शयनयान एवं सामान्य श्रेणी के कोचों की सफाई, शौचालयों में डस्टबिन की उपलब्धता,



बेड रोल की गुणवत्ता आदि की रेलवे अधिकारियों व सुपरावाइजर्स द्वारा सघन जाँच की गई। जाँच के दौरान पैंट्रीकारों एवं वाशिंग पिट पर खड़ी ट्रेनों की साफ-सफाई का जायजा लिया गया। इस दौरान चलती ट्रेनों एवं स्टेशनों पर रेलयात्रियों से फीडबैक फार्म पर ओबीएचएस स्टाफ द्वारा सफाई संबंधी प्रतिक्रिया व सुझाव प्राप्त कर उन पर तत्काल कार्यवाही करते हुए शिकायतों का निराकरण किया गया। यात्रियों को बायो-टॉयलेट

के समुचित उपयोग को लेकर भी जागरूक किया गया।

दिनांक 06.10.2024 को भी मण्डल के सभी छोटे-बड़े स्टेशनों पर गहन साफ-सफाई हेतु 'स्वच्छ रेलगाड़ी दिवस' का आयोजन किया गया, जिसमें मण्डल पर संचलन के दौरान ओ.बी.एच.एस. ट्रेनों में वृहद स्वच्छता अभियान चलाया गया। गाड़ी संख्या 12530, 12532, 12531, 12556, 12591, 22538, 15069, 15007, 15008, 12571, 12572 तथा 15068 के वातानुकूलित, शयनयान एवं सामान्य श्रेणी के कोचों की सफाई, शौचालयों में डस्टबिन की उपलब्धता, बेड रोल की गुणवत्ता आदि की रेलवे अधिकारियों व सुपरावाइजर्स द्वारा सघन जाँच की गई।



जाँच के दौरान पैंट्रीकारों एवं वाशिंग पिट पर खड़ी ट्रेनों की साफ-सफाई का जायजा लिया गया। इस दौरान चलती ट्रेनों एवं स्टेशनों पर रेलयात्रियों से फीडबैक फार्म पर ओबीएचएस स्टाफ द्वारा सफाई संबंधी प्रतिक्रिया व सुझाव प्राप्त कर उन पर तत्काल कार्यवाही करते हुए शिकायतों का निराकरण किया गया। यात्रियों को बायो-टॉयलेट के समुचित उपयोग को लेकर भी जागरूक किया गया।

दिनांक 07 अक्टूबर, 2024 को

मण्डल के विभिन्न रेल सेक्शनों यथा लखनऊ जं०-ऐशबाग हट, ऐशबाग-बक्शी का तालाब, गोण्डा जं०-गोण्डा कचहरी, गोरखपुर जं०-गोरखपुर कैंट, बादशाहनगर-गोमती नगर, बस्ती-खलीलाबाद एवं मैलानी जं०-सीतापुर जं० के मध्य 'स्वच्छ रेलपथ दिवस' मनाया गया।



जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया, उसने ईश्वर को ही मूर्तिमान कर लिया।

-बालगंगाधर तिलक



इन सभी रेल खण्डों पर मण्डल के स्वास्थ्य निरीक्षकों की टीम द्वारा स्टेशनों के यार्ड तथा आस-पास के क्षेत्रों में स्थित कचरा हटाने के अलावा अवांछित झाड़ियों/घास को भी साफ करने हेतु व्यापक स्तर पर स्वच्छता अभियान चलाया गया तथा ब्लाक सेक्शनों में मौजूद नालियों की गहन सफाई सुनिश्चित की गयी। उक्त रेल

सेक्शनों को "शून्य अपशिष्ट" हेतु आम जनमानस में सफाई संबंधी जागरूकता के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से स्टेशनों, रेलवे परिसरों में गंदगी फैलने से होने वाले नुकसान को यात्री जनों एवं आम जनमानस तक संदेश पहुँचाया गया।

08 अक्टूबर, 2024 को लखनऊ जं०, बादशाहनगर, ऐशबाग जं० गोंडा जं०, मैलानी जं०, बस्ती, गोरखपुर जं०, मनकापुर जं०, खलीलाबाद आदि स्टेशनों पर स्वच्छता अभियान



चलाकर (स्वच्छ कार्यालय एवं स्वच्छ कालोनी) 'स्वच्छ परिसर दिवस' मनाया गया, जिसके अन्तर्गत मंडल के नामित अधिकारियों, स्टेशन अधीक्षकों एवं संबंधित सुपरवाइजर्स की देखरेख में स्टेशनों पर स्थित रिटायरिंग/वेटिंग रूम, डॉरमेट्री, रनिंग रूम एवं रेस्ट हाउस में स्वच्छता शपथ लेने के पश्चात श्रमदान किया गया।

इसी क्रम में रेलवे कालोनियों, कोचिंग डिपो, एकीकृत क्रू लॉबी, आर.ओ.एच. डिपो पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस दौरान यात्रियों को स्टेशनों पर उपलब्ध हरा डस्टबिन, नीला डस्टबिन एवं पीला डस्टबिन के प्रयोग हेतु जागरूक किया गया। हरे डस्टबिन में पत्ते, सूखे फल-सब्जी, बचा हुआ खाना

वगैरह डाला जाता है। नीले डस्टबिन में प्लास्टिक बैग, जूस की बोतल, टूटा हुआ प्लास्टिक का सामान वगैरह डाला जाता है। पीले डस्टबिन में कांच जैसे गैर-बायोडिग्रेडेबल कचरा डाला जाता है। बाद में ये कचरे जरूरत और उपयोग के अनुसार नये उत्पादों में पुनः उपयोग (Resue या Recycle) करने के काम आते हैं।



इस अवसर पर मंडल रेलवे चिकित्सालय, बादशाहनगर पॉली क्लीनिक ऐशबाग तथा उप मण्डलीय चिकित्सालय, गोण्डा तथा स्वास्थ्य यूनिटों में रेलवे चिकित्सकों द्वारा मानसून के पश्चात रेलवे स्टेशनों एवं रेलवे कालोनियों में डेंगू बुखार से बचने हेतु जागरूक किया गया। सफाई व्यवस्था को और बेहतर बनाये जाने के लिए जल निकासी, कूड़ा-निस्तारण सुविधाओं का अवलोकन किया गया।

09 अक्टूबर, 2024 को मण्डल पर 'स्वच्छ आहार दिवस' मनाया गया, जिसके अन्तर्गत लखनऊ जं०, गोंडा जं०, गोरखपुर जं०,



मैलानी जं०, सीतापुर जं०, मनकापुर, बढनी, बस्ती, खलीलाबाद तथा ऐशबाग जं० स्टेशनों पर नामित अधिकारियों, रेलवे चिकित्सकों, स्टेशन अधीक्षकों एवं संबंधित सुपरवाइजर्स

दुनिया का सबसे बड़ा मजाक यह है कि लोग गंभीर होते हैं।

- अशोक चक्रधर



की देखरेख में स्टेशनों पर खान-पान स्टालों पर उपलब्ध खाद्य सामग्री की गुणवत्ता, बर्तनों की सफाई, वेंडर का मेडिकल प्रमाण पत्र, फूड लाइसेंस, यूनीफार्म, नेम प्लेट, मूल्य सूची एवं साफ-सफाई आदि का निरीक्षण किया।



10 अक्टूबर, 2024 को मण्डल पर 'स्वच्छ आहार दिवस' मनाया गया, जिसके अन्तर्गत नामित रेलवे अधिकारियों एवं संबंधित सुपरवाइजरों के नेतृत्व में ऐशबाग एवं गोरखपुर पर स्थित कोचिंग डिपो, स्टेशनो पर स्थित बेस किचन तथा गाड़ी सं० 12533 पुष्पक एक्सप्रेस, गाड़ी सं० 22537/22538 कुशीनगर एक्सप्रेस, गाड़ी सं० 15017/15018 गोरखपुर-एलटीटी- गोरखपुर एक्सप्रेस, गाड़ी सं० 12511/12512 राप्तीसागर एक्सप्रेस, गाड़ी सं० 15045/15046 गोरखपुर-ओखा- गोरखपुर एक्सप्रेस, गाड़ी सं० 12589/12590 गोरखपुर- सिकन्दराबाद-गोरखपुर एक्सप्रेस, गाड़ी सं० 12591/12592 गोरखपुर-यशवन्तपुर-गोरखपुर एक्सप्रेस एवं गाड़ी सं० 12587/12588 अमरनाथ एक्सप्रेस के पैंट्रीकारों का सघन निरीक्षण किया।



इस प्रकार 09 एवं 10 अक्टूबर, 2024 दोनों ही अवसर पर यह सुनिश्चित किया गया कि यात्रियों को स्वच्छ एवं स्वास्थ्यप्रद खाद्य पदार्थ उपलब्ध करने वाले बेस किचन एवं ट्रेनों की पैंट्रीकार में बर्तनों की सफाई विधि, अपशिष्ट निपटान प्रणाली तथा वहाँ उपलब्ध स्टोर रूम में खाद्य सामग्री की गुणवत्ता का निरीक्षण किया गया। इसके लिए पैंट्रीकार स्टाफ की मेडिकल जाँच की गयी। स्टेशन एवं यात्रा के दौरान पैंट्रीकार स्टाफ को सदैव साफ-सफाई रखने हेतु जागरूक किया गया तथा 'स्मार्ट डस्टबिन' रखने हेतु प्रोत्साहित किया गया। ट्रेनों में रेल यात्रियों से भोजन की गुणवत्ता के संबंध में फीडबैक भी लिया गया तथा सुझाव प्राप्त कर उन पर तत्काल कार्यवाही करते हुए शिकायतों का निराकरण किया गया।

11 अक्टूबर, 2024 को लखनऊ जं०, ऐशबाग जं०, गोरखपुर जं०, गोण्डा जं०, खलीलाबाद, बस्ती, मनकापुर, बादशाहनगर, लखीमपुर एवं सीतापुर जं० आदि स्टेशनों पर 'स्वच्छ नीर दिवस' के रूप में मनाया गया।

इस दौरान स्टेशनों के सभी प्लेटफार्मों पर नल, हाइड्रेंट, वॉटर कूलर में पेयजल की उपलब्धता, यात्री प्रतीक्षालयों, विश्रामालयों, शौचालयों में जल आपूर्ति की जाँच की गई तथा स्टेशनों कार्यालयों एवं रेलवे कालोनियों में लगी पानी की टंकी की जाँच की गयी तथा लीकेज प्वाइंट पर आवश्यकतानुसार रिपेयरिंग की गयी। जाँच के दौरान स्टेशनों पर 'रेल नीर' की उपलब्धता, नल एवं 'वाटर मशीन' तथा जनाहार केन्द्रों में लगे



सबका मालिक एक है।

- साई बाबा

‘आर.ओ. वाटर सप्लाई’ का सुचारु रूप से संचालन सुनिश्चित किया गया। इसके अतिरिक्त पानी की टंकियों में भण्डारण क्षमता व ‘क्लोरीनेशन’ की जाँच की गई तथा ‘बैक्टीरियल’ परीक्षण हेतु पानी का ‘सैम्पल’ भी लिया गया। स्टेशनों और कोचिंग डिपो में कोचों में स्वच्छ जल भरने वाले हाइड्रेंट पाइपों की उचित ‘स्टैकिंग’ सुनिश्चित करने के लिए कर्मचारियों को जागरूक किया गया।

मण्डल के स्टेशनों, रेलवे परिसरों में स्वच्छता संदेश की उपयोगिता को उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से आम जनमानस में प्रचार-प्रसार की दृष्टि से जागरूक किया जा



रहा है।

की जाँच की गयी तथा लीकेज प्वाइंट पर आवश्यकतानुसार रिपेयरिंग की गयी। जाँच के दौरान स्टेशनों पर ‘रेल नीर’ की उपलब्धता, नल एवं ‘वाटर मशीन’ तथा जनाहार केन्द्रों में लगे ‘आर.ओ. वाटर सप्लाई’ का सुचारु रूप से संचालन सुनिश्चित किया गया। इसके अतिरिक्त पानी की टंकियों में भण्डारण क्षमता व ‘क्लोरीनेशन’ की जाँच की गई तथा ‘बैक्टीरियल’ परीक्षण हेतु पानी का ‘सैम्पल’ भी लिया गया। स्टेशनों और कोचिंग डिपो में कोचों में स्वच्छ जल भरने वाले हाइड्रेंट पाइपों की उचित ‘स्टैकिंग’ सुनिश्चित करने के लिए कर्मचारियों को जागरूक किया गया।

12 अक्टूबर, 2024 को मण्डल रेल प्रबन्धक श्री आदित्य कुमार के मार्गदर्शन में मण्डल के विभिन्न स्टेशनों, रेलवे चिकित्सालयों तथा अनुरक्षण डिपो में **“स्वच्छ प्रसाधन एवं पर्यावरण”** दिवस मनाया गया। स्वच्छता के संबंध में तत्कालीन मंडल रेल प्रबंधक महोदय द्वारा प्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गोरखपुर जं०, लखनऊ जं०, गोण्डा जं०, बस्ती, खलीलाबाद, मनकापुर, बादशाहनगर एवं ऐशबाग स्टेशनों पर शौचालयों एवं स्नानघरों का निरीक्षण किया गया।



इसके अतिरिक्त कैरेज डिपो ऐशबाग एवं गोरखपुर, बादशाहनगर रेलवे चिकित्सालय एवं उप मण्डलीय चिकित्सालय गोण्डा में अधिकारियों एवं स्वास्थ्य निरीक्षकों



द्वारा महिला/पुरुष प्रसाधनों की सफाई व्यवस्था आदि का निरीक्षण किया गया, जिसमें स्टेशनों के प्लेटफार्म, प्रतीक्षालय, विश्रामालय, कार्यालय, कोचिंग डिपो के शौचालयों एवं स्नानघरों तथा स्टेशन परिसर में स्थित यूरिनल आदि के निरीक्षण के दौरान पानी की सप्लाई, गंदे पानी की निकासी की जाँच की गयी तथा आवश्यकतानुसार टायलेट फिटिंग को दूरस्त किया गया। इस दौरान पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए रेलवे लाइन के किनारे व रेलवे परिसर में खुले में शौच न करने की हिदायत भी दी गयी।

13 अक्टूबर, 2024 को मण्डल के लखनऊ जं०, गोरखपुर जं०, गोण्डा जं०, ऐशबाग जं०, सीतापुर, मैलानी, खलीलाबाद आदि स्टेशनों पर ‘स्वच्छ स्पर्धा दिवस’ मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित स्पर्धा प्रतियोगिताओं में उपस्थित यात्रियों एवं रेल कर्मियों के बच्चों

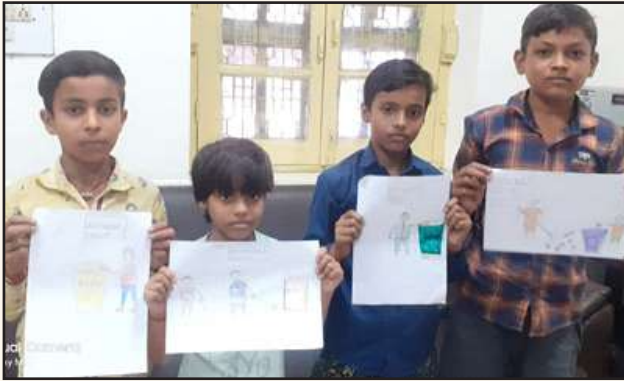


अंधेरे को अंधेरा दूर नहीं कर सकता, केवल प्रकाश ही ऐसा कर सकता है।

-मार्टिन लूथर



द्वारा 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के अंतर्गत रंगोली, पेंटिंग, निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया गया, जिसके लिए रेलवे स्वास्थ्य निरीक्षकों द्वारा विशेष रूप से बच्चों को चार्ट पेपर शीट, रबर, क्रेयॉन रंग तथा चॉकलेट एवं स्नैक्स के पैकेट



प्रदान किये गए। बच्चों के द्वारा स्वच्छता अभियान पर आकर्षक, सुन्दर चित्र व स्वच्छता स्लोगन बनाये गये। इस अवसर पर आयोजित चित्रकला, निबन्ध एवं रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

14 अक्टूबर, 2024 को तत्कालीन मण्डल रेल प्रबन्धक श्री आदित्य कुमार के मार्गदर्शन में मण्डल के लखनऊ जं०, ऐशबाग, बादशाहनगर, गोण्डा, मनकापुर, बस्ती, खलीलाबाद एवं स्टेशनों पर "Say No to Single Use Plastic" दिवस के



रूप में मनाया गया। इस अवसर पर मंडल के स्टेशनों पर प्लास्टिक बोतल क्रशिंग मशीनों के रखरखाव/कार्य की समीक्षा की गई। यात्रियों को 'सिंगल यूज प्लास्टिक' के निषेध हेतु जागरूक किया गया। स्टेशन पर उत्पन्न प्लास्टिक कचरे का आकलन किया गया तथा उचित स्थान पर डिस्पोजल कराया गया। वेंडर्स को खानपान स्टॉल पर 'सिंगल यूज प्लास्टिक' का प्रयोग न करने हेतु जागरूक किया गया। रेलवे स्टेशनों पर एकल उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध का उल्लंघन करने पर स्टालों पर जुर्माने के लिए विशेष अभियान गया।



इस अभियान में स्टेशनों पर यात्रियों को कपड़े के बने थैले वितरित किये गये। 'सिंगल यूज प्लास्टिक' से होने वाले दुष्प्रभाव से पर्यावरण संरक्षण की ओर हम सबको कदम बढ़ाना होगा। इसमें सिंगल यूज प्लास्टिक का अंधाधुंध प्रयोग सबसे बड़ा कारण है। 'सिंगल यूज प्लास्टिक' न केवल वर्तमान में प्रदूषण का कारण बनता है बल्कि अगले कई सौ सालों तक इसका दुष्प्रभाव रहता है। इसलिए हम सभी को मिलकर सामूहिक प्रयास करते हुए 'सिंगल यूज प्लास्टिक' के प्रयोग से परहेज करना चाहिए।

15 अक्टूबर 2024 को एकल उपयोग प्लास्टिक दिवस (Single Use Plastic Day) के रूप में मनाया गया। मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर प्लास्टिक बोतल क्रशिंग मशीनों के रखरखाव एवं कार्य की समीक्षा की गई। यात्रियों को एकल उपयोग प्लास्टिक सिंगल उसे प्लास्टिक के निषेध हेतु जागरूक किया गया। स्टेशन पर उत्पन्न प्लास्टिक कचरे का आकलन किया गया और उचित स्थान पर डिस्पोजल कराया गया। वेंडर्स को खान-पान स्टॉल पर सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग न करने को लेकर जागरूक किया गया। स्टेशनों पर एकल उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध का उल्लंघन करने पर स्टालों पर जमाने के लिए विशेष अभियान चलाया गया। इस अभियान में स्टेशनों पर यात्रियों को कपड़े के बने थैली वितरित किए गए सिंगल

कुछ पुस्तकों को चखना चाहिए, कुछ को पूरी तरह से पढ़ना चाहिए और कुछ को पूरी तरह से पचाना चाहिए।

- फ्रांसिस बेकन

उसे प्लास्टिक से होने वाले दुष्प्रभाव से पर्यावरण संरक्षण की ओर हम सबको कदम बढ़ाना होगा। इसमें सिंगल यूज प्लास्टिक का अंधाधुंध प्रयोग सबसे बड़ा कारण है। सिंगल यूज प्लास्टिक न केवल वर्तमान में प्रदूषण का कारण बनता है, बल्कि अगले कई सौ सालों तक इसका दुष्प्रभाव रहता है। इसलिए हम सभी को मिलकर सामूहिक प्रयास करते हुए सिंगल उसे प्लास्टिक के प्रयोग से परहेज करना चाहिए।



प्रतिदिन स्टेशनों के प्लेटफार्मों पर उपलब्ध शौचालयों, पेयजल बूथों तथा यात्रियों के बैठने हेतु बेंचों की सफाई, स्टेशनों पर उपलब्ध सोलर पावर उपकरण की साफ-सफाई व क्रियाशीलता को भी जाँचा गया। आम जनमानस में सफाई संबंधी जागरूकता के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से स्टेशनों तथा रेलवे परिसरों में गंदगी फैलने से होने वाले नुकसान



को यात्री जनों एवं आम जनमानस तक उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से संदेश पहुँचाया गया। इस अभियान के दौरान स्टेशन परिसर में पोस्टर/बैनर एवं सोशल मीडिया के माध्यम से स्वच्छता जागरूकता फैलायी गयी। प्रत्येक दिन आम



जनमानस को रेलवे स्टेशनों, ट्रैक, यार्ड या डिपो परिसर में खुले में शौच न किये जाने हेतु जागरूक किया गया तथा रेलकर्मियों द्वारा रेलवे स्टेशनों एवं रेलवे कालोनियों में स्वच्छता सुनिश्चित करने के उद्देश्य हेतु **“स्वच्छ रेल स्वच्छ भारत”** के नारे के साथ प्रभात फेरियाँ निकाली गयीं। मण्डल के स्टेशनों पर यात्रियों के स्वच्छता जागरूकता हेतु ‘स्वच्छता सेल्फी प्वाइंट’ भी लगाये गये।

पृष्ठ 17 का शेष

जहाँ वेब हाईजैकिंग में साइबर अपराधी दूसरों के ऑफिशियल वेबसाइट को हैक कर महत्वपूर्ण जानकारीयों की चोरी करना, वंही फिशिंग में स्पैम ईमेल भेजकर या फर्जी वेबसाइट के माध्यम से निजी जानकारी निकाल लेता है।

बड़ी रकम कमाने के लिए साइबर अपराधी हमेशा आसान रास्ता चुनते हैं। इसके लिए वे कम्प्यूटर का इस्तेमाल करते हैं क्योंकि इससे वे आसानी से एक्सेस कोड, रेटिनल इमेज इत्यादि चोरी कर सकते हैं साथ ही साथ प्रयोगकर्ता की लापरवाही का फायदा उठा कर डेटा चोरी करते हैं। इसके लिए हम कुछ बातों को ध्यान में रख स्वयं को साइबर क्राइम से बचा सकते हैं।

साइबर क्राइम से बचने के लिए कभी भी अनजान लिंक पर क्लिक न करें, किसी भी थर्ड पार्टी एप्प, साफ्टवेयर को

इंस्टाल नहीं करना चाहिए व सोशल मीडिया पर अपनी निजी जानकारी शेयर करने से बचना चाहिए और अपने पासवर्ड नियमित रूप से बदलते रहने चाहिए। वे ऐसे ही उपायों को अपनाकर स्वयं को साइबर क्राइम से बचाये जा सकते हैं।

आज भारत डिजीटलीकरण के युग में नया अध्याय लिख रहा है, जोकि नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी, लेकिन वही दूसरी तरफ यहाँ हर व्यक्ति को सोशल मीडिया पर अपने विचार अभिव्यक्त करने की छूट है, वहीं हमें यह भी विचार करने की आवश्यकता है कि हम इन आइटम का सावधानीपूर्वक उपयोग करें, क्योंकि तभी तो हम साइबर अपराधी जैसे गंभीर खतरों से बच सकते हैं।

— कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा विभाग,
पू० उ० रे०, लखनऊ

एक (मानव) जाति, एक धर्म, सभी के लिए एक ईश्वर।

- नारायण गुरु

शंटिंग मेला



अरविन्द कुमार

रेलवे में संरक्षा विभाग द्वारा सुरक्षित ट्रेन संचलन के सम्बंध में संरक्षा विभाग द्वारा कई संरक्षा कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में लोको पायलट, लोको पायलट शंटर, सहायक लोको पायलट और ट्रेन मैनेजर द्वारा स्टेशन यार्ड, गुड्स यार्ड और लोडिंग – अनलोडिंग सायडिंगों में ट्रेन, लोको और लोड का सुरक्षित, संरक्षित शंटिंग संचलन हेतु एक शंटिंग मेला का आयोजन मंडल रेल प्रबंधक महोदय के निर्देशन में और अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) एवं वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी लखनऊ जंक्शन की उपस्थिति में प्रत्येक लॉबी पर समय-समय पर एक शंटिंग मेला का आयोजन किया जाता है। इस मेले के

रहता है।

संवाद के दौरान समझाया जाता है शंटिंग कार्य का निष्पादन नियमानुसार करे और शंटिंग कार्य में कोई भी शोर्ट कट विधि न अपनाए, जिससे रेल राजस्व और स्वयं की हानि से बचा जा सके।

लॉबी के लोको पायलट, लोको पायलट शंटर, सहायक



लोको पायलट एवं ट्रेन मैनेजर को लॉबी पर बुलाकर आपसी संवाद कर उनकी शंटिंग के दौरान आने वाली समस्याओं के साथ-साथ निम्नलिखित समस्याओं को भी नोटिस किया जाता है –

1. शंटिंग कार्य मोबाइल फोन द्वारा किया जाना।
2. वॉकी टॉकी पर शंटिंग का कार्य किया जाना।
3. एस कर्व टाइप यार्ड में पॉइंट्स मैन की कमी।
4. लोको स्टेविलिंग लाइन में बड़ी-बड़ी झाड़ियाँ का होना।
5. लोको की सिक्वोरिंग वुडन स्प्रेग और हेंड ब्रेक द्वारा नियमानुसार किया जाना।
6. हेंड सिग्नल का नियमानुसार दिखाया जाना।
7. प्वाइंट्स का प्रॉपर सेट एंड लॉक होना।
8. लोडिंग अनलोडिंग स्टेशनों पर लाइन किनारे लोडिंग अनलोडिंग मटेरियल का पड़ा होना।

इसके साथ-साथ उनकी अन्य परेशानियों का भी निपटारा किया जाता है। कर्मचारियों के साथ प्रश्नोत्तरी के दौरान संरक्षा को संरक्षित करने के संबंध में जो कर्मचारी संतोषजनक उत्तर देते हैं, उन्हें अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) महोदय द्वारा अवार्ड से पुरस्कृत किया जाता है।



दौरान तत्कालीन अपर मंडल रेल प्रबंधक (परि०) श्री विक्रम कुमार थे।

शंटिंग कार्य में स्टेशन यार्ड, गुड्स यार्ड और लोडिंग – अनलोडिंग सायडिंग में वैगन और कोचों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लोको द्वारा सुरक्षित एवं संरक्षित ढंग से जाकर सिक्वोर करके रखा जाता है।

सुरक्षित शंटिंग कार्य करने की जिम्मेदारी लोको पायलट शंटर, प्वाइंट्समैन, ट्रेन मैनेजर और स्टेशन मास्टर की होती है। शंटिंग कार्य करने से पहले स्टेशन मास्टर द्वारा लोको पायलट शंटर, प्वाइंट्समैन को शंटिंग कार्य मूवमेंट के बारे में समझाया जाता है और साथ ही T-806 शंटिंग आदेश फार्म दिया जाता है, जिस पर शंटिंग कार्य का पूर्ण विवरण लिखा

सारी दुनिया गलत है, सिर्फ मैं ही सही हूँ, यह एहसास बहुत दुःख देता है।

- हरिशंकर परसाई

क्रू मैनेजमेंट सिस्टम रिपोर्ट (CMS)

1. भारतीय रेलवे पर क्रू प्रबंधन प्रणाली एक महत्वपूर्ण उपलब्धी है। यह सॉफ्टवेयर सिस्टम दिसंबर, 2007 में आरम्भ किया गया था। क्रू, जिसमें लोको पायलट और गार्ड शामिल होते हैं और ये गाड़ियों की रनिंग और संरक्षा के महत्वपूर्ण संसाधन हैं। सीएमएस, क्रू के इन सदस्यों के बारे में हर वक्त सूचनाएं उपलब्ध कराता है, जिससे माल गाड़ियों और सवारी गाड़ियों पर तथा टर्मिनलों एवं यार्डों के लिए क्रू की बुकिंग आसान हो जाती है।
2. उनकी स्टेट्स की जानकारी देकर, उनकी ड्यूटी के आबंटन की रोस्टरिंग करके, उनके होम स्टेशन पर क्रू की उपलब्धता की जानकारी देकर और गाड़ियों पर क्रू को तैनात करके उनके दैनिक कार्यों को स्वचालित करता है। इनसे क्रू का प्रबंधन और बेहतर होता है। सीएमएस को पारदर्शिता लाने और सूचनाओं की अधिक सटीकता के लिए विकसित किया गया है, ताकि निर्णयकर्ता क्रू को नियंत्रित करने और इसके उपयोग के लिए प्रभावी निर्णय ले सकें।
3. इस प्रकार भारतीय रेलवे पर क्रू बुकिंग कम्प्यूटराइज्ड हुई है। इस सिस्टम की एक खास बात यह है कि क्रू एक टच स्क्रीन किआस्क के माध्यम से सिस्टम पर इंटर एक्ट कर सकता है। इस सिस्टम में बायो-मेट्रिक (थम्ब इंप्रेशन रीडर) की व्यवस्था की जा रही है, ताकि प्राकसी रिपोर्टिंग की किसी संभावना को समाप्त किया जा सके। यह सिस्टम उपयोगकर्ता के लिए अत्यधिक अनुकूल है।
4. क्रू की उपलब्धता की जानकारी मोबाइल फोन पर तत्काल उपलब्ध कराने के लिए सीएमएस का इस्तेमाल किया जाता है। सीएमएस SMS के माध्यम से क्रू बुकिंग भी उपलब्ध कराता है।
5. क्रू मैनेजमेंट सिस्टम एक ऐसा सिस्टम है, जिसके द्वारा प्रत्येक क्रू एवं ट्रेन मैनेजर की पूर्ण जानकारी प्राप्त रहती है।
6. सीएमएस का प्रयोग मुख्यतः क्रू एवं ट्रेन मैनेजर और मुख्य लोको निरीक्षकों द्वारा किया जाता है।
7. सीएमएस में गाड़ी संचालन के दौरान लोको पायलट, सहायक लोको पायलट और ट्रेन मैनेजर, मुख्य लोको निरीक्षकों को खंड में जो भी संरक्षा और सुरक्षा से संबंधित अनियमितताएं मिलती हैं, उनको सीएमएस में दर्ज किया जाता है।
8. सीएमएस में अनियमितता को मोबाइल चालक दल और KIYOSK द्वारा दर्ज किया जाता है। इसके अलावा प्रत्येक लाबी में लोको पायलट ऑब्जरवेशन (CMS) पंजिका में दर्ज करने के लिए सिगनल एवं ट्रैक डिफेक्ट रजिस्टर रखा गया है, जिसमें भी दर्ज कर सकते हैं। सिगनल एवं ट्रैक डिफेक्ट रजिस्टर में दर्ज किया गया, डिफेक्ट को लॉबी क्रू कंट्रोलर द्वारा पावर कंट्रोलर को नोट करा देते हैं, जिसको पावर कंट्रोलर द्वारा सीएमएस में दर्ज किया जाता है।
9. अनियमितता सीएमएस में दर्ज होने के बाद इसे इंटरनेट के जरिये सीएमएस रिपोर्ट पर आईडी एवं पासवर्ड डालकर देखा जा सकता है।
10. पावर कंट्रोल द्वारा प्रतिदिन के सीएमएस में दर्ज किए गए डिफेक्ट को सुबह की पोजीशन में सभी संबंधित



प्यार में पाने का विधान उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना खो देने का।

- धर्मवीर भारती

कंट्रोल को व्हाट्सएप के माध्यम से भेजा जाता है, जिस पर प्रत्येक दिन संरक्षा विभाग के संरक्षा सलाहकारों द्वारा विश्लेषण किया जाता है और प्रत्येक दिन होने वाली मीटिंग में सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों द्वारा गहन परिचर्चा होती है।

11. जिस विभाग की अनियमित होती है, उससे संबंधित विभाग द्वारा उसका फीडबैक पावर कंट्रोल को लिखित रूप में दिया जाता है। पावर कंट्रोल द्वारा मिले हुए फीडबैक को सीएमएस के क्लोजिंग रिमार्क में भरता है। पावर कंट्रोल द्वारा क्लोजिंग रिमार्क भरते ही सीएमएस के जरिये अनियमितता दर्ज करने वाले कर्मचारियों के मोबाइल पर फीडबैक चला जाता है।

क्लोजिंग रिमार्क भरने के पश्चात सीएमएस में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता है। अतः संबंधित विभागों को क्लोजिंग रिमार्क बहुत ही सोच समझकर देना चाहिए। यदि कर्मचारी दिए गए क्लोजिंग रिमार्क से संतुष्ट नहीं होता है, तो वह पुनः सीएमएस में उस अनियमितता को दर्ज कर सकता है।

12. क्रू की उपलब्धता की जानकारी मोबाइल फोन पर तत्काल उपलब्ध कराने के लिए सीएमएस का इस्तेमाल किया जाता है। सीएमएस SMS के माध्यम से क्रू बुकिंग भी उपलब्ध कराता है।

संरक्षा का दीप जलाएं हर घर में
उजाला फैलाएं हर घर में”

फैमिली सेमिनार

रेलवे में संरक्षा विभाग द्वारा सुरक्षित ट्रेन संचलन के सम्बन्ध में संरक्षा विभाग द्वारा कई संरक्षा कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में लोको पायलट, सहायक लोको पायलट और ट्रेन मैनेजर द्वारा ट्रेन का सुरक्षित संचलन हेतु एक फैमिली सेफ्टी सेमिनार का आयोजन मंडल रेल प्रबंधक महोदय के निर्देशन में और अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) एवं वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी, लखनऊ जंक्शन की उपस्थिति में प्रत्येक लॉबी पर समय-समय पर एक फैमिली सेमिनार का आयोजन किया जाता है, जिसमें लॉबी के लोको पायलट, सहायक लोको पायलट एवं ट्रेन मैनेजर और उनकी फैमिली के बच्चे, पत्नी और भाई-बहन को लॉबी पर बुलाकर आपसी संवाद कर उनकी बात को सुना जाता है। इस फैमिली सेमिनार की अध्यक्षता तत्कालीन अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री विक्रम कुमार ने किया था।



फैमिली सेमिनार के दौरान फैमिली की पारिवारिक समस्याओं के साथ-साथ निम्नलिखित समस्याओं को भी नोटिस किया जाता है –

1— रेलवे कॉलोनी की समस्या—

रेलवे कॉलोनी में नालियों की टूटफूट और मरम्मत की समस्याएं

- क) रेलवे कॉलोनी परिसर में साफ सफाई की समस्या
- ख) रेलवे कॉलोनी के क्वार्टरों की छत से बरसात के मौसम में पानी का टपकना और सीलन की समस्या
- ग) रेलवे कॉलोनी में पानी एवं लाइट की समस्या

2— मेडिकल समस्या

- क) परिवार के सदस्यों की बीमारी की समस्या
- ख) रेलवे हॉस्पिटल में इलाज संबंधित समस्या
- ग) रेलवे हॉस्पिटल में मेडिसिन की समस्या



3— लॉबी संबंधी समस्या

- क) छुट्टी एवं रेस्ट की समस्या
- ख) ट्रेन बुकिंग सम्बन्धी समस्या

शांति की प्रक्रिया एक मुस्कान के साथ शुरू होती है।

-मदर टेरेसा

4- मंडल कार्यालय से संबंधित समस्याएं

- क) ट्रांसफर संबंधी समस्या
- ख) बिल अनुभाग
- ग) लेखा अनुभाग और इसी प्रकार की अन्य समस्याओं का भी निपटारा हित निरीक्षक के माध्यम से जल्द से जल्द निपटाया जाता है।

कर्मचारियों की फैमिली के साथ प्रश्नोत्तरी के दौरान संरक्षा को संरक्षित करने के संबंध में जो फैमिली संतोष जनक उत्तर देते हैं, उन्हें अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) महोदय द्वारा अवार्ड से पुरस्कृत किया जाता है।

संवाद के दौरान सभी फैमिली मेंबर्स को ब्रेकफास्ट, कोल्ड ड्रिंक एवं बच्चों को चोकलेट टाफी आदि की व्यवस्था की जाती है। संवाद के दौरान फैमिली मेंबर्स को समझाया जाता है कि आपके परिवार के पालनकर्ता की नौकरी बहुत ही संवेदनशील है, उन्हें मानसिक और शारारिक विश्राम की अति आवश्यकता

है, जिससे कि वो प्रतिदिन हजारों यात्रियों की यात्रा को सुरक्षित बना सकें, इस सुरक्षित यात्रा को बनाने में फैमिली का सुरक्षित रेल संचलन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इसलिए, घर पर पूर्ण रेस्ट करना सुनिश्चित किया जाए और घर का माहोल शांतिपूर्ण बनाया जाए, घर अथवा बाहर के अधिकांश कार्य स्वयं करने की कोशिश करें यदि कहीं जाना अति आवश्यक हो, वहाँ ही भेजें और उसके बाद रेस्ट करने के उपरांत ही ड्यूटी पर प्रसन्नचित मन से जाएं।

अतः रेल संचालन में फैमिली और उनके मेंबर्स का बहुत ही अग्रणीय योगदान है और बहुत महत्वपूर्ण दायित्व भी है, जिससे हमारी भारतीय रेलवे में रेल संचलन को सुरक्षा एवं संरक्षा की मजबूती प्रदान होती है, जिससे हम सभी सुरक्षित एवं संरक्षित यात्रा करते हैं।

“जीवन का महत्व वो ही जाने, सुरक्षा के नियम जो कोई माने”

शंटिंग कार्य के दौरान क्या करें, क्या न करें

क्र.सं.	क्या करें	क्या न करें
1.	शंटिंग कार्य का संचालन वही लोको पायलट शंटर एवं लोको पायलट करेगा, जिसके पास शंटर का सक्षमता प्रमाण पत्र उपलब्ध है।	लोको का संचालन सहायक लोको पायलट, प्वाइंट्समैन या स्टेशन मास्टर शंटिंग के कार्य के लिये लोको को चलाने का प्रयास कभी नहीं करेगा।
2.	शंटिंग लोको की स्पीड 1 से 15 kmph तक के बीच में रहेगी।	शंटिंग का कार्य 15kmph की स्पीड से अधिक पर नहीं किया जाएगा। शंटिंग के दौरान सीधी और साफ लाइन होने पर भी 15 kmph से अधिक स्पीड नहीं होगी।
3.	जिस दिशा में शंटिंग कार्य किया जा रहा है उसी दिशा के लोको कैव से शंटिंग कार्य करना चाहिए।	जिस दिशा में शंटिंग कार्य हो रहा है उसके विपरीत दिशा के कैव से शंटिंग कार्य नहीं करना चाहिए।
4.	शंटिंग के दौरान प्वाइंट्समैन लोको के नीचे से प्रॉपर शंटिंग के लिए सिग्नल देगा।	शंटिंग के दौरान प्वाइंट्समैन लोको की सीट पर नहीं बैठेगा और लोको के नीचे से प्रॉपर शंटिंग के लिए सिग्नल देगा।
5.	शंटिंग का कार्य प्रॉपर पॉइंट्समैन के हेंड सिग्नल एवं शंट सिग्नल द्वारा किया जाएगा। दिन में लाल और हरी झंडी तथा रात में लाल, हरी फ्लैशिंग लाइट का प्रयोग किया जाएगा।	शंटिंग का कार्य मोबाइल फोन एवं बाकी-टाकी पर कदापि नहीं किया जाएगा। शंटिंग का कार्य सफेद बत्ती से नहीं किया जाएगा।

मन ही पूजा, मन ही धूप, मन ही सेऊं सहज स्वरूप।

-संत रविदास

6.	एक लोड पर केवल एक ही सिरे पर शंटिंग कार्य किया जाएगा।	एक लोड पर एक ही समय में लोड के दोनों ओर शंटिंग नहीं किया जाएगा।
7.	पॉइंट्स मैन द्वारा ही मैनुअल पॉइंट को प्रॉपर सेट एंड लॉक किया जाएगा।	मैनुअल पॉइंट को सेट एवं लॉक करने का कार्य स्टेशन मास्टर, लोको पायलट शंटर एवं अन्य किसी कर्मचारी द्वारा नहीं किया जाएगा।
8.	प्वाइंट्समैन शंटिंग मूवमेंट के अनुसार प्वाइंट को सेट एंड लॉक करेगा।	शंटर शंटिंग मूवमेंट के अनुसार प्वाइंट का सेट एंड लॉक होना सुनिश्चित करेगा और स्वयं चौकस व चौकन्ना रहेगा। पूर्ण रूप से पॉइंट्स मैन पर निर्भर नहीं रहेगा।
9.	शंटिंग का कार्य लोवर नाच पर करना चाहिए।	शंटिंग का कार्य हायर नाच पर नहीं करना चाहिए।
10.	जिस वैगन या कोच की शंटिंग करना है, उसमें बीपी प्रेशर लेने के पश्चात ही शंटिंग कार्य करें।	किसी भी लोड की शंटिंग बिना बीपी प्रेशर के कदापि नहीं की जाएगी।
11.	लोड को साइडिंग में पुशबैक करते समय प्वाइंट्समैन और शंटर को साइडिंग के कैपेसिटी की जानकारी पूर्ण रूप से होना चाहिए।	पॉइंटमेंट एवं शंटर को साइडिंग की कैपेसिटी की जानकारी न होने पर शंटिंग कार्य नहीं करना चाहिए।
12.	लोको को लोड पर अटैच करने से 20 मीटर पहले रोक कर लोको और लोड की कपलिंग का एलाइनमेंट मिला लेना चाहिए।	लोको को लोड पर एक ही बार में लोड पर नहीं जोड़ना चाहिए।
13.	रोडसाइड स्टेशनों पर शंटिंग का कार्य T-806 शंटिंग आदेश पर ही किया जाएगा।	रोडसाइड स्टेशनों पर शंटिंग का कार्य बिना T-806 शंटिंग आदेश के नहीं किया जाएगा।
14.	लोको द्वारा शंटिंग कार्य करते समय लोको में लगे शंटिंग मोड स्विच को शंटिंग पोजीशन में कर देना चाहिए।	लोको के शंटिंग मोड स्विच को शंटिंग मोड पोजीशन में रखने के पश्चात ही शंटिंग कार्य करें, जिससे लोको की स्पीड 15 kmph से अधिक ना हो सके।
15.	शंटिंग का कार्य प्रारंभ करने से पूर्व लोको का ब्रेक SA-9 की जांच अवश्य कर लेना चाहिए।	यदि लोको का SA-9 ब्रेक कार्य नहीं कर रहा है, तो लोको द्वारा शंटिंग कार्य नहीं किया जाएगा।
16.	लोको द्वारा शंटिंग का कार्य प्रारंभ करने से पूर्व लोको की जांच के साथ लोको के दोनों बोगी कट ऑउट का खुला होना सुनिश्चित किया जाए।	लोको की जाँच करते समय लोको के बोगी कट ऑउट का कब बंद नहीं होना चाहिए।
17.	लोको को लोड पर अटैच करने के लिए कपलिंग जोड़ते समय कम से कम दो कर्मचारियों को उपस्थित रहना चाहिए।	एक कर्मचारी की उपस्थिति में लोको के कपलिंग के जोड़ने और काटने का कार्य कदापि नहीं करना चाहिए।
18.	शंटर को यार्ड और उसकी सभी लाइनों की पूर्ण जानकारी होना चाहिए और यार्ड का लेआउट अपने पास रखना चाहिए और सुपरवाइजर के साथ यार्ड की फुट टू फुट लर्निंग किया जाना चाहिए।	शंटर को यार्ड का आधा अधूरा ज्ञान नहीं होना चाहिए।

— संरक्षा सलाहकार (लोको)
संरक्षा विभाग, पू०उ०रे०/लखनऊ

जिस तरह समुद्र को सुखाया नहीं जा सकता, उसी तरह ज्ञानी व्यक्ति को भी हराया नहीं जा सकता।

- मुंशी सदा सुखलाल

रेल चालकों का मानसिक और मनोवैज्ञानिक दबाव को कम करने के संरक्षात्मक उपाय



अजय कुमार सिंह

भारतीय रेल में चलने वाली माल गाड़ियों से आज के वक्त में 60% माल भारतीय रेल से संचालित होता है तथा सिर्फ 40% माल भारत के ट्रकों से संचालित होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि रेल में 'क्रू' चाहे वो पैसेंजर या गुड्ज ट्रेन के हों उनका मानसिक और मनोवैज्ञानिक दबाव कम करना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे लंबे समय तक यात्रा करते हैं, कई जिम्मेदारियां निभाते हैं और तनावपूर्ण परिस्थितियों में त्वरित निर्णय लेते हैं। मानसिक दबाव को कम करने के लिए कुछ ठोस कदम उठाए जा सकते हैं, जो न केवल चालकों की मानसिक भलाई को सुनिश्चित करेंगे, बल्कि उनके कार्य प्रदर्शन को भी संरक्षित व सुरक्षित कर बेहतर बनाएंगे।

1. समान और व्यवस्थित शिफ्ट व्यवस्था

- **उचित रनिंग शिफ्ट योजना** : लंबी शिफ्टों के बजाय उचित और लचीला कार्य समय निर्धारित करना चाहिए ताकि चालक को थकान और मानसिक दबाव से बचाया जा सके। उनके लिए पर्याप्त आराम के समय की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि वे अगले काम के लिए ताजगी से तैयार हो सकें।
- **शिफ्टों के बीच पर्याप्त विश्राम** : यदि किसी चालक को लगातार लंबी शिफ्टों में काम करना होता है, तो उन्हें शारीरिक और मानसिक आराम के लिए पर्याप्त समय मिलना चाहिए। खास तौर से छोटी अवधि का रेस्ट संरक्षा व सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है।

2. मनोवैज्ञानिक सहायता और काउंसलिंग

- **मनोवैज्ञानिक समर्थन (Counseling)** : चालकों के लिए मानसिक स्वास्थ्य समर्थन कार्यक्रम शुरू किए जा सकते हैं, जिसमें नियमित काउंसलिंग सत्र, तनाव और दबाव कम करने के लिए कोचिंग या थेरेपी प्रदान की जा सकती है।
- **स्ट्रेस मैनेजमेंट ट्रेनिंग** : चालकों को तनाव से निपटने की तकनीकें सिखाने के लिए स्ट्रेस मैनेजमेंट वर्कशॉप आयोजित करनी चाहिए, जिसमें श्वास नियंत्रण, योगा, ध्यान (मेडिटेशन) और अन्य मानसिक विश्राम के उपाय शामिल हों।

- **पर्यवेक्षक सपोर्ट सिस्टम** : विश्राम स्थलों पर नियुक्त पर्यवेक्षक को रनिंग रूम का माहौल इस प्रकार रखना चाहिए कि किसी भी क्रू को अपने विश्राम व भोजन से संबंधित शिकायत को साझा कर सके और उसे समझ कर उसका उचित निपटारा किया जा सके।
- 3. **आरामदायक और सुरक्षित कार्य वातावरण**
 - **सुरक्षित और आरामदायक कैबिन** : चालक के कार्य स्थल (ट्रेन का कैब) को आरामदायक और सुरक्षित बनाना चाहिए, ताकि उन्हें मानसिक और शारीरिक आराम मिले। सीट का डिजाइन, एयर कंडीशनिंग और सही प्रकाश व्यवस्था को सुनिश्चित किया जाए।
 - **बेहतर दृश्यता और संकेत** : चालक को बेहतर दृश्यता और साफ संकेत मिले ताकि उन्हें मानसिक दबाव न हो, जैसे रात के समय में स्पष्ट और ऊंचे सिग्नल, सिग्मा बोर्ड की सही दूरी, ट्रैक के पार स्थित बाधाओं की सही जानकारी।
 - **ऑटोमेशन और मॉनिटरिंग** : आधुनिक तकनीक जैसे सिगनलिंग सिस्टम और स्वचालित ब्रेकिंग सिस्टम (Automatic Braking System) का उपयोग चालकों के कार्यभार को कम करने तथा यात्रियों की सुरक्षा व ट्रेन के संचालन में मदद करता है।
 - **FSD का उपयोग** : हर ट्रिप में चालकों द्वारा कार्यशील FSD का उपयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
 - **शांति पूर्ण कार्य का वातावरण** : लोको पायलट कैब में कार्य के दौरान अपना मोबाइल फोन "स्विच ऑफ" अवस्था में रखे जिससे उनका मन अपने कार्य में एकाग्र रहे। फुटप्लेट निरीक्षण करने वाले अधिकारी व कर्मचारी को ट्रेन संचालन के समय निरीक्षण कार्य के अतिरिक्त कोई अन्य वार्तालाप करने से बचने का प्रयास करना चाहिए।
 - **सहायक उपकरण** : थकान को मॉनिटर करने वाले उपकरणों और अलार्म सिस्टम का उपयोग किया जाए।
- 4. **स्वास्थ्य और शारीरिक फिटनेस**
 - **स्वास्थ्य निगरानी** : चालकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की नियमित जांच करनी चाहिए।

ऐसा मत सोचो कि पैसा सब कुछ करता है, वरना आप पैसे के लिए सब कुछ करने लग जाओगे।

- फ्रांसीसी दार्शनिक वॉल्टेयर

स्वस्थ शरीर और मन से उन्हें कार्य करने में कम दबाव महसूस होता है। मानसिक स्वास्थ्य की निगरानी के लिए नियमित स्क्रीनिंग और फिटनेस परीक्षण किया जा सकता है।

- **फिटनेस कार्यक्रम :** चालकों को नियमित व्यायाम और फिटनेस को अपनी रूटीन में शामिल करना चाहिए, ताकि उनका शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर रहे और मानसिक दबाव भी कम हो। योग और ध्यान जैसी गतिविधियाँ भी तनाव कम करने में सहायक हो सकती हैं।

5. प्रशिक्षण और आत्मविश्वास बढ़ाना

- **सुरक्षा और आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रशिक्षण :** नियमित रूप से ट्रेनिंग देना चाहिए, ताकि चालक किसी भी खतरे का सही तरीके से सामना कर सके। इससे उनकी आत्मविश्वास में वृद्धि होती है और मानसिक दबाव कम होता है, क्योंकि वे जान पाते हैं कि वे किसी भी परिस्थिति से निपट सकते हैं।
- **एक्सीडेंट अथवा विषम परिस्थिति में काम करने की ट्रेनिंग :** विशेष रूप से विषम परिस्थितियों में काम करने के लिए ट्रेनिंग दी जानी चाहिए, ताकि चालक मानसिक रूप से मजबूत महसूस करें और किसी भी आपात स्थिति में सही निर्णय ले सकें।

6. समय पर ब्रेक और आराम

- **ब्रेक के दौरान आराम :** चालक को नियमित अंतराल पर आराम देने की व्यवस्था होनी चाहिए। यह उन्हें मानसिक रूप से पुनः ऊर्जा प्राप्त करने में मदद करता है। जब वे लंबे समय तक कार्य करते हैं, तो थकान से ध्यान भटक सकता है, जिससे दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ जाता है।
- **ब्रेक रूम की सुविधा :** ट्रेन संचालन के दौरान किसी ब्रेक स्टेशन या आराम कक्ष में आराम करने का पर्याप्त अवसर दिया जाए, ताकि चालक शारीरिक और मानसिक रूप से तरोताजा हो सके।

7. सकारात्मक प्रोत्साहन और मानसिक समर्थन

- **सकारात्मक प्रतिक्रिया और प्रशंसा :** चालक के अच्छे

काम के लिए नियमित रूप से उनकी सराहना और प्रोत्साहन किया जाना चाहिए। इससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है और मानसिक दबाव कम होता है।

- **कर्मचारी कल्याण कार्यक्रम :** चालकों के लिए कल्याण कार्यक्रमों की पेशकश की जा सकती है, जैसे पर्सनल और प्रोफेशनल विकास के लिए कार्यशालाएँ और सेमिनार। इससे उनके मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है और वे खुद को कम तनाव महसूस करेंगे।

8. आपातकालीन स्थिति में त्वरित सहायता

- **आपातकालीन समर्थन टीम :** चालक को यह महसूस होना चाहिए कि आपातकालीन स्थितियों में उन्हें तुरंत मदद मिलेगी। कंट्रोल रूम से समर्थन, अतिरिक्त कर्मचारियों का समर्थन, और त्वरित प्रतिक्रिया से चालक को मानसिक शांति मिलती है।
- **किसी दुर्घटना के बाद मानसिक समर्थन :** अगर कोई चालक किसी दुर्घटना का हिस्सा बनता है या किसी बड़ी घटना का सामना करता है, तो उसे मानसिक सहायता प्रदान करना आवश्यक है। काउंसलिंग और थेरेपी से उसे जल्दी ठीक होने में मदद मिलती है।
- 9. **कर्मचारी की पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन में समर्थन**
- **परिवार और व्यक्तिगत जीवन का संतुलन :** चालक को उनके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए समय दिया जाना चाहिए। वे तनावपूर्ण कार्यों से बाहर निकलने के लिए अपने परिवार के साथ समय बिता सकें। यह उनके मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखेगा।

निष्कर्ष :

चालकों का मानसिक और मनोवैज्ञानिक दबाव कम करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, और कार्यात्मक पहलुओं का ध्यान रखा जाता है। इन उपायों के माध्यम से न केवल चालकों की मानसिक स्थिति को बेहतर किया जा सकता है, बल्कि इससे उनकी कार्य क्षमता भी बढ़ती है, जिससे रेलवे सुरक्षा व संरक्षा में सुधार होता है और दुर्घटनाओं की संभावना कम होती है।

— संरक्षा सलाहकार (टीआरडी)
संरक्षा विभाग, पू०उ०रे०/लखनऊ

मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ है, किंतु वह हर जगह जंजीरों में जकड़ा हुआ है।

-जे० जे० रूसो

अनुशासन



अरुण कुमार गौड़

अनुशासन एक क्रिया है जो हमारे शरीर, दिमाग और आत्मा को नियंत्रित करके नियमों का पालन करना सिखाता है। आइए, हम अनुशासन के विशेष बिन्दुओं पर चर्चा करते हैं :

1. समय का पाबंद, बड़ों का सम्मान, नियमित दिनचर्या व बुरी आदतों से दूर रहना अनुशासन कहलाता है।
2. अनुशासन के पालन से व्यक्ति का जीवन सफल और सार्थक बनता है।
3. अनुशासन हमारे बेहतर चरित्र का निर्माण करता है।
4. अनुशासन का न होना हमें गैर-जिम्मेदार और आलसी बना देता है।
5. अनुशासन का दृढ़तापूर्वक पालन हमें समय का पाबंद बनाता है।
6. अनुशासन हमें अच्छाई और बुराई में फर्क दिखता है।
7. एक अनुशासित व्यक्ति अपने से बड़ों के आदेशों का पालन पूरी निष्ठा भाव और ईमानदारी से करता है।
8. अनुशासन हमारे जीवन में आत्मविश्वास और आत्म-नियंत्रण विकसित करने में सहायता करता है।
9. अनुशासन के नीति नियम को प्रत्येक व्यक्ति को अपने लिए निर्धारित करना चाहिए।

जीवन का पहला और सबसे महत्वपूर्ण सबक अनुशासित होना है। यदि अनुशासन का पाठ बचपन से ही शुरू हो जाए तो यह कठिन नहीं है, लेकिन अगर यह देर से शुरू होता है तो यह जीवन में सीखने का सबसे कठिन पाठ हो सकता है। अनुशासन सफलता की सीढ़ी है। अनुशासन में रहने से ही व्यक्ति को हर जगह सम्मान मिलता है। इसलिए हमें हमेशा अनुशासन में रहना चाहिए और अपने जीवन में सफल होने के लिए अपने शिक्षक और माता-पिता के आदेशों का पालन करना चाहिये। देश की सुरक्षा भी एक अनुशासित सेना द्वारा की जाती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने छात्र जीवन में अनुशासन का विकास करना चाहिए। अनुशासन हमारे जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसलिए हमें अपने जीवन में अनुशासन को अपनाने के लिए उन सभी नियमों का पालन करना चाहिए जिससे हमारा जीवन बेहतर बन सके जैसे हमें अपने शिक्षक और बड़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिए, बुरी आदतों से दूरी बनाना चाहिए और अपने दैनिक कार्यों को सही समय पर और पूरी लगन से करना चाहिए। अनुशासन अगर

देखना है, तो सेना को देखना चाहिए। जहाँ प्रत्येक सैनिक अपने अधिकारी की आज्ञा का पालन बड़ी तत्परता से करते हैं। तभी तो उन्हें विजय प्राप्त होती है। अनुशासन सभी के जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। अनुशासन एक व्यक्ति को इतना आदर्श बना देता है कि वह व्यक्ति दूसरों की अपेक्षा कुछ विशेष दिखाई पड़ता है। उसका सब ओर सम्मान होता है तथा सफलता उसके चरण चूमती दिखाई देती है। अनुशासित जीवन ही वास्तविक जीवन है। इसलिए अपने जीवन को अनुशासित बनाए रखने के लिए हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए। हमें अपने जीवन में अनुशासन को अपनाने के लिए निम्नलिखित तरीकों का पालन करना चाहिए जैसे – एक संतुलित और नियमित दिनचर्या का पालन करना चाहिए। कार्यों को समय पर पूरा करने की हर संभव कोशिश करना चाहिए। व्यर्थ के कार्यों से दूर रहना चाहिए। अपने कार्यों के प्रति पूरी लगन रखना चाहिए। अनुशासन शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है अनु और शासन। अनु का अर्थ है पालन और शासन का अर्थ है नियम। अपने मन की समस्त वृत्तियों को काबू में रखना भी अनुशासन ही है। अनुशासन के दो रूप हैं— आंतरिक अनुशासन व बाह्य अनुशासन। अपनी श्रेणी में किसी सभा में शांत रहना, समूह में चलते हुए पंक्तिबद्ध होकर चलना, समूह में कार्य करते समय उचित अनुचित का ध्यान रखना, राज्य के नियमों का पालन करना आदि अनुशासन के बाहरी रूप हैं। अपनी इन्द्रियों व मन को काबू में रखना आंतरिक अनुशासन होता है। आज समाज व राष्ट्र को अनुशासन की सर्वाधिक आवश्यकता है। अनुशासित व्यक्ति ही अपने व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में व्यवस्थित रीति से चलता है। अनुशासन बनाए रखने वाला व्यक्ति न केवल अपना जीवन बेहतर बनाता है, बल्कि अपनी उपलब्धियों को प्रदर्शित करते हुए दूसरों पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है और वही देश का सभ्य नागरिक बनता है और देश को उन्नत बनाने में सहयोग करता है। आज की प्रमुख समस्या अनुशासनहीनता ही है। यदि हम अपने देश की उन्नति चाहते हैं, तो हमें अनुशासनहीनता को त्यागकर अनुशासन को अपनाना होगा, क्योंकि अनुशासन ही देश की उन्नति की पहली सीढ़ी है। राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति जब अनुशासन में रहेगा, तभी राष्ट्र विश्व उन्नत राष्ट्र की श्रेणी में गिना जायेगा क्योंकि अनुशासन ही हमारी सफलता की सीढ़ी है।

— मुख्य गाड़ी लिपिक

संरक्षा विभाग, पू०उ०रे०/लखनऊ

मनुष्यों का देश धर्मों का देश बन गया।

- यशपाल

बस्ती स्टेशन पर स्वच्छता एवं स्वास्थ्य कार्यक्रम



हरिशंकर

बस्ती रेलवे स्टेशन पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल का ए श्रेणी एवं एनएसजी के अनुसार एनएसजी-3 का महत्वपूर्ण स्टेशन है। यह स्टेशन स्वच्छता संबंधी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन स्वच्छता संबंधी कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने के लिए बस्ती स्टेशन पर स्वास्थ्य निरीक्षक के पद पर स्थापित हैं।

बस्ती स्टेशन पर स्वच्छता कार्यक्रमों में स्वास्थ्य निरीक्षक का कार्य स्टेशन परिसर रेलवे आवासीय परिसर के क्षेत्र की साफ-सफाई का निरीक्षण करना, स्वच्छता संबंधी नियमों का पालन करवाना सुनिश्चित करना, एनजीटी के दिशा निर्देशों का पालन करना एवं यात्रियों तथा रेल कर्मियों एवं उनके परिवारों के बीच स्वच्छता से संबंधित जानकारी का प्रचार-प्रसार करना शामिल है। स्वच्छता कार्यक्रमों के दौरान स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती की भूमिका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैं :

- 1- स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती द्वारा स्वच्छता संबंधित कार्यक्रमों के दौरान विशेष अभियान चलाकर स्टेशन परिसर की साफ सफाई सुनिश्चित करवाई जाती है, जिससे यात्रियों तथा रेल कर्मियों को स्वच्छ वातावरण प्राप्त होता है।
- 2- गंदगी और कचरा जो मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा है/ हो सकते हैं का निपटान एनजीटी के दिशा निर्देशों के अनुरूप अपने निर्देशन में संपन्न कराया जाता है।
- 3- खान-पान विक्रेताओं स्वच्छता कर्मियों को समय-समय पर स्वास्थ्य शिक्षा दे करके स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा दिया जाता है।
- 4- स्वच्छता कार्यक्रमों में स्वच्छता की गहन निगरानी व समन्वय के द्वारा स्वच्छता कार्यक्रमों को संपन्न कराया जाता है जिसके फलस्वरूप मंडल रेल प्रबंधक महोदय द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा-2024 के दौरान प्रशस्ति पत्र देकर स्वास्थ्य, निरीक्षक बस्ती के कार्यों की सराहना भी की गई।
- 5- यात्रियों व अन्य लोगों से स्वच्छता संबंधी प्रतिक्रिया

एकत्र करके उनका विश्लेषण करना स्वास्थ्य निरीक्षक बस्ती की मुख्य भूमिका में शामिल है। बस्ती स्टेशन की स्वच्छता बढ़ोत्तरी हेतु चौपाल लगाकर यात्रियों तथा प्रबुद्ध जनों से स्वच्छता संबंधी सुझाव स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती द्वारा प्राप्त किए जाते हैं।

- 6- बस्ती स्टेशन पर स्थापित अन्य विभागों और संगठनों के मध्य स्वच्छता संबंधी कार्यक्रमों के लिए स्वास्थ्य निरीक्षक बस्ती द्वारा सहयोग दिया और लिया जाता रहा है। बस्ती स्टेशन पर स्वास्थ्य निरीक्षक बस्ती द्वारा स्वच्छता अभियान चलाकर यात्रियों को जागरूक किया जाता है।
- 7- बस्ती स्टेशन पर स्वच्छता संबंधी नियमों का पालन करने हेतु स्टेशन प्रबंधन के साथ मिलकर काम किया जाता है।
- 8- स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती द्वारा खानपान स्टालों का निरीक्षण भी स्वच्छता कार्यों के बीच विशेष रूप से किया



जाता है। स्वास्थ्य निरीक्षक बस्ती द्वारा अपने कार्यक्षेत्र लखपत नगर स्टेशन से बस्ती स्टेशन के मध्य के सभी स्टेशनों से पेयजल के रासायनिक जाँच के नमूने अवशेष क्लोरीन के नमूने एवं जल जीवाणु परीक्षण के नमूने भी एकत्र किए जाते हैं, जिन पर आवश्यकता अनुसार परिणाम के अनुसार कार्यवाही भी होती है।

- 9- स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती द्वारा वर्ष 2024 में स्वच्छता

सच्ची खुशी उसे मिलती है, जो दूसरों के साथ अपना दुःख बांट सकता है।

- महादेवी वर्मा

पखवाड़ा से संबंधित स्वच्छता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यात्रियों के बच्चों के मध्य एक स्वच्छता प्रतियोगिता कराई गई। प्रतियोगी बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार भी स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती की ओर से दिए गए।

- 10- गोरखपुर मुख्यालय के अंतर्गत बस्ती रेलवे स्टेशन एकमात्र ऐसा स्टेशन है, जहाँ जापानी पद्धति से मियां बाकी वन स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती की देखरेख में विकसित किया गया है। लगभग 6500 वर्ग फुट जगह का यह मियां बाकी वन क्षेत्र पर्यावरण के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
- 11- रेलवे स्टेशन बस्ती पर स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती के प्रयास से बेस्ट टू बेल्ट थीम के अंतर्गत अनुपयोगी डिब्बा को काटकर गमले का आकार दिया गया है, जिसमें पौधा रोपण किया गया है।

- 12- स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती द्वारा स्वच्छता कार्यक्रम की थीम "एक पेड़ मां के नाम" के दौरान बस्ती स्टेशन पर वृक्षारोपण कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई है।
- 13- बस्ती स्टेशन पर स्थापित बायो कंपोस्टर प्लांट्स 200 किलोग्राम क्षमता से प्रतिमाह कंपोस्ट खाद बनाकर मियां बाकी वन क्षेत्र व गमले में डाला जा रहा है।
- 14- स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती द्वारा स्वास्थ्य संबंधी कार्यों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जहाँ महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर गंदगी फैलाने वाले तत्वों Isz-652 के अंतर्गत अर्थ दंड की वसूली भी की जा रही है, जिससे रेल राजस्व में बढ़ोतरी भी हो रही है।

स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती द्वारा स्वच्छता कार्यक्रमों के दौरान बस्ती स्टेशन पर स्वच्छता बनाए रखने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है। स्वास्थ्य निरीक्षक, बस्ती के कार्य से बस्ती स्टेशन एवं रेलवे आवासीय परिसर में स्वच्छ और स्वस्थ रहता है। इसे यात्रियों एवं रेल कर्मियों को बेहतर अनुभव मिलता है।

— स्वास्थ्य निरीक्षक
पूर्वोत्तर रेलवे, बस्ती स्टेशन



श्रीमती अनीता

स्वच्छता से निरोगी काया

स्वच्छता से जोड़ो नाता होगा सबका कल्याण,
रेल हमारी आन बन्धु, रेल हमारी शान।
स्वच्छ भारत के निवासी हम, स्वच्छता से है सम्मान।।
जहाँ स्वच्छता रहती है वहीं होगा जीवन-कल्याण,
स्वच्छता हमारा दायित्व करें अपने आस-पास सफाई के उत्थान
गन्दगी से तोड़ो नाता, करो सफाई के अभियान,
स्वच्छता से निरोगी काया, स्वच्छता से जग-कल्याण।
स्वच्छ भारत के निवासी हम, स्वच्छता से है सम्मान।।
रेल हमारी आन बन्धु, रेल हमारी शान।

आओ ले यही प्रण हम, रखेंगे स्वच्छ रेल परिसर
"स्वच्छ रेल-स्वच्छ भारत" का करो सब गुन-गान,
रेल हमारी आन बन्धु, रेल हमारी शान।
स्वच्छ भारत के निवासी हम, स्वच्छता से है सम्मान।।
हरा-भरा और स्वच्छ रहे सुन्दर घने वृक्ष की छाया,
स्वच्छ हमारा रेल परिसर, स्वच्छ व्यवसाय का काया
रेल हमारी आन बन्धु, रेल हमारी शान।।
स्वच्छ भारत के निवासी हम, स्वच्छता से है सम्मान।

— कार्यालय अधीक्षक
संयुक्त क्रू लॉबी/ल.जं.

इस तरह उपेक्षा मेरी, क्यों करते हो मतवाले! आशा के कितने अंकुर, मैंने है उर में पाले।

- सुभद्रा कुमारी चौहान

मानसिक स्वास्थ्य और स्वच्छता



पवन कुमार मिश्र

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, मानसिक स्वास्थ्य, मानसिक कल्याण की एक स्थिति है, जो लोगों को जीवन की मुश्किलों से निपटने, अपनी क्षमताओं का एहसास करने, हालातों से सबक लेने, अच्छी तरह से काम करने और अपने समुदाय के लिए योगदान करने में सक्षम बनाती है।

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का स्वच्छता से बहुत गहन सम्बन्ध है। वास्तविकता तो ये कि है बाहर की गन्दगी मनुष्य की आंतरिक विद्रूपताओं का प्रक्षेपण मात्र है। मानवता मनुष्य के मानसिक प्रदूषण से अत्यंत पीड़ित और रुग्ण हो चुकी है। सड़कों, गलियों और बस्तियों में पसरी हुई गन्दगी कुछ गंदे और गैर जिम्मेदार लोगों के जिम्मेदार पदों पर बैठने का परिणाम है। परिवेश से लेकर पर्यावरण तक गली मोहल्लों से स्कूलों तक तालाबों, झीलों, पोखरों, नदियों, वायु, जल, भोजन, साग सब्जी में फैलता जहर और और तो और माँ के दूध तक में मौजूद इन्डोसल्फान और क्लोरोपायरेफोस के अंश हर जगह हर उस मनोरोगी की करतूत का प्रतिफल है, जो अपने निहित स्वार्थ के लिए अपने दायित्वों से मुंह चुराता है। कोई लोभ वश तो कोई अज्ञानता वश। स्वच्छता एक सामाजिक जिम्मेदारी है, जो कि स्वस्थ समाज द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। स्वच्छता शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ समाज का फलन है।

जैसा कि रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है और आधुनिक चिकित्सकीय शोधों से प्रमाणित हुआ कि अनेक रोगों और विसंगतियों के मूल में मानसिक रोगों का महती योगदान होता है।

मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला।।
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा।।
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजइ सन्यपात दुखदाई।।
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना।।
ममता दादु कंडु इरषाई। हरष बिषाद गरह बहुताई।।
पर सुख देखि जरनि सोइ छई। कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई।।
अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नेहरुआ।।
तृस्ना उदरवृद्धि अति भारी। त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी।।
जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका। कहैं लगि कहैं कुरोग अनेका।।

कर्तव्य बोध, राष्ट्र प्रेम, आत्मसम्मान, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा जैसे गुणों का अनुपालन और अनुशीलन ही वह

उपाय है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य और स्वच्छता की साधना की जा सकती। हर जिम्मेदार और जागरूक नागरिक का कर्तव्य कि वह स्वयं अपने परिवार से प्रारंभ करके स्वच्छता और मानसिक स्वास्थ्य की जागरूकता को एक सामाजिक आन्दोलन का रूप प्रदान करते हुए हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री के सपनों को साकार करें तथा माँ भारती का सच्चा सपूत बनें।

गरीबी, बीमारी, अशिक्षा और भ्रष्टाचार एक दुष्चक्र है, जिसे समाज और सरकार के समन्वित भागीरथ प्रयास से ही तोड़ा जा सकता है।

राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (टेली मानस), 2022

10 अक्टूबर, 2022 को लॉन्च किया गया, नेशनल टेली मेंटल हेल्थ प्रोग्राम (टेली मानस) भारत के डिजिटल मानसिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे में एक अभिनव प्रयोग है। टेली मानस एक राष्ट्रीय टोल-फ्री हेल्पलाइन (14416/1800-89-14416) के माध्यम से लोगों को मुफ्त, 24/7 मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करता है। यह 20 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है।

टेली मानस हेल्पलाइन ने 2022 में लॉन्च होने के बाद से 7 फरवरी, 2025 तक, 1.81 मिलियन (18,27,951) से अधिक कॉल्स को संभाला है, जो पूरे भारत में जरूरी मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करती है। विभिन्न राज्यों में 53 टेली मानस सेल हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक स्थानीय पहुंच सुनिश्चित करती हैं। यह कार्यक्रम देश भर में 23 परामर्श संस्थानों के साथ-साथ 5 क्षेत्रीय समन्वय केंद्रों द्वारा समर्थित है, जो मानसिक स्वास्थ्य देखभाल में कुशल सेवा वितरण और विशेषज्ञ मार्गदर्शन सुनिश्चित करता है।

Above himself if he can't erect himself how poor a thing is man.

स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः। स्वयमेव नाम्भः पिबन्ति नद्याः।।

धारा धरौर्वर्षत न आत्महेतोः। परोपकाराय सताम् विभूतयः।।

जिम्मेदारी से उदासीनता और 'चलता है' वाले दृष्टिकोण से ऊपर उठकर हर नागरिक को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी ही होगी। आइये, हम सब मिलकर 'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, मानसिक रोगमुक्त भारत' की कल्पना को साकार करने के लिये आगे बढ़ें।

— वरिष्ठ फार्मासिस्ट
स्वास्थ्य केन्द्र, पू०उ०रे०, बस्ती

महान उपलब्धियाँ कभी भी आसानी से नहीं मिलती और आसानी से मिली उपलब्धियाँ महान नहीं होतीं।

- बाल गंगाधर तिलक

कचड़ा प्रबंधन



अंकुर गुप्ता

भारत में विभिन्न प्रकार के कचड़ा-पात्रों का प्रयोग करके कचड़ा प्रबंधन का कार्य किया जाता है। रंगीन कूड़ेदान का उपयोग कचड़ा प्रबंधन को सुगम व बेहतर बनाने के लिए किया जाता है। विभिन्न रंगों के कूड़ेदान का प्रयोग अलग-अलग प्रकार के कचड़ों को अलग-अलग करने और सुरक्षित रूप से निपटान के लिए उपयोगी है। यह पात्र खुले व बंद दोनों प्रकार के होते हैं, जिनका आकार व क्षमता भी विभिन्न स्थानों पर कचड़े के आधार पर अलग-अलग होती है।

कचड़ा पात्रों के उपयोग से सड़कों, सार्वजनिक स्थलों, कार्यालयों, अस्पतालों को साफ-स्वच्छ रखने में मदद मिलती है, जिससे लोगों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अलग-अलग प्रकार के कचड़े को विशेष रूप से निम्न रंगों के कूड़ेदान में एकत्र किया जाता है :-

हरा कूड़ेदान — गीला कचड़ा जैसे फलों और सब्जियों के छिलके, चायपत्ती, बासी खाना इत्यादि।

काला कूड़ेदान — बायोमेडिकल कचड़ा जैसे बैट्री, बेबी डाइपर, सेनेटरी पैड, एक्सपायर्ड दवाइयाँ आदि।

नीला कूड़ेदान — सूखा कचड़ा जैसे प्लास्टिक, कागज, धातु, काँच इत्यादि।

लाल कूड़ेदान — संक्रमित कचड़ा जैसे अस्पताल से निकालने वाला कचड़ा, शरीर के अंग इत्यादि।

सफेद कूड़ेदान — तेज धार वाले कचड़े जैसे सुई, ब्लेड आदि।

पीला कूड़ेदान — रेडियोधर्मी कचड़ा।

बैंगनी कूड़ेदान — ई० कचड़ा।

भूरा कूड़ेदान — घरेलू कचड़ा।

उपयोग के लाभ —

- 01. कचड़े का उचित प्रबंधन** — रंगीन कूड़ेदानों के उपयोग से कचड़े को अलग-अलग करके उचित तरीके से निपटाया जा सकता है।
- 02. पर्यावरण संरक्षण** — कचड़े को अलग करने से कुछ कचड़े को रि-सायकिल किया जा सकता है, जिससे पर्यावरण पर बुरा प्रभाव कम होता है।
- 03. स्वास्थ्य सुरक्षा** — संक्रमित कचड़े को अलग करने से बीमारियों के फैलने से रोका जा सकता है।
- 04. लागत में कमी** — कचड़े को रि-सायकिल करने से देश की आर्थिक व्यवस्था को संबल मिलता है।

— स्वास्थ्य निरीक्षक
लोको कालोनी, पू०उ०रे०, ऐशबाग

गर्मियों में रेल की छाया

धूप है तेज, पसीने की रेखा,
फिर भी मुस्काए हर रेल की रेखा।
पंखे, धूपछाँव, ठंडा जल,
रेल बनती है यात्रियों का संबल।
स्टेशन पर प्याऊ, छाया का द्वार,
हर डिब्बे में मिले ठंडक का उपहार।
स्वच्छता रखे हर कोना साफ,
रेलवे का संदेश — “गंदगी से माफ!”

“आपका परिवार, आपकी सुरक्षा”
सुरक्षित रहे हर नागरिक देश का।
चेतावनी, बोर्ड, CCTV की नजर,



नीरज कुमार सिंह

हर कदम पर है सुरक्षा का पहर।
ट्रैक पर हो या प्लेटफॉर्म के पार,
कचरा न फैलाएं, करें व्यवहार साकार।
रेल हमारे देश की शान,
चलें सुरक्षित, स्वच्छता के साथ महान।
चलती ट्रेन है जीवन की रेखा,
गर्मियों में भी देती राहत की स्नेहा।
रेलवे कहे, “सफर हो सुकून भरा,
आपकी सुरक्षा और सेवा हमारा ध्येय सदा।”

— जूनियर इंजीनियर (कार्य)
पूर्वोत्तर रेलवे, ऐशबाग

अब तो मजहब कोई ऐसा भी चलाया जाए, जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाए।

- गोपाल दास नीरज

मंडल स्तर पर प्रदत्त संरक्षा प्रोत्साहन पुरस्कार



20 जनवरी 2025 को मण्डल रेल प्रबन्धक कार्यालय में तत्कालीन मण्डल रेल प्रबन्धक श्री आदित्य कुमार द्वारा वरिष्ठ मण्डल संरक्षा अधिकारी डॉ० शिल्पी कन्नौजिया, वरिष्ठ मण्डल परिचालन प्रबंधक श्री प्रसन्न कात्यायन, वरिष्ठ मण्डल यांत्रिक इंजीनियर (फ्रेट) श्री राहुल पाण्डेय एवं वरिष्ठ मण्डल

इंजीनियर/तृतीय श्री मनोज कुमार सिंह की उपस्थिति में सुरक्षित एवं संरक्षित रेल संचलन में अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह एवं कर्मठ व अमूल्य योगदान देने वाले संरक्षा से जुड़े 05 कर्मचारियों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।



10 मार्च, 2025 को मण्डल सभागार में मण्डल रेल प्रबन्धक श्री गौरव अग्रवाल ने अपर मण्डल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा०) श्री भुवनेश सिंह तथा वरिष्ठ मण्डल संरक्षा अधिकारी डॉ० शिल्पी कन्नौजिया, वरिष्ठ मण्डल इंजीनियर/समन्वय श्री गौरव गुप्ता, वरिष्ठ मण्डल परिचालन प्रबंधक श्री प्रसन्न कात्यायन, वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक श्री आशुतोष गुप्ता, वरिष्ठ मण्डल सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री वैभव श्रीवास्तव, वरिष्ठ मण्डल यांत्रिक इंजीनियर/फ्रेट श्री राहुल पाण्डेय, तत्कालीन वरिष्ठ मंडल विद्युत (परिचालन) इंजीनियर श्री धर्मेन्द्र यादव एवं वरिष्ठ मण्डल इंजीनियर/द्वितीय श्री अश्विनो कुमार तिवारी की उपस्थिति में सुरक्षित एवं संरक्षित रेल संचलन में अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह एवं कर्मठ व अमूल्य योगदान देने वाले संरक्षा से जुड़े 21 रेलवे कर्मचारियों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ० सुरेन्द्र नाथ भी उपस्थित थे।

तप्त हृदय को, सरस हृदय से, जो सहला दे, मित्र वही है।

- दीनबंधु मित्र



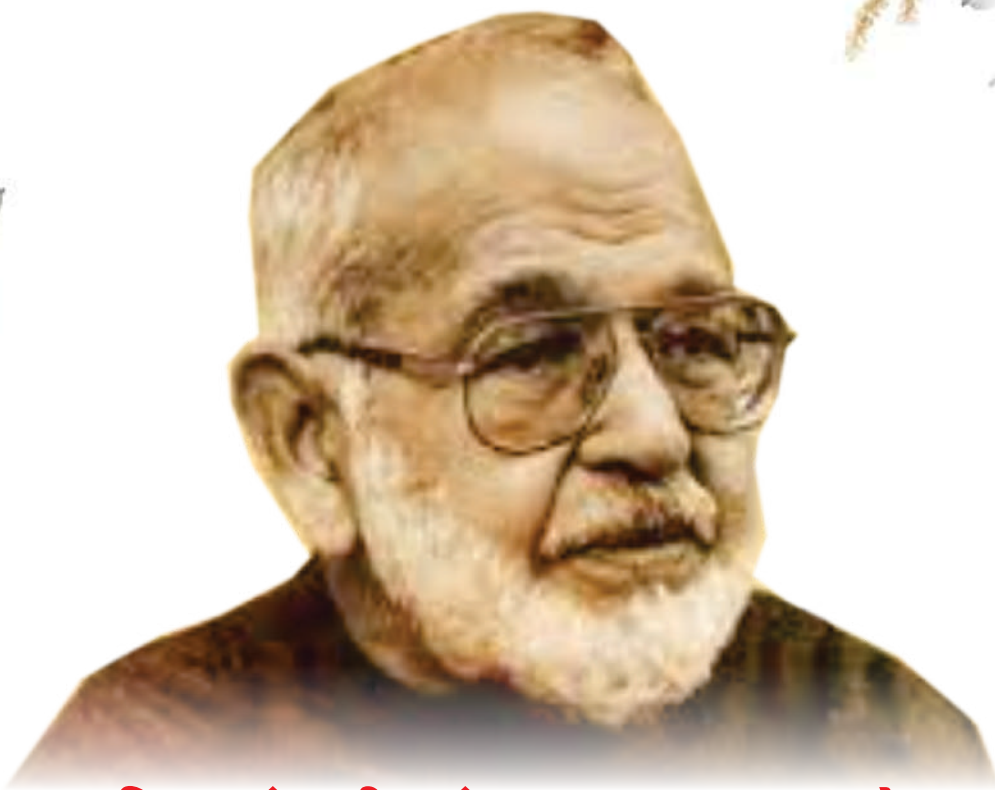
दिनांक 12 फरवरी, 2025 को तत्कालीन मण्डल रेल प्रबन्धक श्री आदित्य कुमार की अध्यक्षता में मण्डल राजभाषा कार्यान्वयन समिति लखनऊ की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।



दिनांक 05 मार्च, 2025 को मण्डल रेल प्रबन्धक श्री गौरव अग्रवाल द्वारा संबंधित शाखाधिकारियों के साथ गोरखपुर-आनन्दनगर-बढ़नी-गोण्डा रेलखण्ड के मध्य संरक्षा, विकास परियोजनाओं एवं यात्री सुविधाओं संबंधित कार्यों का गहन विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया गया।



06 मार्च, 2025 को संरक्षित ट्रेन संचालन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य हेतु दो दिवसीय संरक्षा आडिट के क्रम में पूर्वोत्तर रेलवे के प्रमुख मुख्य संरक्षा अधिकारी श्री मुकेश मेहरोत्रा द्वारा मुख्यालय एवं मंडल के संबंधित अधिकारियों के साथ लखनऊ मण्डल के सीतापुर जं०-मैलानी रेल खण्ड का गहन निरीक्षण किया गया।



सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(7 मार्च 1911 - 4 अप्रैल 1987)

“नित्यता क्षणों की है, पर क्षण, क्षण-भंगुर हैं। मैं भी हूँ, मुझमें जो कुछ नूतनता है, उसे मुझे इसी क्षण में कह डालना है, क्योंकि वह भविष्य की वस्तु है, मैं उसे कहे बिना रुक नहीं सकता और सोचने का समय नहीं क्षण का अस्तित्व कितना?”

“किसी भी समाज को अनिवार्यतः अपनी भाषा में ही जीना होगा। नहीं तो उसकी अस्मिता कुंठित होगी ही होगी और उसमें आत्म-बहिष्कार या अजनबियत के विचार प्रकट होंगे ही।”

- अज्ञेय